नई किरण

हिंदी पाठमाला

6

नई किरण

हिंदी पाठमाला

6

Franklin PUBLICATION

Creation helps the mankind

Designed By :

Editone International Pvt. LTd.

Copyright Reserved © Editone International Pvt. Ltd.

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or copied in any material form (including photo-copying or storing it in any medium in form of graphics, electronic or mechanical means and whether or not transient or incidental to some other use of this publication) without written permission of the copyright owner. Any breach of this will entail legal action and prosecution without further notice.

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner therefrom.

- Publisher

आमुख

विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल एवं स्पष्ट माध्यम भाषा है। भाषा में सम्मिलित कौशलों की सहायता से विचारों का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शैक्षिक प्रणाली का अहम योगदान होता है। इस प्रणाली में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल का समावेश होना आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक में भाषा के चारों कौशल–श्रवण, वाचन, पठन, लेखन के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पर बल दिया गया है। पुस्तक में चिंतन-मनन (Thinking), विश्लेषण (Analysis), कल्पनाशीलता (Imagination), रचनात्मकता (Creativity), मूल्यांकन (Evaluation) को भी समाहित किया गया है। इसमें निर्धारित मानक वर्तनी का प्रयोग किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों की भाषा में बारीक समझ को विकसित करने में सक्षम है। इस पुस्तक में पाठ नियोजन करते समय विद्यार्थियों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं खोजबीन प्रवृति का विशेष ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक की पाठ्य-सामग्री बच्चों के स्तरानुकूल, सरल, सहज एवं रोचक रूप में प्रस्तुत की गई है।

इस पुस्तक में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 को ध्यान में रखकर सभी मूल्यों को तार्किक रूप से अपनाया गया है। रचनात्मक लेखन के अंतर्गत–कविता, कहानी, चित्र-कथा, संवाद, यात्रा-वर्णन एवं पत्र-लेखन आदि को शामिल किया गया है ताकि भाषा प्रयोग पर विद्यार्थियों की पकड़ मज़बूत बन सके, साथ ही विद्यार्थी व्याकरण का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर पाएँ।

इस श्रृंखला में विद्यार्थियों को ऐसा मंच देने का प्रयास किया गया है, जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ से सोच-समझकर प्रश्नों का उत्तर दे सकें, साथ ही संवाद या चर्चा के द्वारा अपने सहपाठियों का भी दृष्टिकोण समझ पाएँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पुस्तक छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी।

–प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
	बादशाह का तोता (चित्रकथा)	5
1.	इतना ऊँचे उठो (कविता)	8
2.	स्वयं का निर्माण (कहानी)	17
3.	वन : हमारी अमूल्य संपदा (निबंध)	26
4.	उन्नति का मंत्र (कविता)	36
5.	परिवर्तन (कहानी)	43
6.	प्रकाश (कहानी)	50
7.	भक्ति के पद (कविता)	57
8.	कान्हा अभ्यारण्य से पत्र (पत्र)	65
9.	बहुरुपिया (कहानी)	72
10.	हिरोशिमा की पीड़ा (कविता)	79
11.	मुम्बई : मायानगरी की यात्रा (यात्रा वृतांत)	86
12.	संचार के साधन (लेख)	96
13.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता)	104
14.	सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र (संवाद)	110
	अभ्यास प्रश्न पत्र-1	117
	अभ्यास प्रश्न पत्र-2	119

बादशाह का तोता
(चित्रकथा)

बादशाह अकबर का दरबार लगा था। तभी एक फ़कीर ने सुंदर तोता बादशाह को भेंट में दिया।

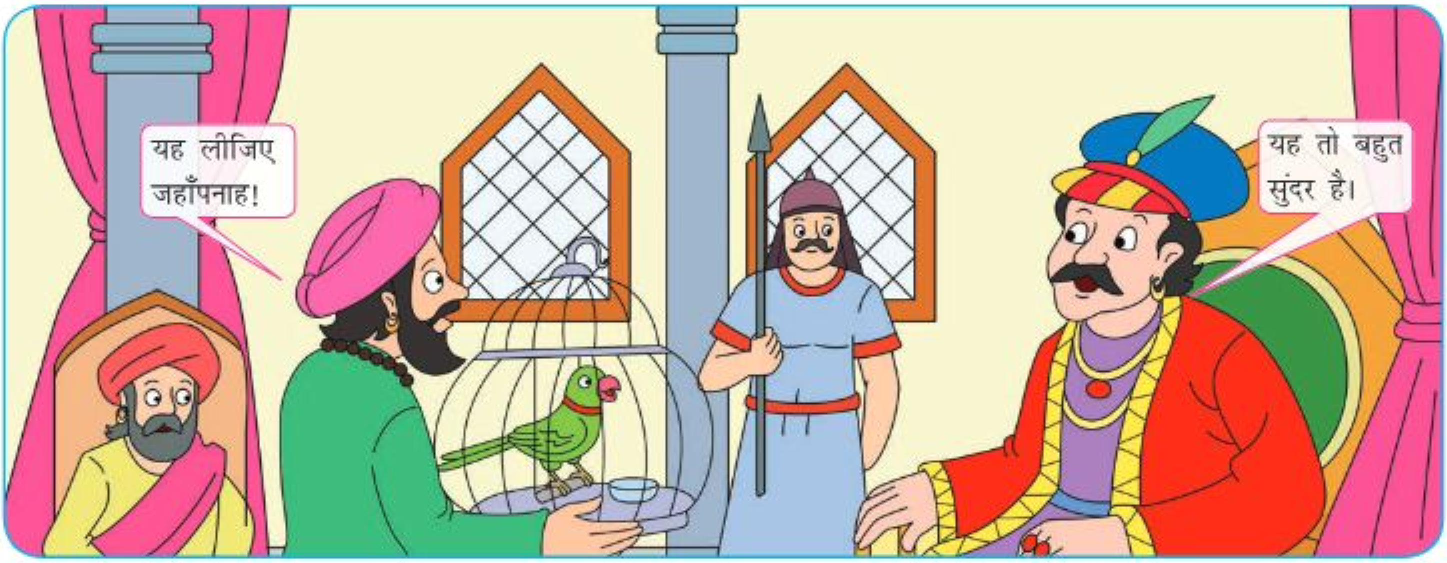

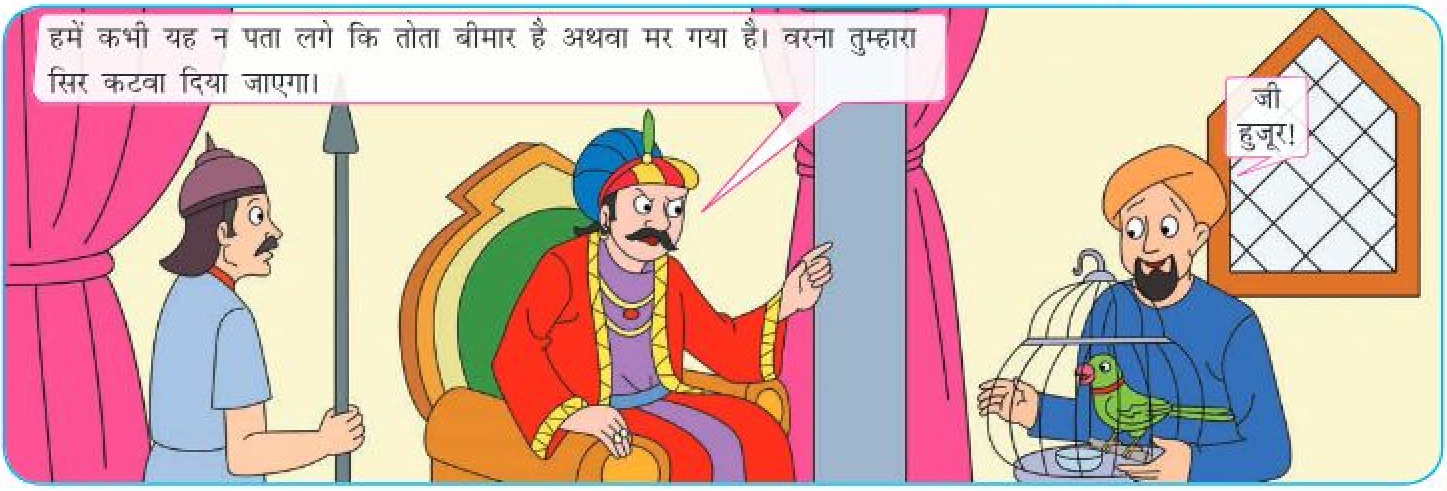

बादशाह की बात सुनकर सेवक बहुत अच्छी तरह तोते की देखभाल करने लगा लेकिन अचानक तोता मर गया।
हाय! अब मैं क्या करूँ? अगर मैं बादशाह को बताऊँगा कि तोता मर गया है तो वे मेरा सिर कटवा देंगे।
सेवक बीरबल के घर उसकी मदद माँगने जाता है।
अब आप ही मुझे कोई उपाय बताइए।
तुम चिंता मत करो। बादशाह के पास जाओ बाकी सब मुझ पर छोड़ दो।
सेवक बादशाह के दरबार में गया और डरते-डरते बोला–
हुजूर! आपका तोता...
क्या हुआ उसे ?
उसी समय वहाँ बीरबल पहुँच जाते हैं-वे कहते हैं–
कुछ विशेष नहीं हुजूर लेकिन वह ...
अकबर परेशान होकर बोले–
बीरबल ! हमें तुरंत बताओ। कहीं तोता मर तो नहीं गया?
नहीं, नहीं हुजूर ! आपका तोता तो एक महान सन्यासी बन गया है।

अकबर गुस्से में बोले-

संदेशः हमें सदैव अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

अध्याय 1

इतना ऊँचे उठो
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

प्रत्येक मनुष्य को जाति, धर्म, वर्ग, लिंग इत्यादि के भेदभाव को छोड़कर केवल मानव कल्याण के लिए ही समर्पित रहना चाहिए।

इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से
सिंचित करो धरा समता की भाव-वृष्टि से।
जाति भेद की, धर्म-वेश की
काले-गोरे रंग द्वेष की
ज्वालाओं से जलते जग में
इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।
लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है
जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है।
तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन
गति, जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के शाश्वत प्रवाह में

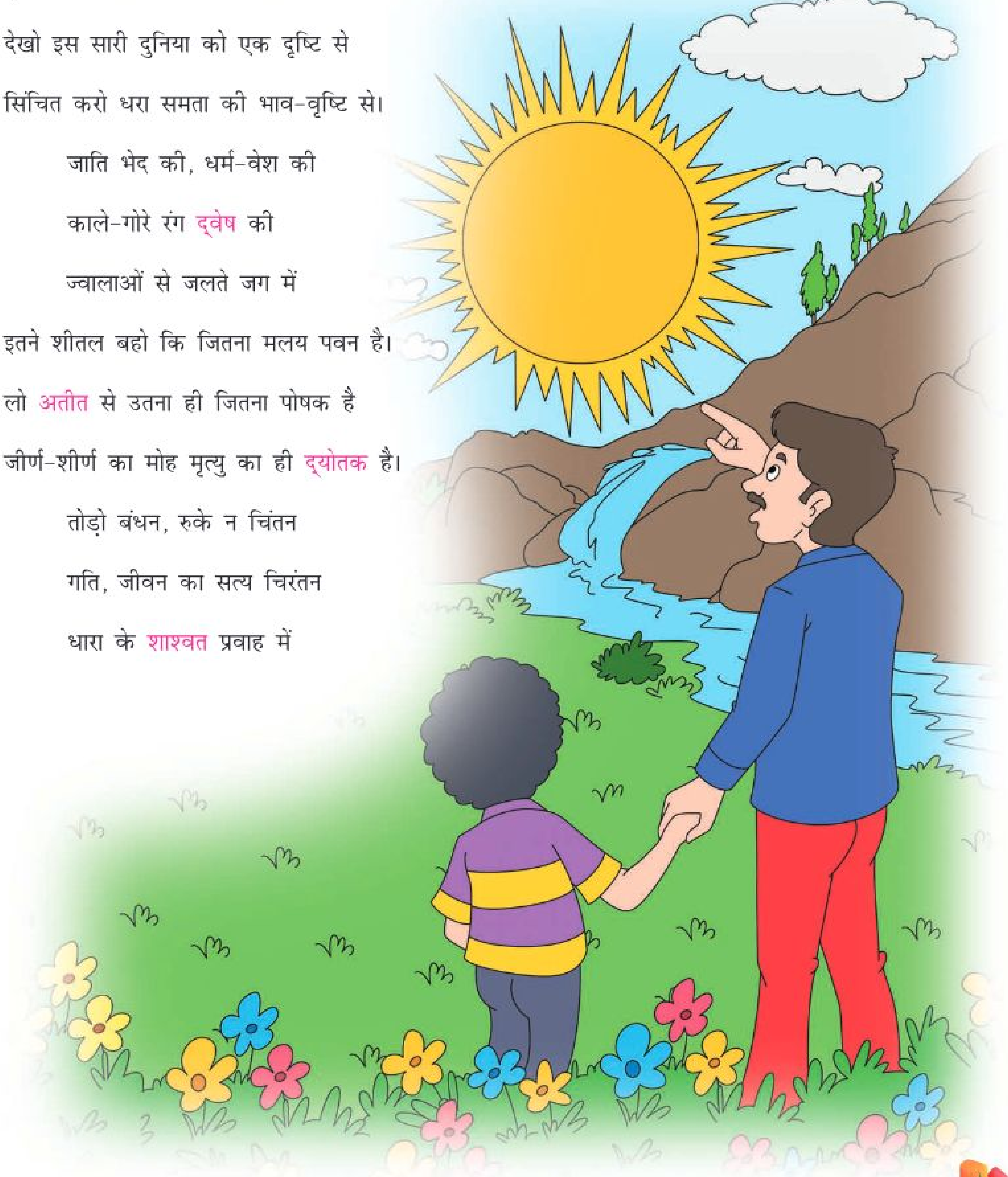

इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।
चाह रहे हम इस धरती को स्वर्ग बनाना
अगर कहीं हो स्वर्ग, उसे धरती पर लाना।

सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे
सब हैं प्रतिपल साथ हमारे
दो कुंभ को रूप सलोना
इतने सुंदर बनो कि जितना आकर्षण है।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

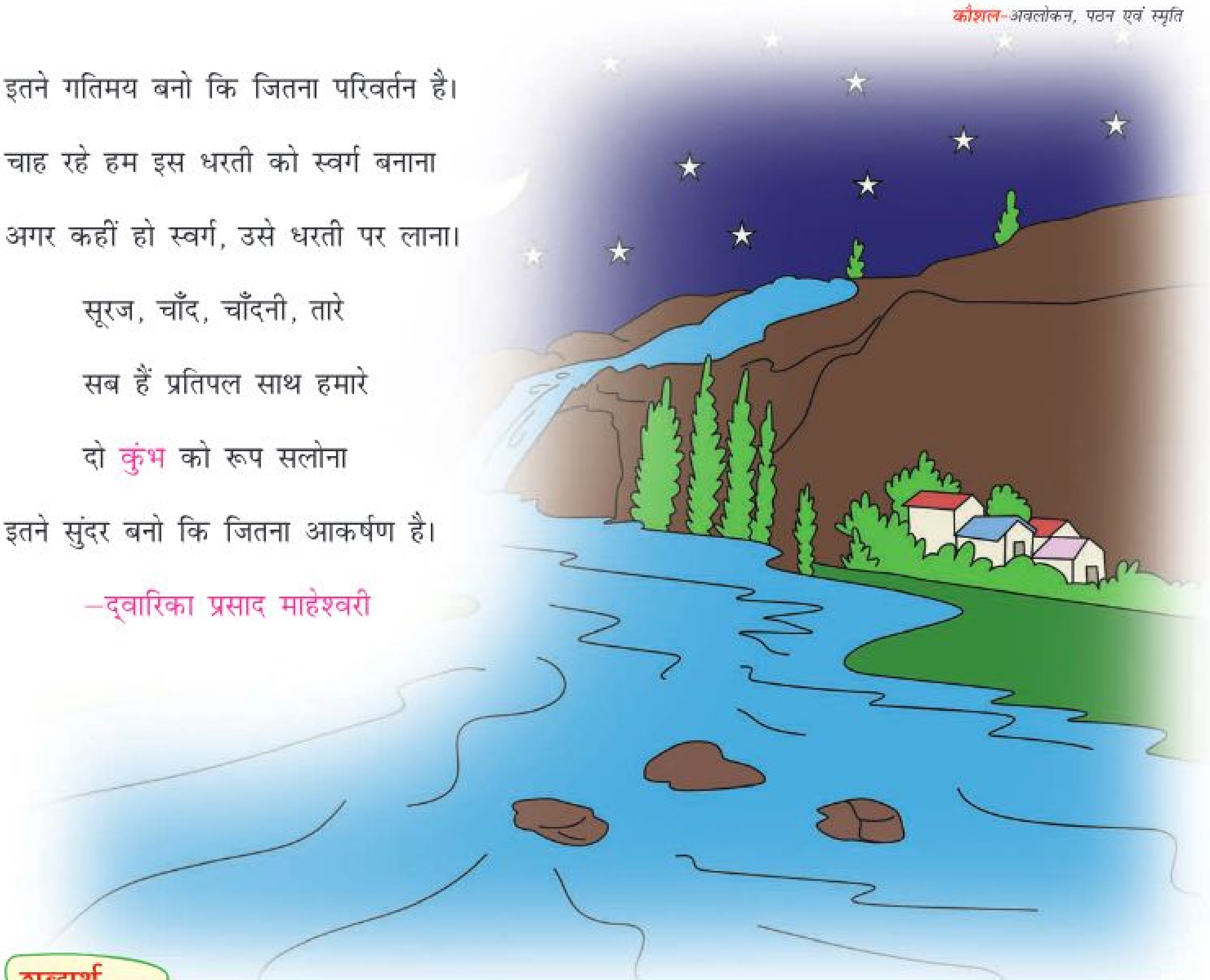

शब्दार्थ

शाश्वत	= हमेशा रहने वाला	पक्षपात	= भेदभाव
कुंभ	= घट या मटका	अतीत	= बीता हुआ समय
द्वेष	= शत्रुता की भावना	द्योतक	= सूचक

उच्चारण करें

प्रतिपल   आकर्षण   चिरंतन   गतिमय   प्रवाह
आकर्षण   भाव-दृष्टि

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका पाठ के माध्यम से बच्चों को संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सोचने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) हवा के समान गतिमय बनने का क्या अर्थ है?

(ख) संसार में हम भेद-भाव रहित कैसे रह सकते हैं?

(ग) प्रतिपल हमारे साथ कौन है?

(घ) प्रस्तुत कविता के रचयिता का क्या नाम है?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रस्तुत कविता में 'शीतल बहने' का क्या अर्थ है?

....

(ख) दुनिया को एक दृष्टि से देखना क्यों आवश्यक है?

....

(ग) 'परिवर्तन के समान गतिमय' इस पंक्ति का आश्य स्पष्ट कीजिए।

....

(घ) 'ऊँचा उठने का तात्पर्य क्या है? कवि ऊँचा उठने की बात क्यों कह रहा है?

....

3. उचित उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) शीतलता किसके समान होनी चाहिए?

☐ बादल के समान ☐ पानी के समान

☐ मलय पवन के समान ☐ चाँद के समान

(ख) .... जीवन का सत्य है।

☐ अपरिवर्तन ☐ परिवर्तन

☐ स्थिरता ☐ विस्थरता

(ग) धरती को हमें कैसा बनाना है?

- [ ] ब्रह्म लोक जैसा
- [ ] मृत्युलोक जैसा
- [ ] स्वर्ग लोक जैसा
- [ ] परलोक जैसा

(घ) प्रस्तुत कविता का मूल तत्व क्या है?

- [ ] मानव कल्याण
- [ ] स्वयं कल्याण
- [ ] दूसरों का कल्याण

4. सही मिलान कीजिए।

(क)	धरा	पवन
(ख)	मलय	बंधन
(ग)	तोड़ो	परिवर्तन
(घ)	गतिमय	समता

5. कविता की पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(क) सब हैं प्रतिपल साथ हमारे।

....

....

(ख) लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है,

....

....

(ग) सिंचित करो धरा समता की भाव-वृष्टि से।

....

....

(घ) इतने गतिमान बनो जितना कि परिवर्तन है।

....

....

6. निम्न शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) चिंतन - ....

(ख) प्रतिपल - ....

(ग) आकर्षण - ....

(घ) अतीत – ....

(ङ) शाश्वत – ....

ज़रा सोचिए Critical Thinking

7. आप जाति, धर्म अथवा वर्ण के आधार पर होने वाले भेदभाव को खत्म करने के लिए क्या करना चाहेंगे? अपने शब्दों में दस वाक्य लिखकर बताइए।

8. हमें किन बंधनों को तोड़कर चिंतन करना होगा और क्यों? कक्षा में विचार-विमर्श कर लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

9. दिए गए शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) आकर्शण – .... (ङ) पव्राह – ....
(ख) जींण – .... (च) मेदभाव – ....
(ग) वरीष्टी – .... (छ) जवाला – ....
(घ) सवर्ग – .... (छ) परतीपल्ल – ....

10. दिए गए वाक्यों में से संधियुक्त शब्दों को छाँटकर रेखांकित कीजिए।

(क) संविधान में नागरिकों के कर्तव्यों को रेखांकित किया गया है।

(ख) हमारी परंपरा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्जवल है।

(ग) मेरे पिताजी पराधीन भारत के निवासी थे।

(घ) आईंस्टीन की दृष्टि भविष्योन्मुखी थी।

11. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) कुंभ – ....
(ख) गगन – ....
(ग) संसार – ....
(घ) दुनिया – ....

12. दिए गए विलोम शब्दों का सही विकल्प चुनकर उत्तर बताइए।

(क) सत्य – ☐ असत्य ☐ झूठ ☐ गलत ☐ सच
(ख) आकाश – ☐ व्योम ☐ पाताल ☐ अम्बर ☐ रसातल
(ग) जय – ☐ जीत ☐ पराजय ☐ हार ☐ सब ठीक है।
(घ) ज्ञान – ☐ विज्ञान ☐ अज्ञान ☐ संज्ञान ☐ अज्ञानी

13. दिए गए विकल्पों में से उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए।

(क) जो बहुत कठिनाई से मिलता हो

☐ दुर्लभ ☐ दुर्जीय
☐ दुर्लध्य ☐ दुर्दम्य

(ख) परलोक से संबंधित

☐ लौकिक ☐ पारलौकिक
☐ इहलौकिक ☐ आध्यात्मिक

14. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

(क) हार – ....

हार – ....

(ख) मेघ – ....

मेध – ....

(ग) वारिश – ....

बारिश – ....

15. दिए गए कारक-चिह्न लगाकर वाक्य पूरा कीजिए।

को	से	पर

(क) हमें धरती .... भेदभाव रहित बनना चाहिए।

(ख) दूसरों .... सदा ऊँचा उठाने का प्रयास करना चाहिए।

(ग) हमें भव-दृष्टि .... संचित करना चाहिए।

(घ) धरा .... परिवर्तन अटल है।

(ङ) राग द्वेश .... रहित जीवन जीना चाहिए।

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

16. आप जीवन में ऊँचा उठने के लिए क्या करना चाहेंगे? कक्षा में पक्ष-विपक्ष आधारित संवाद कीजिए।

आप – ....

अन्य – ....

आप – ....

अन्य – ....

आप – ....

अन्य – ....

आप – ....

अन्य – ....

17. **प्रस्तुत कविता में आए शब्द- (दुनिया, धर्म, समता, परिवर्तन, स्वर्ग, सूरज, हमारे, सुंदर, जीवन) इत्यादि से स्वयं रचित कविता बनाइए।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

18. **'समानता' मानव कल्याण का मूल मंत्र है। आप समता के अधिकारों का कहाँ-कहाँ अनुपालन करना चाहेंगे?**

अध्याय 2

स्वयं का निर्माण
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

हमें सदैव अवगुणों को त्यागने और सद्गुणों को अपनाने की चेष्टा करते रहना चाहिए।

यूनान के प्रख्यात दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से ही समाज और समाज से ही व्यक्ति का निर्माण होता है। यदि व्यक्ति अपना सुधार करे तो समाज अपने आप सुधर जाएगा। व्यक्ति किस तरह स्वयं का निर्माण कर सकता है, सुधार कर सकता है, इस पाठ को पढ़कर जानते हैं।

आज व्यक्ति की नहीं बल्कि समाज के पुनर्निर्माण की चर्चा है। क्या व्यक्ति का पुनर्निर्माण एकदम उपेक्षा की चीज़ है? यह सत्य है कि व्यक्ति समाज की उपज है और यदि सारा समाज लूला-लँगड़ा रहे, तो एक व्यक्ति भी सीधा नहीं खड़ा हो सकता, किंतु फिर समाज भी तो व्यक्तियों का ही समूह है।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने सुधार की ओर ध्यान दे तो पूरे समाज का निर्माण कितना आसान हो जाए!

बौद्ध धर्म में सम्यक् व्यायाम के चार अंग कहे गए हैं–

- इस बात की सावधानी रखना कि अपने में कोई अवगुण न आ जाए।
- इस बात का प्रयत्न करना कि अपने अवगुण दूर हो जाएँ।
- इस बात की सावधानी रखना कि अपने में सद्‌गुण चले आएँ।
- इस बात की सावधानी रखना कि अपने सद्‌गुण चले न जाएँ।

बाग में यदि अच्छे फल-फूल न लगवाएँ जाएँ और ज़मीन को यों ही बेकार पड़ी रहने दिया जाए तो उसमें बेकार के झाड़-झंखार उग ही आएँगे।

यदि अवगुणों को दूर करने और सद्‌गुणों को लाने का उपाय निरंतर नहीं किया जाएगा तो अवगुण बने ही रहेंगे और सद्‌गुण नहीं आएँगे। इसलिए यदि इस चतुर्मुखी कार्यक्रम को घटाकर इसके केवल दो अंगों (अवगुणों को दूर करना और सद्‌गुणों को अपनाना) को स्वीकार कर लिया जाए तो भी मैं समझता हूँ भगवान बुद्ध का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

अवगुणों को दूर करना और सद्‌गुणों को अपनाना ये दोनों भी क्या अर्थ की दृष्टि से एक नहीं हैं? इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों देना होगा।

एक आदमी को व्यर्थ बक-बक करने की आदत है। यदि वह अपनी आदत को छोड़ता है, तो वह अपने व्यर्थ बोलने के अवगुण को छोड़ता है, किंतु साथ ही और अनायास ही वह मितभाषी होने के सद्‌गुण को अपनाता चला जाता है। यह तो हुआ 'हाँ' पक्ष का उत्तर; किंतु एक दूसरे आदमी को सिगरेट पीने का अभ्यास है। वह

सिगरेट पीना छोड़ता है और उसकी बजाय दूध से प्रेम करना सीखता है, तो सिगरेट पीना छोड़ना एक अवगुण को छोड़ना है और दूध से प्रेम जोड़ना एक सद्‌गुण को अपनाना है।

अवगुण को दूर करने और सद्‌गुण को अपनाने के प्रयत्न में, मैं समझता हूँ कि अवगुणों को दूर करने के प्रयत्नों की अपेक्षा सद्‌गुणों को अपनाने का ही महत्व अधिक है। किसी कमरे में गंदी हवा और स्वच्छ वायु एक साथ रह ही नहीं सकती। कमरे में हवा रहे ही नहीं, यह तो हो ही नहीं सकता।

गंदी हवा को निकालने का सबसे अच्छा उपाय एक ही है। सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलकर स्वच्छ वायु को अंदर आने देना।

ऐसी बातें पढ़-सुनकर हर आदमी वह बात कहता सुनाई देता है जो किसी समय बेचारे दुर्योधन के मुँह से निकली थीं:–

"धर्म जानता हूँ, उसमें प्रवृत्ति नहीं। अधर्म जानता हूँ, उसमें निवृत्ति नहीं" एक आदमी को कोई कुलत पड़ गई–सिगरेट पीने की ही सही। अत्यधिक सिनेमा देखने की ही सही। बेचारा बहुत संकल्प करता है, बहुत कसमें खाता है कि अब सिगरेट न पीऊँगा, किंतु अब सिनेमा देखने न जाऊँगा, किंतु समय आने पर जैसे आप ही आप उसके हाथ सिगरेट तक पहुँच जाते हैं और सिगरेट उसके मुँह तक। बेचारे के पाँव सिनेमा की ओर जैसे आप ही आप बढ़े चले जाते हैं।

क्या सिगरेट न पीने का और सिनेमा न देखने का उसका संकल्प सच्चा नहीं है? क्या उसने झूठी कसम खाई है? क्या उसके संकल्प की दृढ़ता में कमी है? नहीं, उसका संकल्प तो उतना ही दृढ़ है जितना किसी का हो सकता है। तब उसे बार-बार असफलता क्यों मिलती है?

इस असफलता का कारण और सफलता का रहस्य कदाचित् इस एक ही उदाहरण से समझ में आ जाए। ज़मीन पर एक छः इंच चौड़ा, और एक फुट लंबा लकड़ी का तख्ता रखा है। यदि आपसे उस पर चलने के लिए कहा जाए तो आप चल सकेंगे। क्यों नहीं? बड़ी आसानी से। अब इसी तख्ते के एक सिरे को किसी मकान की छत पर रख दिया जाए और शेष तख्ते को यों ही आकाश में आगे बढ़ा दिया जाए और तब आपसे इसी तख्ते पर चलने के लिए कहा जाए तो क्या आप तब भी उस पर चल सकेंगे? नहीं।

कोई पूछे क्यों। आप इसके अनेक कारण बताएँगे। सच्चा कारण एक ही है। आप नहीं चल सकते, क्योंकि आप समझते हैं आप नहीं चल सकते। यदि आप विश्वास कर लें कि आप चल सकते हैं और उसी लकड़ी के तख्ते को थोड़ा-थोड़ा ज़मीन से ऊपर उठाते हुए उसी पर चलने का अभ्यास करें तो आप उस पर बड़े आराम से चल सकेंगे। सरकस वाले पतले-पतले तारों पर कैसे चल लेते हैं? वे विश्वास करते हैं कि वे चल सकते हैं, तद्‌नुसार अभ्यास करते हैं और वे चल ही लेते हैं।

यदि आप किसी अवगुण को दूर करना चाहते हैं तो उससे दूर रहने के दृढ़ संकल्प करना छोड़िए, क्योंकि जब आप उससे दूर-दूर रहने की कसमें खाते हैं तब भी आप उसी का चिंतन करते हैं। चोरी न करने का संकल्प भी चोरी का ही संकल्प है। पक्ष में न सही, विपक्ष में सही, है तो चोरी के ही बारे में। चोरी न करने की इच्छा रखने वाले को चोरी के संबंध में कोई संकल्प-विकल्प नहीं करना चाहिए।

हम यदि अपने संकल्प-विकल्पों द्वारा अपने अवगुणों को बलवान न बनाएँ तो हमारे अवगुण अपनी मौत आप मर जाएँगे।

आपकी प्रकृति चंचल है। आप अपने 'गंभीर स्वभाव' की भावना करें। यथावकाश अपने मन में 'गंभीर-स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही आपकी प्रकृति बदल जाएगी।

यदि आपकी प्रकृति अस्वस्थ है, तो आप अपने ही 'स्वस्थ स्वरूप' की भावना करें और यथावकाश अपने मन में अपने 'स्वस्थ स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही प्रकृति बदल जाएगी।

शायद आपको गंभीरता, अस्वस्थ, शांति की उतनी आवश्यकता ही नहीं जितनी दूसरी लौकिक चीज़ों की है। उन चीज़ों की प्राप्ति में यह नियम निश्चयात्मक रूप से सहायक होगा, किंतु निर्णायक नहीं।

संसार में प्रत्येक कार्य अनेक कारणों से होता है। यदि दूसरे कारण एकदम प्रतिकूल हों तो अकेली भावना क्या करेगी? कोई तरुण अपने शरीर को बलवान बनाना चाहता है। खाने-पीने के साधारण नियमों का ख्याल नहीं करता, स्वच्छ वायु में नहीं सोता, व्यायाम नहीं करता, केवल भावना के ही बल पर बलवान होना चाहता है, यह असंभव है। भावना अपना काम करती है, किंतु अकेली भावना खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम सभी की जगह नहीं ले सकती।

जो बलवान बनने की सच्ची भावना करेगा वह अपने खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम की चिंता भी करेगा। इन अर्थों में भावना को स्वार्थ और साधिकार कहा जा सकता है।

सभी भावनाओं में श्रेष्ठ भावना एक ही है, जिसे जैन, बौद्ध, हिंदू सभी ने अपने-अपने धर्म-ग्रंथों में स्थान दिया है–

सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा, दुःखियों के प्रति दया, दुष्टों के प्रति उपेक्षा। सचमुच इससे बढ़कर ब्रह्म-विचार की कल्पना नहीं की जा सकती।

–भदंत आनंद कौसल्यायन

शब्दार्थ

उपेक्षा	= तिरस्कार, अपमान	स्वार्थ	= अपना मतलब
चतुर्मुखी	= चारों ओर का	संकल्प	= निश्चय, प्रण
अचिरकाल	= शीघ्र, तुरंत	सम्यक्	= उपयुक्त, ठीक

उच्चारण करें

लौकिक प्रवृत्ति अनायास निवृत्ति विकल्प
निर्णायक

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कहानी के माध्यम से सदाचार व संयमित जीवन जीने के बारे में बताएं।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) गंदी हवा को निकालने का सबसे अच्छा उपाय क्या है?

(ख) शरीर को मज़बूत बनाने के लिए हमें क्या सावधानी रखनी चाहिए?

(ग) अवगुणों को दूर करने के लिए हमें कैसा बनना चाहिए?

(घ) बौद्ध धर्म में व्यायाम के कितने अंग बताए गए हैं?

जरा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) स्वस्थ स्वरूप के लिए हमें किस-किस चीज़ की आवश्यकता है?

....

(ख) हमें अपने अवगुणों को दूर करने के लिए क्या करना होगा?

....

(ग) हमारे अवगुण अपनी मौत कैसे मर जाएंगे?

....

(घ) समाज का निर्माण किस प्रकार होता है?

....

3. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) प्रकृति – ....

(ख) अवगुण – ....

(ग) धर्म – ....

(घ) भावना – ....

4. सही शब्द भरकर रिक्त स्थान भरिए।

व्यक्तियों	सामाजिक	समाज	दार्शनिक

(क) समाज .... का समूह है।

(ख) व्यक्ति से .... और समाज से .... का निर्माण होता है।

(ग) मनुष्य एक .... प्राणी है।

(घ) अरस्तू यूनान के प्रख्यात .... थे।

5. सही कथन पर (✓) का और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) अरस्तू यूनान के लेखक थे। ☐

(ख) समाज व्यक्ति और चीज़ों से बनता है। ☐

(ग) समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने में सुधार कर समाज सुधार सकता है। ☐

(घ) प्रस्तुत कहानी का शीर्षक स्वयं का निर्माण है। ☐

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) गौतम बुद्ध अनुयायी थे।

☐ जैन धर्म के ☐ बौद्ध धर्म के ☐ हिंदू धर्म के ☐ पारसी धर्म के

(ख) अरस्तू दार्शनिक थे।

☐ इटली के ☐ पोलेण्ड के ☐ यूनान के ☐ भारत के

(ग) सरकस वाले पतले-पतले तारों पर कैसे चल लेते हैं?

☐ अभ्यास द्वारा ☐ विश्वास द्वारा ☐ स्वयं द्वारा ☐ सबके द्वारा

(घ) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह कथन है-

☐ थार्नडाइक का ☐ अरस्तू का ☐ प्लूटो का ☐ जॉन डीवी का

7. मिलान कीजिए।

(क) प्रतिकूल	अवगुण
(ख) सद्गुण	विशेष
(ग) साधारण	तुच्छ
(घ) श्रेष्ठ	अनुकूल

8. बौद्ध धर्म के चार व्यायाम लिखिए

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

9. अवगुणों को छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प किस प्रकार सहायक है? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

....

10. सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा व दुखियों के प्रति दया न होने से क्या ब्रह्म विचार की कल्पना संभव है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

11. दिए गए शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए।

(क) व्यायाम – ....   (ख) संकल्प – ....

(ग) प्रकृति – ....   (घ) प्राणी – ....

12. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

(क) अच्छा – .... (ख) स्वच्छ – ....

(ग) असफल – .... (घ) गंभीर – ....

13. संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) सद्गुण – .... (ख) प्रतिकूल – ....

(ग) प्रवृत्ति – .... (घ) प्रत्येक – ....

14. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) गंगा नहाना – ....

(ख) आँसू पोंछना – ....

(ग) उल्टी गंगा बहाना – ....

(घ) कसौटी पर कसना – ....

15. दिए गए शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

(क) व्याय्म – .... (ख) असभंव – ....

(ग) व्यक्ति – .... (घ) वर्थ्य – ....

16. दिए गए समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए।

	समस्त पद	विग्रह	समास का नाम
(क)	महावीर –	....	....
(ख)	चतुर्भुज –	....	....
(ग)	आजीवन –	....	....
(घ)	महात्मा –	....	....

17. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

(क) अरि – ....

अरी – ....

(ख) शांत – ....

सांत – ....

(ग) अपेक्षा – ....

उपेक्षा – ....

(घ) आदि - ....

आदी - ....

(ङ) प्रकृति - ....

प्राकृत - ....

18. प्रस्तुत लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) अधजल गगरी छलकत जाय।

....

(ख) इस हाथ दे, उस हाथ ले।

....

(ग) जैसी करनी, वैसी भरनी।

....

(घ) एक कहो, न दस सुनो।

....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

19. 'विचारों का जीवन से संबंध' पर अनुच्छेद-लेखन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

20. 'गौतम बुद्ध' के विषय पर जानकारी एकत्रित कर अपनी कक्षा में चर्चा करें।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

21. जिस प्रकार समाज और व्यक्ति एक दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार सदगुण और दृढ़ता भी। आप एक बेहतर समाज का निर्माण किस प्रकार करना चाहेंगे?

अध्याय 3

वन : हमारी अमूल्य संपदा
(निबंध)

अध्ययन से पूर्व

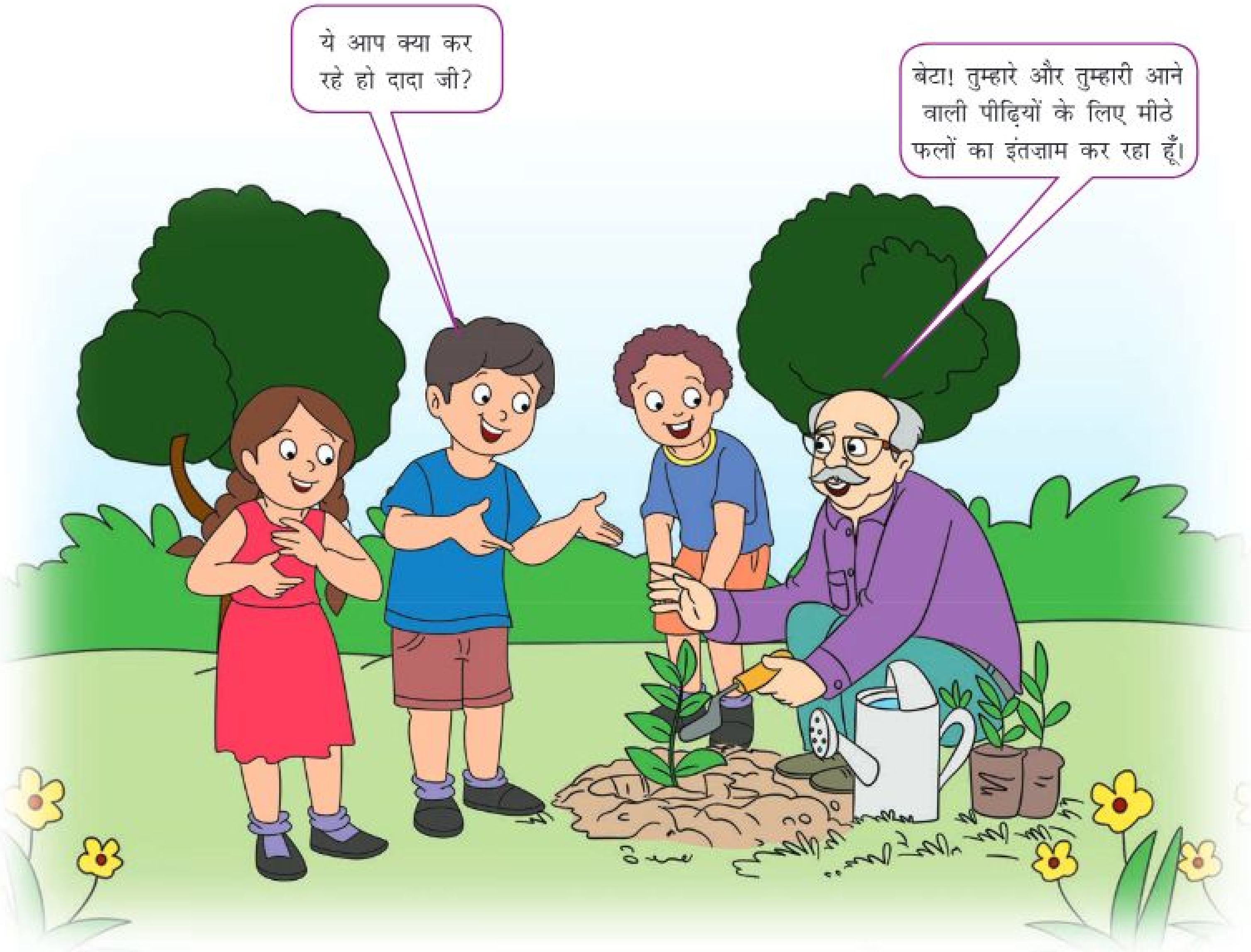

निबंध का मूल तत्व

बच्चों को वन संरक्षण का महत्व समझाना

मानव जीवन के लिए वनों का बहुत ही महत्व है। जीवन की शुरूआत से लेकर अंत तक मानव जीवन पर्यावरण पर ही निर्भर रहा है। तो ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि पर्यावरण के विभिन्न अंग जैसे वायु, जल, मिट्टी, पेड़-पौधे मानव जीवन के लिए अति आवश्यक है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों में वनों का अत्यधिक महत्व है। यदि पर्यावरण का संरक्षण न हुआ तो स्वस्थ जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकेगी। इसका परिमाण हमें हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों के आश्रमों में देखने को मिलता था, जो वनों में आश्रम बनाकर न सिर्फ तपस्या करते थे अपितु गुरुकुल द्वारा शिष्यों को भी प्रकृति से जोड़ते हुए मनुष्य का प्रकृति से संबंध स्थापित करते थे।

प्रकृति ने धरती को वृक्ष तथा वनस्पतियों के रूप में अनेक अमूल्य संपदा प्रदान की हैं जिन्हें वन संपदा कहा जाता है। वृक्ष मानव जीवन के लिए सबसे उपयोगी तत्व माने जाते हैं। क्योंकि पृथ्वी पर सजीवों को जीवित रहने के लिए ऑक्सीज़न की आवश्यकता पड़ती हैं और ऑक्सीज़न का एकमात्र स्रोत वृक्षों को ही माना जाता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वनों की महिमा के अनेक उल्लेख उपलब्ध हैं। अथर्ववेद में वनों को समस्त सुखों का स्रोत कहा गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने वृक्ष को ईश्वर की विभूति कहकर उसका महत्व स्पष्ट किया है। अग्निपुराण में वृक्षों को काटने का निषेध किया गया है, क्योंकि वे परिवार की सुख-समृद्धि के आधार हैं। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर बताया गया है। अतएव वृक्षों की रक्षा और उनका संवर्धन मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए परमावश्यक है। वृक्षों को अनावश्यक रूप से काटना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

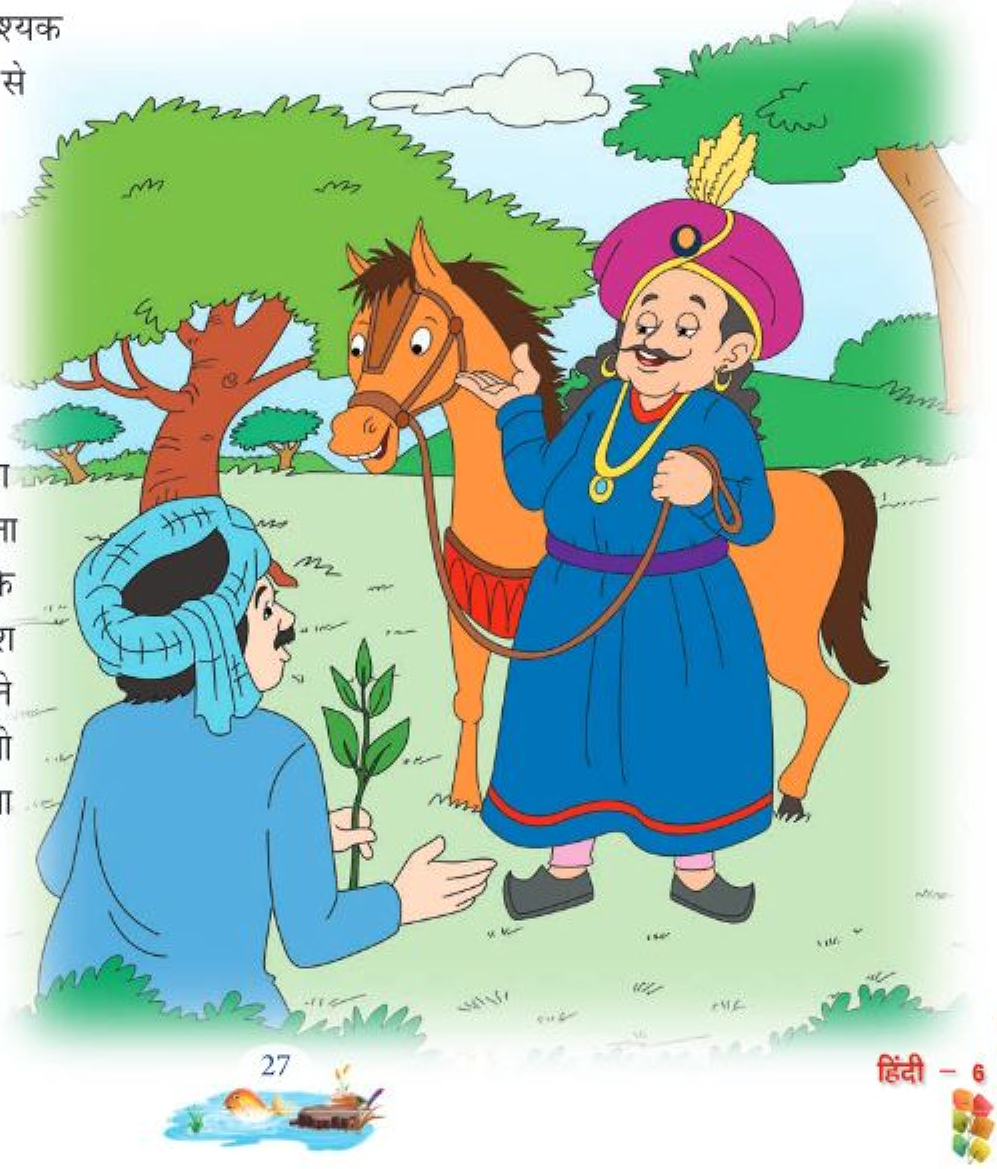

वृक्षों के महत्व के संबंध में एक वृद्ध किसान तथा राजा के बीच वार्तालाप का प्रसंग बहुत ही अर्थपूर्ण है। वृद्ध किसान सड़क के किनारे आम का एक पौधा लगा रहा था। वह इतना बूढ़ा और क्षीणकाय था कि उसके हाथ-पैर काँप रहे थे। संयोगवश मार्ग से राजा का रथ निकला। उसने वृद्ध को पौधा लगाते देखा तो उसके पास पहुँचकर पूछा- "बाबा जी! आप बहुत वृद्ध हो चुके हैं। क्या आप इस वृक्ष के फल खा सकेंगे जो इतनी तन्मयता से यह पौधा लगा रहे हैं ?''

वृद्ध ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया- "महाराज, जिस पौधे को मेरे बाप-दादा ने लगाया था, उसके फल मैं खाता रहा हूँ। इसी प्रकार जो पौधे मैं लगा रहा हूँ, उनके फल मेरे बेटे-बेटियाँ और पोते-पोतियाँ खाएँगे। पेड़-पौधे तो समाज की धरोहर हैं, ये हमारी अमूल्य संपदा हैं।" राजा ने प्रसन्न होकर वृद्ध को पुरस्कार दिया और सम्मानित किया।

वृद्ध किसान का कथन पूर्णतः सत्य था। वन तथा पेड़-पौधे संपूर्ण मानव जाति के लिए धरोहर हैं। हज़ारों वर्षों से मनुष्यों की एक पीढ़ी इन्हें अगली पीढ़ी को सौंपती आई है। अतः वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करे।

आधुनिक काल में पेड़-पौधों को नए संदर्भ में समझने का दृष्टिकोण विकसित हुआ है। अब पेड़-पौधों को हरा सोना कहा जाता है। दोनों में यही अंतर है कि सोना (धातु) खान के भीतर मिलता है, जबकि हरा सोना (वृक्ष) खुली भूमि पर सुलभ है। धरती पर इंसानों के अतिरिक्त अन्य सजीव प्रजातियाँ भी मौजूद हैं और हर किसी को जीने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती ही है। ऐसे में वन मुख्य भूमिका निभाते हैं।

वृक्षों के लाभ भी अनेक हैं। ये वर्षा में सहायक हैं। वृक्षों की घूमती हुई शाखाएँ श्याम मेघमालाओं को जलवृष्टि का निमंत्रण देती हैं। वृक्षों की जड़ें पानी के तेज़ बहाव को रोकती हैं, जिससे भूमि संरक्षण में सहायता मिलती है। तेज़ बहाव रुकने से भूमि की उर्वरा शक्ति सुरक्षित रहती है। वृक्षों से ही हमें ऑक्सीज़न मिलती है और हमारे द्वारा छोड़ी गई कार्बनडाइऑक्साइड को वे अवशोषित कर लेते हैं।

वृक्ष कई प्रकार से हमारे काम आते हैं। जड़ से लेकर तना, शाखाएँ, औषधियाँ, लकड़ी, छाल, फल, फूल, बीज़ आदि सभी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। उनकी लकड़ी घरेलू उपयोग के सामान बनाने और ईंधन के काम आती है। वनों से ही पशु-पक्षियों को आश्रय तथा भोजन प्राप्त होता है।

वनों से और भी कई लाभ हैं। पेड़-पौधे वातावरण की अशुद्ध एवं हानिकारक वायु को स्वयं पचाकर हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। ये भूमि को अधिक तप्त होने से रोकते हैं। वनों की अधिकता के कारण ही प्राकृतिक आपदाओं में कमी आती है, क्योंकि वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि भू-तल पर वृक्ष न होते तो पृथ्वी का तापमान बढ़कर इतना अधिक हो जाता कि ध्रुवीय प्रदेशों पर जमी बर्फ़ पिघल जाती। उस बर्फ़ के पिघलने से पृथ्वी पर जल की मात्रा इतनी अधिक हो जाती कि पृथ्वी उसमें समा जाती। तब न पृथ्वी पर मानव रह पाता, न पशु-पक्षी और न ही वनस्पति-जगत ही।

वन उपज का उपयोग गृह-निर्माण, मेज-कुर्सी, दरवाज़े, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, कृषि-उपकरण, खिलौने, खेल की सामग्री, वाद्‌य-यंत्र, नौकाएँ, खंभे, पुल, कागज़, माचिस आदि बनाने में किया जाता है।

आज शहरीकरण और विकास के नाम पर वनों को काट लकड़ियों की कालाबाज़ारी बेझिझक हो रही है। जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप अधिक खेती के लिए वनों की कटाई, नदी घाटी परियोजनाओं को पूरा करने तथा रेलमार्गों एवं सड़कों का विस्तार करने के लिए भी वनों का सफाया किया जा रहा है।

अपनी वर्तमान परिस्थितियों में ही वनों के क्षेत्र को बढ़ाने तथा हरीतिमा-संवर्धन के लिए हमें प्रयास करने होंगे। जहाँ नहरों और सड़कों का निर्माण किया गया, उनके किनारे वृक्ष लगाए जा सकते हैं। सड़कों के किनारे वृक्ष होने से जहाँ वायुमंडल का संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलेगी, वहीं यात्रियों को शीतल छाया भी सुलभ होगी। आम के आम गुठलियों के दाम।

भारत सरकार द्वारा अपनाई गई नीति के अनुसार देश के तैंतीस प्रतिशत भू-भाग पर वन होने आवश्यक हैं। विगत दशकों में वनों की अंधाधुंध कटाई होने से वनों का क्षेत्र घटकर बीस प्रतिशत से भी कम रह गया है। वनों की इस कमी की पूर्ति हेतु 'सामाजिक वृक्षारोपण' कार्यक्रम व्यापक स्तर पर चलाने की आवश्यकता है। जिसके अंतर्गत सार्वजनिक भूमि पर विविध प्रकार के वृक्ष लगाकर वृक्षों को संरक्षित करने के नए-नए तरीकों को निजात किया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में वनों का विशेष रूप से अभाव हो गया हो, वहाँ पुनः नए सिरे से वृक्षारोपण किया जाए।

देश में वन-क्षेत्र के विस्तार को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में वन-विस्तार को स्थान दिया जाता है। 'सामाजिक वानिकी' संपूर्ण देश में वृक्षारोपण का व्यापक कार्यक्रम है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कृषकों के खेतों की मेड़ों तथा निकट की खाली भूमि में वृक्ष लगाने के लिए सरकार द्वारा पौधे उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त 'एक बच्चा-एक पेड़' कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों को फलदार वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसा इसलिए भी माना जाता है क्योंकि सनातन संस्कृति में वृक्षों को देवता माना गया है तथा वृक्षों को काटना एक अपराध। अत: इस अपराध को रोकने की भावना को जन समूह में रोपित करना जरूरी है।

सामाजिक वानिकी कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक विकास खंड में प्राय: दो हेक्टेयर भूमि में पौधशाला की व्यवस्था की गई है। इन पौधशालाओं के लिए वन विभाग द्वारा विविध प्रकार की पौध तैयार की जाती हैं। इस कार्यक्रम से अधिकाधिक क्षेत्रों को लाभान्वित करने के लिए गाँवों और नगरों के निवासियों के परामर्श से पौधों के रोपण, क्षेत्रों का चयन एवं निर्धारण किया जाता है। इन रोपण क्षेत्रों में खेतों की मेड़ों की भूमि को भी सम्मिलित किया गया है।

वृक्ष हमारे जीवन को सुखी और सुविधापूर्ण बनाने में अत्यधिक सहायक हैं। ये आँधी-तूफ़ान की तेज़ गति को नियंत्रित करते हैं, भूमि में आर्द्रता बनाए रखते हैं तथा भूमि को अपनी जड़ों से जकड़कर चट्टानों और मिट्टी को खिसकने से रोकते हैं। इनकी कमी होने पर वर्षा कहीं अधिक और कहीं कम होने लगी है और वर्तमान समय में भू-स्खलन, भूकंप, सूखा आदि आपदाएँ हमारे जीवन को न सिर्फ़ प्रभावित कर रही हैं, बल्कि मानव जाति के विनाश का कारण भी बनती जा रही है।

शब्दार्थ

घटक	= तत्व	धरोहर	= अमानता
आर्द्रता	= नमी	हरीतिमा	= हरियाली
संपदा	= संपत्ति	निषेध	= मनाही
संवर्धन	= बढ़ावा	क्षीणकाय	= अत्यंत दुर्बल

उच्चारण करें

दृष्टिकोण	जलवृष्टि	स्रोत	विभूति	ध्रुवीय
नियंत्रित	अंधाधुंध	सामाजिक	कार्यक्रम	सुनिश्चित

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ के माध्यम से वन एवं पर्यावरण का महत्व समझाते हुए वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वन संपदा किसे कहते हैं?

(ख) भूमि की उर्वरा शक्ति किसके द्वारा बढ़ती है?

(ग) पर्यावरण का आधार किसे माना गया है?

(घ) वन हमारे किस-किस काम आते हैं?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वन पर्यावरण को किस प्रकार संतुलित रखते हैं?

....

(ख) वृक्षों का संरक्षण और उनका संवर्धन किस कार्य हेतु आवश्यक है?

....

(ग) वन संपदा के क्या लाभ हैं?

....

(घ) वनों से अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

....

3. सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए।

अमूल्य	हरा सोना	पानी	कार्बनडाइऑक्साइड	ऑक्सीज़न

(क) वृक्षों को .... कहा गया है।

(ख) वृक्ष मिट्टी का कटाव और .... के तेज़ बहाव को रोकने में सहायक हैं।

(ग) वृक्ष हमसे .... लेकर .... प्रदान करते हैं।

(घ) वन प्रकृति की .... संपदा है।

4. मिलान कीजिए।

(क) उर्वरा शक्ति	ईंधन
(ख) हरा सोना	गैस
(ग) ऑक्सीज़न	भूमि
(घ) लकड़ी	वृक्ष

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) पर्यावरण का संतुलन घटक है।

☐ जल ☐ वृक्ष ☐ धरा ☐ वायु

(ख) वृक्ष सहायक हैं–

☐ भूमि की पकड़ बनाने रखने में ☐ उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में

☐ आपदाओं को रोकने में ☐ ये सभी

(ग) ध्रुवीय क्षेत्रों की बर्फ़ पिघल रही है–

☐ पर्यावरण का तापमान बिगड़ने से ☐ सूरज की किरणों के कारण

☐ गर्म क्षेत्र होने के कारण ☐ पेड़ लगने के कारण

6. दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) संरक्षण - ....

(ख) पर्यावरण - ....

(ग) सुरक्षित - ....

(घ) सहायक - ....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. 'वृक्ष पर्यावरण का आधार है।' कैसे? कक्षा में चर्चा करते हुए लिखिए।

....

....

....

....

....

8. 'वृक्षों को काटना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है।' इस कथन को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

9. वृक्षों के संवर्धन हेतु हमें क्या प्रयास करने होंगे? कक्षा में संवाद माध्यम से चर्चा करते हुए बताइए।

10. वनों के कटाव हुए बिना औधोगीकरण संभव नहीं है। इस कथन से आप कितना सहमत हो और क्यों? यदि नहीं तो क्यों नहीं? लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

11. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) स्वस्थ – .... (ख) शुद्ध – ....

(ग) सुरक्षित – .... (घ) मूल्य – ....

12. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए।

(क) शाखा – .... (ख) पौधा – ....

(ग) वृक्ष – .... (घ) क्षेत्र – ....

13. दिए गए शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) सर्वाधिक – .... (ख) अधिकतम – ....

(ग) प्रदूषण – .... (घ) पर्यावरण – ....

14. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना –
....

(ख) जिस डाल पर बैठना उसी को काटना –
....

(ग) टस से मस न होना –
....

(घ) आम के आम गुठलियों के दाम –
....

15. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।

(क) कौन आई है? देखो – ....

(ख) जो करेगा वह भरेगा – ....

(ग) कृपया करके तुम भी काम कर लो। – ....

(घ) मैं संकल्प लेता हूँ कि वनों की रक्षा करूँगा – ....

16. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए।

(क) उन्होंने रोक कर पूछा पेड़ है कहाँ

(ख) मेरे मन निराश होने की ज़रूरत नहीं है

(ग) सब जीव जंतु भाग कर इधर-उधर छिप गए

(घ) प्रकृति की रक्षा कौन करेगा

17. गलत कारक पहचानते हुए सही कारक लगाकर पुनः वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) हम ऑक्सीज़न वृक्षों के लिए लेते हैं। ....

(ख) यात्री पेड़ से छाया को बैठे है। ....

(ग) पक्षी अपना घर वृक्षों के लिए बनाते हैं। ....

(घ) वन के जीवन सुरक्षित है। ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

18. 'वृक्ष लगाओ, धरा बचाओ' पर अनुच्छेद-लेखन कीजिए।

....

....

....

....

....

19. लकड़ी की कालाबाज़ारी को रोकने हेतु वन अधिकारी को शिकायत-पत्र लिखिए।

20. दिए गए चित्र का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

21. "वन है तो जन है।" आप वनों के संरक्षण हेतु अपनी भूमिका किस प्रकार निभाना चाहेंगे?

कौशल-अवलोकन एवं संज्ञान

अध्याय 4

उन्नति का मंत्र
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में यह बताया गया है कि समय अत्यंत मूल्यवान होता है। इसलिए, हमें समय के महत्व को पहचानना चाहिए।

कभी सवेरा कभी अँधेरा,

कभी चाँद मुसकाता है।

खिलता फूल कभी डाली पर,

वही कभी झड़ जाता है।।

कभी बालपन मिलता हमको,

कभी जवानी आती है।

पागल बन जब झूमा करते,

तभी जरा आ जाती है।।

कभी उमड़ते नदियाँ-नाले,

कभी धूल ही उड़ती है।

अँधेरी रजनी में धरती,

ओस-कणों से धुलती है।।

समय निरंतर बढ़ता जाता,

बदल रहा जग-जीवन है।

बदल रही है पत्ती-पत्ती,

बदल रहा सब कण-कण है।।

यदि इच्छा है सुख की तुमको,

समय व्यर्थ मत खोना रे।

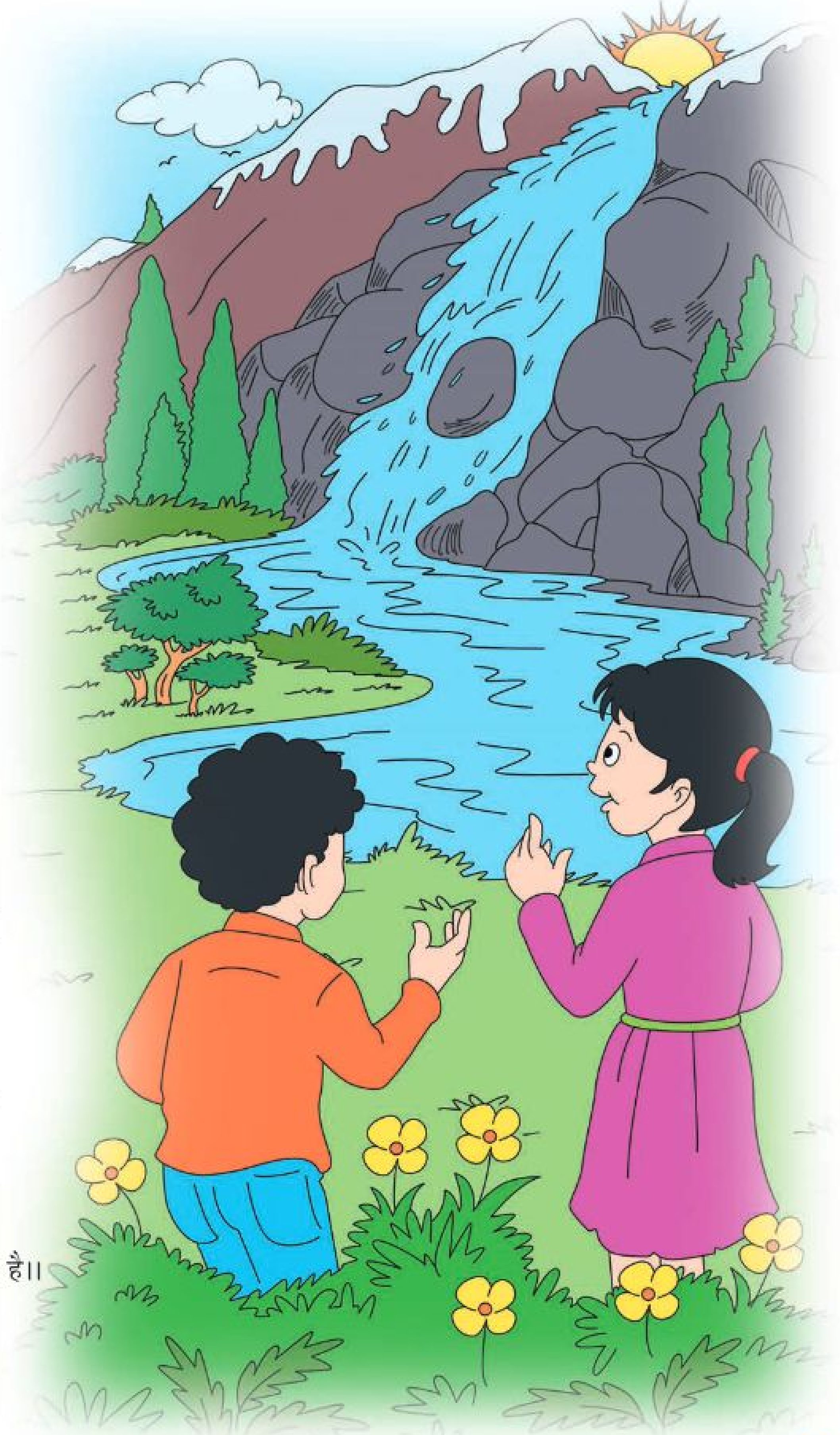

जो कुछ करना, करो समय पर,
नहीं आलसी होना रे।।
समय मान है, समय प्राण है,
समय सभी सुख-दाता है।
समय नष्ट कर नहीं कोई भी,
विद्‌या, धन, सुख पाता है।।
नहीं समय को कभी गँवाओ,
उन्नति का यह मंत्र सदा।
मूल्य समय का जो पहचाने,
टलती उसकी सब विपदा।।

शब्दार्थ

सवेरा	= सुबह	बालपन	= बचपन
उमड़ते	= उफान करते हुए	रजनी	= रात, निशि
जग	= संसार, विश्व	दाता	= देने वाला
उन्नति	= प्रगति, विकास	मूल्य	= कीमत

उच्चारण करें

मुसकाता	नदियाँ	इच्छा	व्यर्थ	नष्ट
विद्‌या	विपदा	प्राण	मंत्र	विपदा

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता का भावार्थ बताएँ, तथा उन्हें आलस्य से दूर रहने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) अंधेरे में कौन मुसकाता है?

(ख) अँधेरी रात में धरती किससे धुलती है?

(ग) 'मान' तथा 'प्राण' कौन हैं?

(घ) कविता में किसके मूल्य को पहचानने के लिए कहा है?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) हमारे जीवन में कौन-से परिवर्तन आते हैं?

....

(ख) सबसे मूल्यवान वस्तु क्या है? उसे किस प्रकार व्यवहार में लाना चाहिए?

....

(ग) सुख की इच्छा रखने के लिए किसे बचाना आवश्यक है?

....

(घ) कविता में आलसी न होने का मंत्र क्यों दिया गया है?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) कभी सवेरा कभी अँधेरा, कभी .... मुसकाता है।

(ख) पागल बन जब झूमा करते, तभी .... आ जाती है।

(ग) कभी उमड़ते ...., कभी धूल ही उड़ती है।

(घ) यदि .... है सुख की तुमको, ... व्यर्थ मत खोना रे।

(ङ) समय नष्ट कर नहीं कोई भी, ... धन सुख पाता है।

4. दिए गए शब्दों को उचित रूप से सुमेलित कीजिए।

(क) फूल	सुख
(ख) धूल	खिलना
(ग) कण-कण	समय
(घ) व्यर्थ	बदलना
(ङ) मंत्र	उड़ना
(च) दाता	उन्नति का

5. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) निरंतर क्या बढ़ रहा है?

☐ कद ☐ समय ☐ रास्ता ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) डाली पर कौन खिलता और मुरझाता है?

☐ फल ☐ भँवरा ☐ फूल ☐ पत्तियाँ

(ग) पागल बन कर झूमने पर क्या आ जाता है?

☐ बुढ़ापा ☐ जवानी ☐ बचपन ☐ इनमें से कोई नहीं

(घ) हमें किसको नष्ट नहीं करना चाहिए?

☐ खिलौने ☐ मिट्टी ☐ दुख ☐ समय

6. दी गई पंक्तियों के भावार्थ को लिखिए।

(क) कभी उमड़ते नदियाँ-नाले,
कभी धूल ही उड़ती है।
अँधेरी रजनी में धरती,
ओस-कणों से धुलती है।

....

....

....

....

....

....

(ख) यदि इच्छा है सुख की तुमको,
समय व्यर्थ मत खोना रे।
जो कुछ करना, करो समय पर,
नहीं आलसी होना रे।

....

....

....

....

....

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. 'आलस्य इंसान को निर्बल बनाता है, जबकि परिश्रमी होना जागरुक।' ऐसा क्यों? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. दिए गए शब्दों के पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों को लिखिए।

(क)	समय –	....	(ख)	जवानी –	....
(ग)	पत्ती –	....	(घ)	पागल –	....
(ङ)	इच्छा –	....	(च)	सवेरा –	....
(छ)	सुख –	....	(ज)	टलती –	....

9. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

विराम चिह्न: भाषा के लिखित रूप में जब अर्थ एवं वाक्य रचना में कुछ समय रुकने के लिए जिन संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहा जाता है। जैसे- (,), (;), (।), (?), (:), (!), (–), (.) आदि।

(क) बीजक कबीरदास द्वारा रचित ग्रंथ है

(ख) स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है

(ग) नहीं उसने आपकी बात नहीं सुनी

(घ) क्या तुम पौष्टिक खाना खाते हो

10. दिए गए प्रत्ययों से शब्दों का निर्माण कीजिए।

(क) औटी – ....

(ख) इयल – ....

(ग) आड़ी – ....

(घ) औना – ....

(ङ) इया – ....

(च) हरा – ....

(छ) आऊ – ....

(ज) ई – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

11. प्रस्तुत कविता में कवि ने समय के साथ ऋतु परिवर्तन के बारे में बताया है। क्या आप जानते हैं, भारत में कितने प्रकार की ऋतुएँ पाई जाती हैं? उसके बारे में अपने अनुभव साझा कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

12. दी गई घड़ियों के समय को देखकर पहचानिए कि वह किस समय काल की ओर संकेत को प्रदर्शित कर रही हैं?

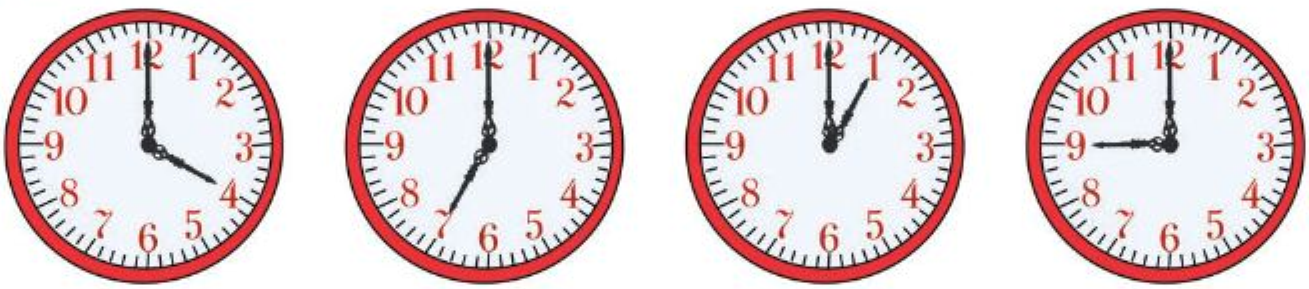

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

13. उन्नति एक ऐसा मंत्र है जिसे हर कोई आत्मसात करना चाहता है। आप अपने जीवन में किस प्रकार की उन्नति के मंत्र को आत्मसात करना चाहेंगे?

अध्याय 5

परिवर्तन
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं जिन्होंने अपनी कर्मठता, कर्तव्यपरायणता, जिद्द और देशभक्ति से परिवर्तन को संभव किया। चित्रों को पहचानकर उनके किए गए कुछ कार्यों को बताइए।

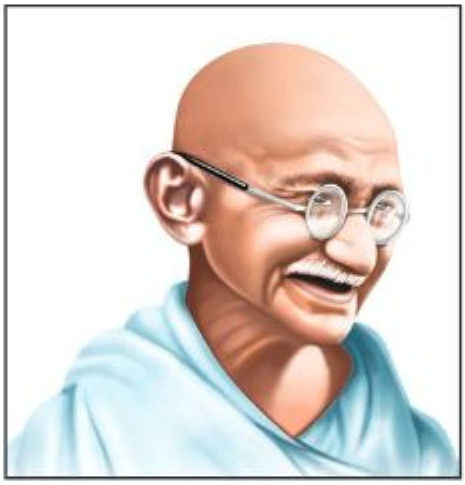

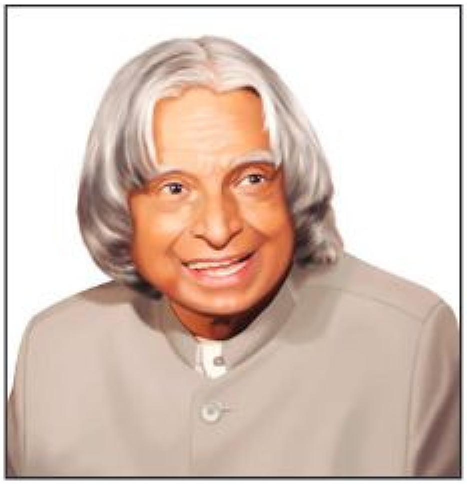

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में यह बताने का प्रयास किया गया है कि परिवर्तन द्वारा समाज को बदला सकता है। लोगों की वर्षों से चली आ रही धारणाओं को प्रमुख पात्रों के द्वारा बदलने का प्रयास किया गया जिसमें उन्हें सफलता भी मिली।

वेदप्रकाश मास्टर जी बड़े ही विनम्र, आदर्शवादी तथा उच्च विचारों वाले व्यक्ति थे। कोई उनके व्यवहार से एक बार परिचित हो जाता तो यही सोचता, सब क्यों नहीं वेदप्रकाश जी जैसे हो जाते। बीस वर्ष से वे एक कस्बे में सरकारी अध्यापक थे। लोग उन्हें मास्टर जी कहा करते थे।

वेदप्रकाश जी की इसी सप्ताह गाँव में नियुक्ति हुई थी। जब उन्हें अपनी नियुक्ति का समाचार ज्ञात हुआ तो उन्हें तनिक भी बुरा न लगा, उल्टे अच्छा ही लगा कि कुछ सेवा करने का अवसर मिलेगा। वे यह भलीभाँति जानते थे कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता गाँवों में बसती है। उसे शिक्षित, साक्षर और संस्कारी बनाना देश की बहुत बड़ी सेवा है। वे गाँव में बहुत कुछ करने की कामना लेकर आए थे। गाँव वालों की प्राय: यह शिकायत होती थी कि जो अध्यापक यहाँ आते हैं, वे बच्चों को ठीक से पढ़ाते नहीं हैं, अधिकतर छुट्टी पर रहते हैं। इस गाँव में स्थिति यह थी कि अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाना ही नहीं चाहते थे। इसका प्रमुख कारण था-गरीबी। छोटे-छोटे बच्चों को काम पर लगा दिया जाता, जिससे परिवार की आय हो जाती । उनके पढ़ने-लिखने की बात को कोई महत्त्व ही न देता था। मास्टर साहब के सामने अनेक चुनौतियाँ थीं पर वे हार मानने वाले न थे। बच्चों को विकसित न होने देने का मूल कारण क्या है? कहाँ हैं? वे इसे भली प्रकार जान गए थे। यह बात पूरी तरह से सिद्ध हो गई थी कि जब तक प्रौढ़ों के विचारों में परिवर्तन न किया जाएगा, उन्हें शिक्षा का महत्त्व न समझाया जाएगा, वे अपने बच्चों को इस ओर प्रेरित नहीं करेंगे।

उन्होंने सरकारी सूत्रों से संपर्क किया और विद्यालय में सायं के समय एक घंटे के लिए प्रौढ़ पाठशाला खोल ली। यह वह समय था जब गाँव के सभी युवक, प्रौढ़ व बूढ़े चौपाल में गपशप कर समय बिताते थे। अब उनके पास खाली समय होता था।

मास्टर साहब स्वयं ही दस-बारह युवकों को बड़े आग्रह से विद्यालय में बुलाकर लाए। उनका मन तो नहीं था इस नीरस कार्य में लगने का, परंतु वे मास्टर जी का आदर करते थे, सो विद्यालय में आ बैठे।

मास्टर जी उन्हें समझा रहे थे कि यदि थोड़ा-बहुत पढ़-लिख जाओगे, तो अपने आप चिट्ठी लिख-पढ़ सकोगे, अखबार पढ़ सकोगे, खेती के बारे में नई-नई जानकारी ले सकोगे। बात एक-दो की समझ में आ गई। उन्होंने अपने साथियों को भी समझाया कि शाम का समय नष्ट करने की अपेक्षा एक घंटा स्कूल में आकर पढ़ लिया जाए तो उससे लाभ ही होगा। "चलो, थोड़े दिन ऐसा ही करके देखते हैं। कुछ लाभ होगा तो आएँगे, नहीं तो किसी की कोई जोर-जबरदस्ती नहीं," साथियों ने कहा।

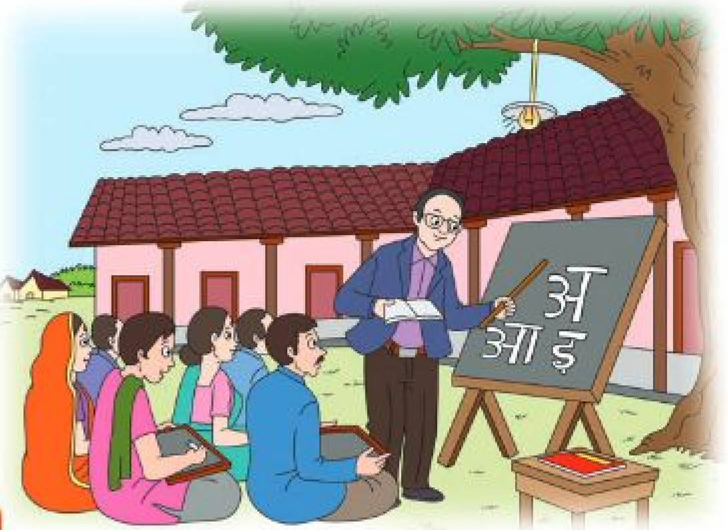

इस प्रकार मास्टर साहब की प्रौढ़ पाठशाला में पाँच-सात व्यक्ति रात्रि में आने लगे। मास्टर साहब उन्हें केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं कराते थे, अपितु अनेक व्यावहारिक जानकारियाँ भी पुस्तकों से पढ़कर सुनाते; जैसे-गाँव में फैली बीमारियों से कैसा बचा जाए, सरकार किसानों की क्या-क्या सहायता करती है, स्वस्थ कैसे रहा जा सकता है, आदि-आदि। यह जानकर सभी को लगता कि किताबों में तो बड़ी उपयोगी बातें लिखी रहती हैं। अधिकांश गाँव वाले सोचते थे कि नौकरी करने के लिए ही पढ़ाई की जरूरत है, पर यह उनका भ्रम सिद्ध हुआ। अब वे दूसरों को भी इस ओर प्रोत्साहित करने लगे। धीरे-धीरे शिक्षार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। अब वे अपने बच्चों को पढ़ाने के भी उतने विरुद्ध न रहे।

मास्टर साहब गाँव की समस्या जानते थे। उन्होंने एक काम और किया, स्कूली पढ़ाई के बाद वे एक घंटा बच्चों को रोके रखते। इस घंटे में वे छोटे-छोटे ऐसे काम बच्चों से कराते, जिससे उन्हें कुछ पैसे भी मिल सकें। गाँव का बनिया हर सप्ताह शहर का चक्कर लगाता था। उससे उन्होंने रद्दी अखबार मँगवा लिए थे। बच्चे उनके लिफाफे बना देते। बनिया जब शहर जाता, तो उन्हें बेच आता। जो पैसे आते, अपने-अपने काम के हिसाब से सभी बच्चों को लागत निकालकर दे दिए जाते।

इसी प्रकार धीरे-धीरे और भी काम प्रारंभ करवा दिए। सुतली की पट्टी, मूँज के आसन, ढाक के पत्तों के दोने-पत्तल आदि काम बच्चे बड़ी कुशलता से करने लगे। गाँव से कोई तो शहर जाता ही था। मास्टर जी उसी से कहकर उन्हें भेजकर बिकवा दिया करते। इससे बच्चे महीने में कुछ रुपए तो कमा ही लेते थे। इस पर भी यदि कोई अभिभावक अपने बच्चे की पढ़ाई रुकवाता, तो मास्टर जी उसके घर जाकर उसे समझाते कि इस समय यह भले ही तुम्हें कम पैसे लाकर दे रहा है, परंतु बड़ा होकर यह तुम्हें सुख देगा। अपने बच्चों के भविष्य पर कुल्हाड़ी न मारो। किताब, कापी आदि सभी तो स्कूल से दी जाती है। क्यों अपने बच्चे को इससे वंचित रखकर उसे भी अपने जैसा ही बनाना चाहते हो। मास्टर जी के बार-बार समझाने का फल यह होता कि वह व्यक्ति बालक के कमाए थोड़े पैसों पर ही संतोष करता और उसे स्कूल भेज ही देता। मास्टर जी के प्रयासों से अभिभावकों के मन में यह भाव जग गया था कि हम भले ही भूखे रह लेंगे, पर अपने बच्चों को शिक्षित अवश्य बनाएँगे।

सच्ची लगन और निष्ठा से किए गए काम में कभी-न-कभी निश्चित रूप से सफलता मिलती ही है। मास्टर साहब को भी अपने प्रयासों में सफलता मिली। न केवल बालकों में, अपितु बड़ों में भी पढ़ने की लगन जग चुकी थी। मास्टर साहब न केवल उन्हें साक्षर बना रहे थे, अपितु अच्छे संस्कार भी दे रहे थे। व्यक्तित्व निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण-ये उनकी शिक्षा के तीन लक्ष्य थे। इस कार्य में सबसे बड़ा सहयोग उनके विद्यालय की बालक सेना दे रही थी। पूरे गाँव की सफाई करना, बरसात में गड्ढे भरना आदि अनेक कार्य वह करती थी। गाँव की दीवारों पर उन्होंने सुंदर सद्विचार लिख दिए थे, जो आने-जाने वालों को प्रेरणा दिया करते थे। मास्टर साहब के संकल्प एवं अध्यवसाय ने गाँव को प्रगति की दिशा दे दी थी। मास्टर साहब ने एक समिति भी बना ली थी- 'ग्राम विकास समिति'। इसमें गाँव के बड़े-बूढ़े और मुखिया तो थे ही, नवयुवकों को भी साथ में लिया गया था। मास्टर जी को गाँव का हर व्यक्ति अपना हितैषी मानने लगा

था। वे जो भी कहते, वे सब वैसा ही करने में जुट जाते। देखते-देखते गाँव में विकास समिति ने गाँव की सीमा पर स्कूल के लिए पक्की इमारत बनवा ली। इसमें नवगठित युवक दल प्रातः व्यायाम करता। दोपहर में बच्चों का जूनियर हाई स्कूल चलता था। दोपहर से शाम तक तरह-तरह के कुटीर उद्योग के काम होते। रात्रि-भोजन के बाद कुछ भजन, कथा, कीर्तन होता और प्रौढ़ पाठशाला चलती । पाँच ही वर्ष में 'युवक दल' ने गाँव से कीचड़ और कचरे को खदेड़ दिया। गाँव की गलियाँ उभरी और साफ-सुथरी बन गईं। खेतों के पास कूड़ा घर और कंपोस्ट के गड्ढे बन गए। घरों को साफ-सुथरा एवं लिपा-पुता रखने की होड़-सी लग गई।

स्कूल में निरीक्षण के लिए आए निरीक्षक विद्यालय के वातावरण से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने मास्टर जी को स्कूल में वार्षिकोत्सव मनाने का सुझाव दिया। इसमें अध्यक्ष पद के लिए वे जिलाधीश को लाए। जिलाधीश गाँव को देखकर हर्ष-विभोर हो उठे। उन्होंने स्वयं तो प्रशंसा की ही, साथ ही अपनी रिपोर्ट भी सरकार को इस आशय से भेजी कि सरकार ने वह गाँव आदर्श गाँव योजना में ले लिया। इस प्रकार सरकार की ओर से सभी विभागों-व्यायामशाला, कुटीर उद्योग, प्रौढ़शाला आदि के लिए भरपूर सरकारी सहायता भी दी जाने लगी।

अब मास्टर जी की भी पदोन्नति हो गई। उनके लिए निरीक्षक पद पर नगर में आने का आदेश आया। यह जानकर सभी गाँव वालों की आँखों में आँसू आ गए। मास्टर जी स्वयं भी उनसे जुड़ गए थे। जब सभी ने उनसे न जाने का घोर आग्रह किया, तो वे भी उसे ठुकरा न सके। स्थायी रूप से उसी गाँव में रहने का आदेश प्राप्त कर वहीं रह गए। वह गाँव दूसरों के लिए प्रेरक उदाहरण बना हुआ है। मास्टर जी जैसी सूझबूझ वाले और लगनशील कार्यकर्ता यदि प्रत्येक गाँव में हो जाएँ, तो देश का कायाकल्प होते देर न लगे। गाँवों की प्रगति से ही देश की सच्ची प्रगति संभव है।

शब्दार्थ

आय	= आमदनी	रद्दी	= कबाड़, बेकार
आदर्शवादी	= उसूलों पर चलने वाला	कुशलता	= चतुराई, प्रवीणता
चुनौतियाँ	= कठिनाईयाँ	हितैषी	= हित चाहने वाला (मित्र/दोस्त)
प्रौढ़ों	= परिपक्व अवस्था को प्राप्त	सद्विचार	= बेहतर ख़्याल
आग्रह	= अनुरोध	अध्यवसाय	= उद्यम, परिश्रम

उच्चारण करें

शिक्षार्थियों   व्यावहारिक   ढाक   दोने-पत्तल   संस्कार

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कहानी का मूल तत्व या भाव समझाते हुए उन्हें एक कुशल ढाँचे में ढालने का प्रयास करें ताकि वे समाज के लिए उपयोगी बन सकें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मास्टर जी का क्या नाम था?

(ख) गाँव वालों की क्या शिकायत थी?

(ग) बच्चे कौन-से काम कुशलतापूर्वक करने लगे?

(घ) मास्टर जी ने गाँव में प्रौढ़ पाठशाला का समय क्या रखा?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मास्टर जी को गाँव में नियुक्ति के समाचार से बुरा क्यों नहीं लगा?

....

(ख) मास्टर जी की नियुक्ति के समय गाँव की प्रमुख समस्या क्या थी?

....

(ग) मास्टर साहब प्रौढ़ पाठशाला में किस प्रकार की शिक्षा देते थे?

....

(घ) गाँव का हर व्यक्ति मास्टर जी को अपना हितैषी क्यों मानने लगा था?

....

(ङ) स्कूल में आए निरीक्षक महोदय विद्यालय के वातावरण से क्यों प्रभावित हुए?

....

3. उचित शब्दों के साथ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) अब .... की भी .... हो गई।

(ख) खेतों के पास .... और .... के गड्ढे बन गए।

(ग) ...., ... और .... उनकी शिक्षा के तीन लक्ष्य थे।

(घ) लोग उन्हें .... कहा करते थे।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. देश का नागरिक होने के नाते यह आपका परम कर्तव्य है कि आप स्वयं को देश की उन्नति में सहायक सिद्ध कीजिए। आप देश की उन्नति में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

5. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य रचना कीजिए।

(क) हितैषी – ....

(ख) निरीक्षण – ....

(ग) परिवर्तन – ....

(घ) नियुक्ति – ....

(ङ) प्रौढ़ – ....

6. निम्नलिखित गद्यांश को वर्तमान काल में परिवर्तित करके पुनः लिखिए।

इन सारी गतिविधियों से अनजान छोटू आगे बढ़ रहा था। तभी जाने कहाँ से सिपाही दौड़े चले आए और उसको पकड़कर वापस घर छोड़ आए। घर पर माँ इंतज़ार कर रही थी। बस, अब उसकी खैरियत न थी। उसके पापा न होते तो, उसका बचाव मुश्किल था।

....

....

....

....

7. नीचे कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ दी गई है, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़कर उनका अर्थ लिखिए।

(क) थोथा चना बाजे घना – ....

(ख) घर की मुरगी दाल बराबर – ....

(ग) अक्ल बड़ी या भैंस – ....

(घ) छोटा मुँह बड़ी बात – ....

(ङ) घर का भेदी लंका ढाए – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

8. प्रस्तुत कहानी में आपको मास्टर जी का व्यक्तित्व कैसा लगा? आपस में चर्चा कीजिए।
9. 'परिवर्तन संसार का नियम है' प्रसिद्ध पंक्ति को अपने शब्दों में विस्तारपूर्वक समझाइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

10. एक आदर्श अध्यापक के अंदर कौन-कौन से गुण होते हैं? उन गुणों व मूल्यों को लिखते हुए यह समझाइए वह किस प्रकार समाज के निर्माण में सहायक है? क्या इन समस्त गुणों को आप अपने विद्यालय के किसी शिक्षक में पाते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अध्याय 6

प्रकाश
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

- उपरोक्त चित्र को देखिए और पहचानिए।
- उपरोक्त चित्र में गाँधी जी को दर्शाया गया है। उनके किस गुण के कारण संपूर्ण भारत प्रकाशित हुआ?

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में यह बताया गया है, कि हम ज्ञान तथा विवेक के बलबूते ऐसी मिसाल खड़ी करें जो संपूर्ण धरती को प्रकाशित कर दे।

विजय नगर में एक ऐसा व्यापारी रहता था जो बहुत ही अनुभवी तथा दूरदर्शी था। वह ऐसा पारखी था कि उसकी नज़र कभी धोखा न खाती थी। सारे नगर में उसके चर्चे होते थे, कि वह एक मामूली आदमी से बिना हेरा-फेरी किए बड़ा नगर सेठ बन गया था। समय के साथ-साथ उसके वैभव में वृद्धि होने लगी थी। उसके चेहरे पर मुर्झाहट आने लगी थी क्योंकि उसकी उम्र अब वृद्धावस्था की ओर बढ़ चली थी। जिसके कारण वह अस्वस्थ और चिंतित सा रहने लगा। उसे अपने धन-दौलत की भी चिंता सताने लगी थी। क्योंकि उसके द्वारा संघर्ष और परिश्रम से अर्जित की गई संपत्ति को वह किसी कुशल हाथों में सौंपना चाहता था। व्यापारी के दो पुत्र थे। उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपनी संपत्ति को दोनों पुत्रों में नहीं बाँटेगा, अपितु जो उनमें से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध कर देगा, उसे ही सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी बना देगा। अब समस्या यह थी कि उनकी परीक्षा कैसे ली जाए कि दोनों में से कौन अधिक बुद्धिमान है।

उसने दोनों पुत्रों को बुलाया और एक-एक रुपया दोनों को देते हुए बोला, ''यह लो और अलग-अलग बाज़ार जाओ। इस एक-एक रुपए से कोई ऐसी चीज़ खरीद कर लाओ जो इस घर को भर दे। ध्यान रहे, तुम्हें एक रुपए से अधिक खर्च नहीं करना है।''

दोनों पुत्रों ने उनकी ओर ऐसे देखा, मानो वह पागल हो गये हो। उन्होंने अपने मन में सोचा, 'हम एक रुपए में ऐसी क्या सुलभ वस्तु ला सकते हैं जो घर को भर दे।' वे रुपया लेना नहीं चाहते थे, परंतु व्यापारी ने उनसे अपने आदेशानुसार कार्य करने के लिए ज़ोर दिया। उसने कहा, ''तुम जाओ और इस काम में अधिक समय मत लगाना। मुझे आशा है कि तुम उचित समय में ही यह कार्य करके वापस आ जाओगे।''

दोनों भाइयों ने एक-एक रुपया लिया और चल दिए। पहला पुत्र इधर-उधर बाज़ार में घूमता रहा, परंतु वह ऐसे किसी वस्तु को नहीं खोज़ सका। जो उसके उद्देश्य की पूर्ति कर सके। उसने ढ़ेर सारी दुकानों को देखा लेकिन वह कुछ नहीं खोज़ पाया। आख़िरकार वह सोचने लगा कि उसके पिता की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है, इसी वज़ह से उन्होंने घर भर जाने वाली वस्तु के खरीदने की बात कही। वह निराश होकर अपना खोज़ का कार्य छोड़ने वाला ही था कि उसे भूसे से लदी हुई एक बैलगाड़ी दिखाई दी। उसने सोचा, कुछ आशा प्रतीत होती है, मैं नहीं जानता कि एक रुपए में कितना भूसा खरीदूँ।

वह गाड़ी वाले के पास गया और उसने भूसे की कीमत के बारे में पूछताछ करने लगा। वह काफी मोलभाव करने लगा और अंत में सफल हुआ। वह एक रुपए में भूसा खरीदकर उससे लदी गाड़ी को अपने घर लाया। उसने पूरे भूसे की गाड़ी को घर के भीतर ले आया और फर्श पर फैला दिया। लेकिन उससे फर्श नहीं ढँक सका।

जब दूसरा पुत्र रुपया लेकर बाहर निकला, तो वह सीधा बाज़ार नहीं गया। ऐसा करने की अपेक्षा वह बाज़ार के समीप एक स्थान पर बैठ गया और बहुत देर तक बैठा हुआ वह सोचता रहा कि एक रुपए में क्या खरीद पाना संभव है। अंत में शाम के समय उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। एक रुपए को लेकर वह तेज़ी से बाज़ार की ओर गया और उस दुकान पर पहुँचा, जहाँ मोमबत्तियाँ बिकती थीं। उसने अपना रुपया मोमबत्तियों पर खर्च कर दिया, जिससे उसे काफी संख्या में मोमबत्तियाँ मिल गईं।

वह मोमबत्तियाँ लेकर घर वापस आया। तो उसका बड़ा भाई बड़ा बेचैन होकर सामने फर्श पर फैले हुए भूसे को निहार रहा था। जैसे ही शाम होने को हुई तो दूसरे पुत्र ने प्रत्येक कमरे में मोमबत्तियों को जलाकर रख दिया जिसके कारण तुरंत ही सारा घर ज्योर्तिमय हो गया।

उसका पिता उससे बहुत खुश हुआ और बोला, ''मेरे बेटे, तुमने वास्तव में बुद्धिमत्ता दिखाई है। मैं अपना सारा धन तुम्हें सौपने को तैयार हूँ।''

हम सभी एक बड़े घर में रहते हैं, जिसे भारतवर्ष कहते हैं। हम में से प्रत्येक को, कुछ को एक रुपया, कुछ को दो रुपए, कुछ को तीन और कुछ को उससे भी अधिक रुपए दिए गए हैं। ये ऐसे रुपए नहीं है जिनसे हम कोई वस्तु खरीद सकें, अपितु ये विभिन्न शक्तियाँ हैं, जो हमें दी गई हैं। हम सभी के पास शारीरिक शक्ति, बौद्धिक योग्यता और चारित्रिक बल है। जिनका प्रयोग किया जा सकता है। यदि हम अच्छे नागरिक बनना चाहते हैं, तो हमें अपनी शक्तियों और योग्यताओं का प्रकाश अपने देश के कोने-कोने में फैलाने के तत्पर रहना चाहिए अर्थात् हम स्वयं को देश की सेवा में लगा दें।

कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता, जब तक कि उसके नागरिक अच्छे न हों। यदि हम अपने देश से

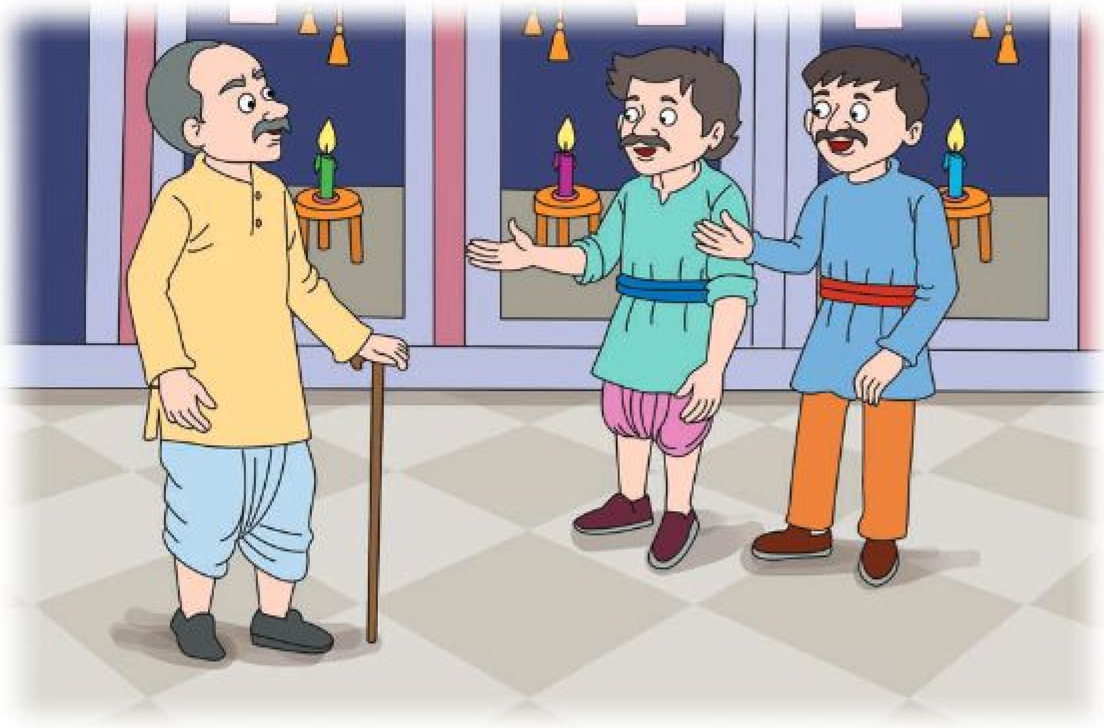

प्रेम करते हैं और उसकी सेवा करना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम अच्छे नागरिक बनने का प्रयास करें।

जब तक हम विद्यालय में हैं, तब तक हमें स्वयं को अच्छी नागरिकता हेतु शिक्षा ग्रहण करना चाहिए और अच्छे नागरिक के गुण विकसित करने चाहिए। ऐसा करने पर जब हम विद्यालय और घर से बाहर निकलकर अपने देश के विभिन्न भागों में जाएँगे, तो उसे अच्छी नागरिकता के प्रकाश से भरने में समर्थ होंगे।

(संकलित)

शब्दार्थ

अर्जित	= पाई हुई, इकट्ठा की हुई	सुलभ	= सरलता से प्राप्त हो जाने वाली
फर्श	= ज़मीन पर	मस्तिष्क	= दिमाग
विभिन्न	= अनेक प्रकार के	प्रयास	= कोशिश

उच्चारण करें

परिश्रम पारखी मोमबत्ती बुद्धिमत्ता उत्तराधिकारी

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कहानी का सारांश एवं मूल भाव से परिचित करवाते हुए बच्चों को प्रत्येक काम बुद्धि तथा धैर्य के साथ करने की सलाह दें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) व्यापारी किस नगर में निवास करता था?

(ख) अपनी संपत्ति को व्यापारी किसे देना चाहता था?

(ग) व्यापारी ने अपने बच्चों में कितने रुपये वर्गीकृत किए?

(घ) व्यापारी ने पुत्रों की बुद्धिमत्ता जाँचने के लिए क्या किया?

(ङ) धनवान व्यापारी की सामाजिक स्थिति कैसी थी?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) अपने पुत्रों को व्यापारी क्यों परखना चाहता था?

....

(ख) व्यापारी के दोनों पुत्रों ने पिता की शर्तों का पालन किस प्रकार किया?

....

(ग) उत्तराधिकारी की परीक्षा में कौन व किस प्रकार से सफल हो पाया?

....

(घ) किसी भी देश की उन्नति किस प्रकार नहीं हो सकती?

....

(ङ) प्रस्तुत कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) व्यापारी के चेहरे पर .... आने लगी थी क्योंकि उम्र अब .... की ओर बढ़ चली थी।

(ख) लड़के ने ढ़ेर सारी .... को देखा लेकिन वह कुछ नहीं खोज पाया।

(ग) लड़का काफी .... करने लगा और अंत में सफल हुआ।

(घ) मेरे बेटे, तुमने वास्तव में .... दिखाई है।

(ङ) हमें स्वयं को अच्छी नागरिकता हेतु .... ग्रहण करना चाहिए।

4. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) धनवान व्यापारी किस किस्म का व्यक्ति था?

☐ मूर्ख ☐ अनुभवी ☐ अदूरदर्शी ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) व्यापारी ने अपने पुत्रों से क्या उम्मीद रखी?

☐ प्रकाश की ☐ अंधेरे की ☐ परिश्रम की ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) पहला पुत्र रुपये से क्या खरीदकर लाया?

☐ कपड़े ☐ राशन ☐ भूसा ☐ शक्कर

(घ) दूसरा पुत्र, पिता के मिले रुपये से क्या लाया?

☐ मोमबत्ती ☐ अगरबत्ती ☐ दीवार घड़ी ☐ इनमें से कोई नहीं

(ङ) हमें अपने देश से प्रेम करने के लिए क्या करना होगा?

☐ पढ़ना ☐ खेलना ☐ देश सेवा ☐ हाथ जोड़ना

5. किसने कहा, किससे कहा?

(क) यह लो, इस एक रुपए से कोई एक चीज़ खरीद कर लाओ।

....

(ख) तुम जाओ और इस काम में अधिक समय मत लगाना।

....

(ग) मेरे बेटे, तुमने वास्तव में बुद्धिमत्ता दिखाई है।

....

(घ) हम सभी एक बड़े घर में रहते हैं, जिसे भारत वर्ष कहा जाता है।

....

ज़रा सोचिए Critical Thinking

6. 'अज्ञानी मानव प्रकाश में भी स्पष्ट रूप से नहीं देख पाता है और ज्ञानी मानव अंधकार में भी स्पष्टत: देख पाता है।' इस कथन से आप कितना सहमत हैं? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. **दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द निर्मित कीजिए।**

(क) प्रसन्नता – ………………………… …………………………

(ख) योग्य – ………………………… …………………………

(घ) प्रसिद्ध – ………………………… …………………………

(ङ) दूरदर्शी – ………………………… …………………………

7. **नीचे दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिणत कीजिए।**

(क) चुनना – …………………………

(ख) बुरा – …………………………

(ग) बुद्धिमान – …………………………

(घ) राष्ट्र – …………………………

8. **समुच्चय बोधक शब्दों का प्रयोग कर चार वाक्यों का निर्माण कीजिए।**

समुच्चय बोधक: दो शब्दो, उपवाक्यों और वाक्यों को जोड़ने या अलग करने वाले शब्दों को समुच्चय बोधक शब्द कहते हैं। जैसे- कि, किंतु, लेकिन, परंतु, इसलिए, क्योंकि, तथा, एवं, मगर आदि।

(क) …………………………

(ख) …………………………

(ग) …………………………

(घ) …………………………

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

8. **पाठ के संदर्भ में 'भूसे' और 'प्रकाश' से क्या अभिप्राय है? इन शब्दों को स्पष्ट करते हुए कक्षा में चर्चा करें।**

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

10. **"शिक्षा वह माध्यम है, जो इंसान को जीवन भर प्रकाशित करता है।" आप शिक्षा को अपने जीवन में किस प्रकार अनुसरित करना चाहेंगे?**

अध्याय 7

भक्ति के पद
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

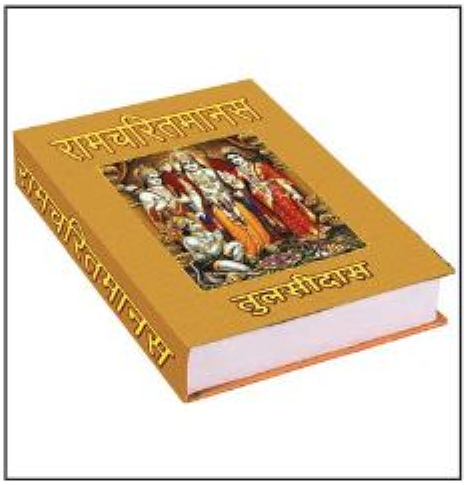

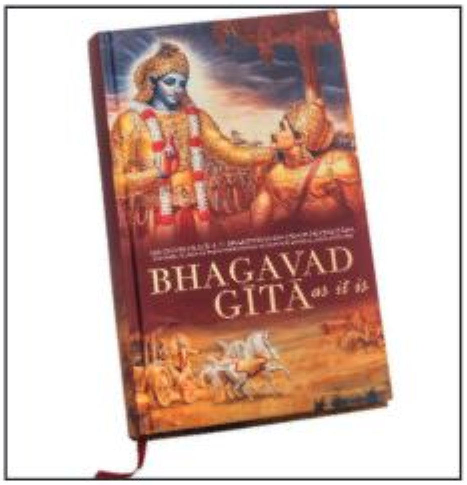

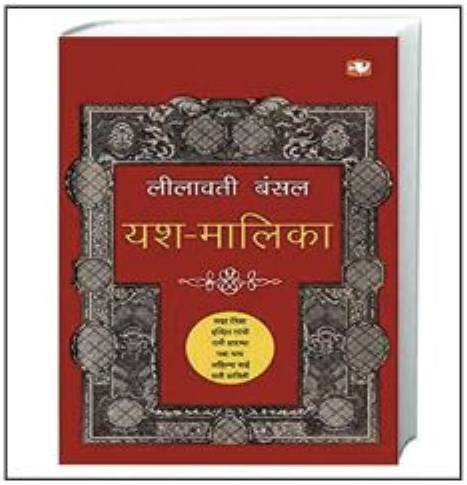

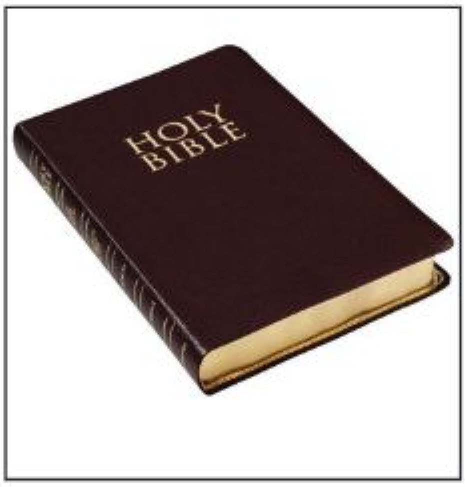

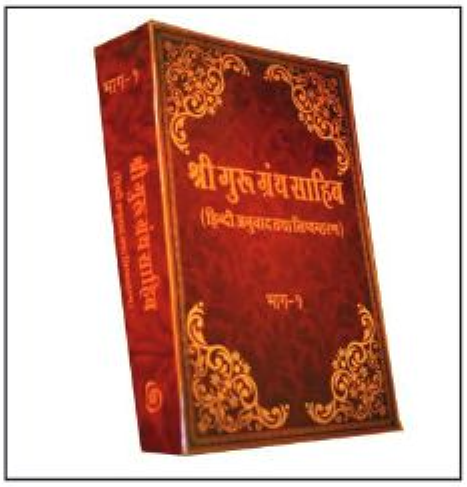

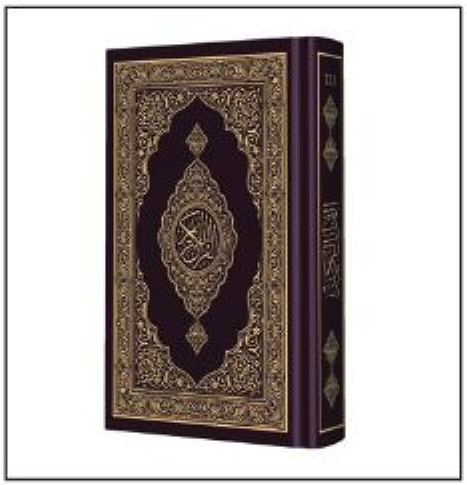

- उपरोक्त चित्र में दिए गए ग्रंथों के बारे में पता कीजिए कि ये किस धर्म से संबंध रखती हैं एवं इन कृतियाँ को किसके द्वारा रचा गया है।

कविता का मूल तत्व

वेद शास्त्रों के अध्ययन में जीवन का मूल भाव छिपा होता है, जो मानव को आत्यात्मिक जीवन की ओर मार्गदर्शित करता है।

कवि परिचय

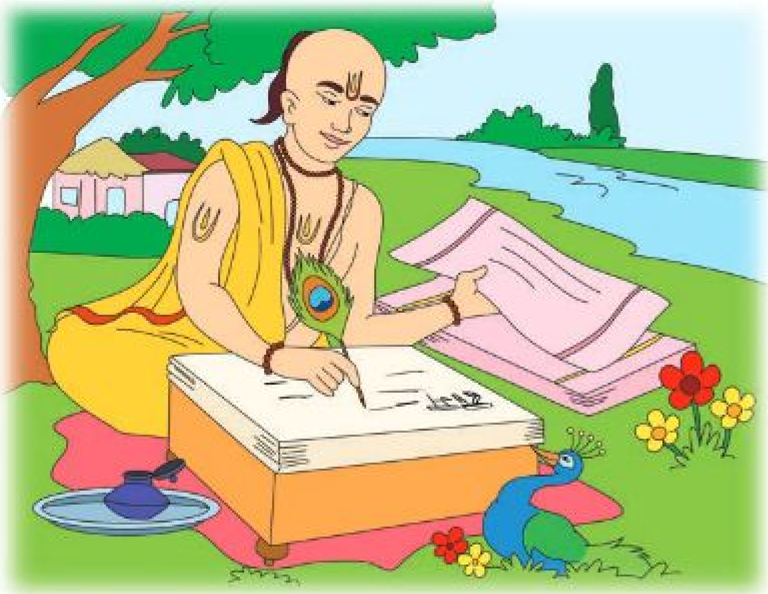

जन्म : सन् 1532

मृत्यु : सन् 1623

पिता : आत्माराम

माता : हुलसी देवी

1. तुलसीदास के दोहे

तुलसीदास जी का बचपन बड़ी कठिनाईयों में बीता। वे घर-घर भटकते रहे। बाद में वे वैरागी बने। वे राम के अनन्य भक्त थे। शास्त्रों का, वेद-वेदांतों का उन्होंने अध्ययन किया। उनके द्‌वारा रचित 'रामचरितमानस' नामक ग्रंथ बहुत प्रसिद्‌ध हुआ। उत्तर भारत के घर-घर में तुलसी रामायण (रामचरितमानस) अब भी बड़े चाव से पढ़ा जाता है।

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि-फलहि परहेत।
इतते वे पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

गोधन-गजधन बाजि धन, और रतन धन खान।
जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

तुलसी साथी विपत्ति के, विद्‌या, विनय, विवेक।
साहस, सुकृत, सुसत्य-व्रत, राम भरोसे एक।।

बिना तेज के पुरुष की, अवशि अवज्ञा होय।
आगि बुझे ज्यों राख की, आप छुवे सब कोय।।

सूर समर करनी करहिं, कहिं न जनावहिं आपु।
विद्‌यमान रन पाई रिपु, कायर कथहिं प्रतापु।।

दया धरम का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब तक घट में प्राण।।

कवि परिचय

जन्म : सन् 1398

मृत्यु : सन् 1518

पिता : नीरू

माता : नीमा

2. कबीरदास के दोहे

रचनाएँ - साखी, पदावली, रमैनी, बीजक आदि। उन्होंने अपने दोहों में अधिक उपदेशात्मक शैली अपनाई। बाह्याडंबर के वे कट्टर विरोधी थे। भगवत् प्रेम की पराकाष्ठा सबसे अधिक दिखाई दी है। कबीर के काव्य में हृदय-पक्ष ज्यादा है। भाव, रस, प्रेम और भक्ति की दृष्टि से उनके पद अनुपम हैं।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजों आपना, मुझ सा बुरा न कोय।।

तीन लोक नौ खंड में, गुरु ते बड़ा न कोय।
कर्ता करै न करि सकै, गुरु करै सो होय।।

मथुरा जावै द्वारिका, भावै जो जगन्नाथ।
साथ संगति हरिभजन बिनु, कछु न आवै हाथ।।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होए।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

मीरा बाई - परिचय

जन्म : सन् 1498 मृत्यु : सन् 1547

पिता : राजा रतन सिंह माता : वीर कुमारी

3. मीरा बाई - परिचय

ये कृष्णभक्त थीं। मीरा पदावली में इनके पद संकलित हैं। उनके पद अत्यंत लोकप्रिय हैं। उनके पद राजस्थानी और ब्रजभाषा में मिलते हैं। वह राव दादूजी की पौत्री थीं। उदयपुर के राजघराने में उनका विवाह हुआ। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही उनके पति की मृत्यु हो गई।

जौहर की गत जौहरी जाणै क्या जाण्यौ जण खोय
मीरां री प्रभु पीर मिटांगा जो वैद साँवरो होय।।

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो,
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो।।
जन्म-जन्म की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो।
खरचै न खूटै चोर न लूटे दिन-दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरष हरष जस गायो।।

शब्दार्थ

सुअंब तरु	= आम का पेड़	परहेत	= दूसरों के लिए	सुकृत	= पुण्य
काके	= किसके	कर्ता	= ईश्वर	आवै हाथ	= हाथ आएगा
जौहर	= गहना	सूल	= शूल	सावेण लागी	= सोने लगी

उच्चारण करें

सुकृत गोधन द्वारिका हरिभजन भेज्या पीवण

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को उपर्युक्त दोहों के भावार्थ को बताएँ तथा उनसे निकलने वाले निष्कर्ष को भी समझाएँ।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संतोष पाने के लिए तुलसीदास जी के मत में क्या उपाय है?
(ख) संत को तुलसीदास जी ने किसके समान बताया है?
(ग) कबीरदास के मतानुसार बुराई किसके अंदर छुपी हुई है?
(घ) तीनों लोकों में सबसे बढ़कर कौन है?
(ङ) श्याम की भक्ति में कौन लीन हो गई थी?

जरा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) आम का पेड़ किसके लिए फूलता है?

....

(ख) प्रस्तुत पाठ में विपत्ति का साथी किसे बताया गया है?

....

(ग) संतोष रूपी धन के आगे कौन-कौन से धन धूल के समान हैं?

....

(घ) कबीरदास के मत में हरिभजन का माहात्म्य कैसा है?

....

(ङ) किसकी संगति के बिना जगन्नाथ का सौभाग्य नहीं मिलेगा?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि-फलहि ....।
(ख) गोधन-गजधन बाजि धन, और .... धन खान।
(ग) तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या, विनय, ...।

(घ) .... गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

(ङ) तीन लोक नौ खंड में, ... ते बड़ा न कोय।

(च) साथी संगति .... बिनु, कछु न आवै हाथ।

4. दिए गए शब्दों को उचित रूप से मिलान कीजिए।

(क) तुलसीदास	सन् 1398
(ख) कबीर दास	सन् 1547
(ग) मीरा बाई	राजा
(घ) रतन सिंह	कबीर दास के पिता
(ङ) नीरु	आत्माराम

5. दिए गए वाक्यों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) विपत्ति के साथी के रूप में सबसे ज़्यादा किसकी आवश्यकता है?

☐ विनय ☐ सुकृत ☐ राम पर भरोसा ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) कबीर के अनुसार किसको बुरा कहा है?

☐ दूसरों को ☐ स्वयं को ☐ बड़े लोगों को ☐ छोटे लोगों को

(ग) तीनों लोकों से बढ़कर कबीर दास ने किसे बताया है?

☐ पिता को ☐ माता को ☐ गुरु को ☐ दादा जी को

(घ) मीरा के लिए वैध कौन है?

☐ कृष्ण जी ☐ राणा जी ☐ मंत्री ☐ इनमें से कोई नहीं

(ङ) मीरा ने कौन सा रत्न धन पाया?

☐ राम भक्ति ☐ कृष्ण भक्ति ☐ गुरु भक्ति ☐ पति भक्ति

6. दिए गए दोहों का भावार्थ लिखिए।

(क) गोधन-गजधन बाजि धन, और रतन धन खान।

जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

....

....

....

....

(ख) बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजो आपना, मुझ सा बुरा कोय।।

....

....

....

....

(ग) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो।।

....

....

....

....

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. प्रस्तुत पाठ में विभिन्न कवियों ने अपने-अपने भावों को व्यक्त किया है। इन कवियों के विचारों में आपको क्या समानता देखने को मिलती है? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

8. दिए गए शब्दों के हिंदी अर्थ लिखिए।

(क) जौहर	–	(ख) हरष	– ....
(ग) जौहरी	–	(घ) वैध	– ....
(ङ) देखन	–	(च) आपना	– ....
(छ) कोय	–	(ज) करे	– ....

9. दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

(क) निद्रा	–	(ख) दंत	– ....
(ग) नृत्य	–	(घ) कोकिल	– ....
(ङ) कुंभकार	–	(च) ज्येष्ठ	– ....
(छ) भ्रमर	–	(ज) आम्र	– ....

10. दिए गए मुहावरों के उदाहरण स्वरूप अर्थ लिखिए।

(क) आँख खुलना - ....

(ख) कान भरना - ....

(ग) उन्नीस-बीस का अंतर - ....

(घ) भंडाफोड होना - ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. मीरा बाई ने अपने संपूर्ण जीवन में विभिन्न कठिनाइयों का सामना किया। उनका जीवन परिचय अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. दी गई रचनाओं के रचयिताओं के नाम को ढूँढकर रिक्त स्थानों में लिखिए।

रचयिता	रचनाएँ
....	हितोपदेश
....	साहित्य लहरी
....	कवितावली
....	गीत गोविंद
....	पद्मावत
....	श्रृंगार सतसई

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. प्रस्तुत पाठ में विभिन्न संतों के द्वारा भक्ति के दोहों को बताया गया है, जिन्होंने प्रभु भक्ति को ही अपने जीवन का मूल्य बना लिया था। जिसमें मूर्ति पूजा न करके अंर्तमन में ईश्वर की खोज़ कर उन्हें पाया। आप अपने जीवन में किस प्रकार ईश्वरीय भक्ति को पाना चाहेंगे?

अध्याय 8

कान्हा अभ्यारण्य से पत्र
(पत्र)

अध्ययन से पूर्व

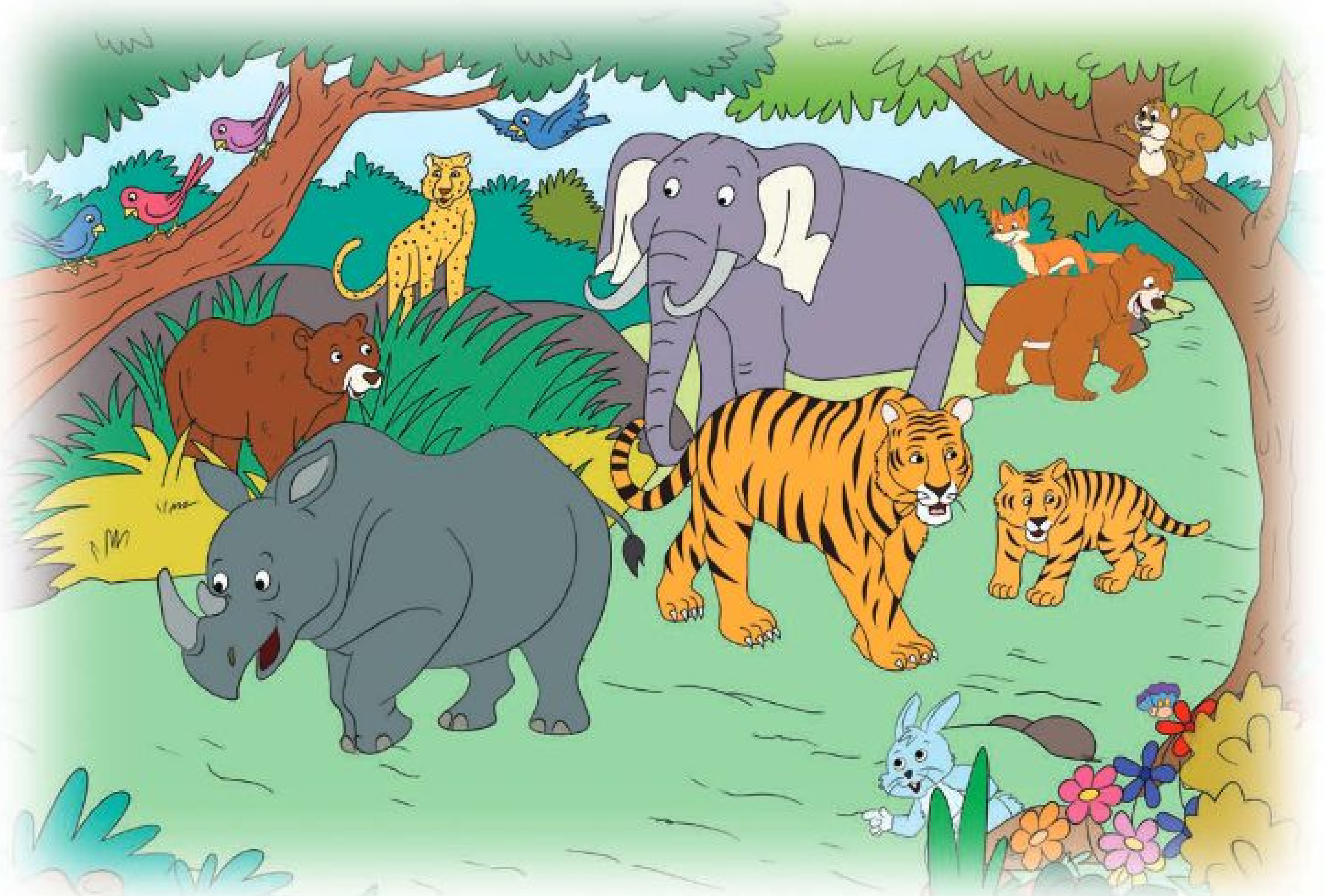

- कक्षा में उपरोक्त चित्र को दिखाकर शिक्षक/शिक्षिका बच्चों से अभ्यारण्य के संबंध में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को पूछें और उनका ज्ञानवर्द्धन करें।
- शिक्षक/शिक्षिका द्वारा कक्षा में बच्चों को भारत के विभिन्न अभ्यारण्य की स्थिति को भारतीय मनचित्र के द्वारा समझाया जाए ताकि बच्चों को मानचित्र के ज्ञान के साथ-साथ राज्यों में स्थित विभिन्न अभ्यारण्य के संबंध में पता चल सकें।

निबंध का मूल तत्व

इस पत्र के माध्यम से अभ्यारण्य के संबंध में विस्तारपूर्वक बताया गया है। वन्यप्राणियों की एक अलग दुनिया होती है जिसमें वह सुखमय जीवन बिताते है।

25, जवाहर मार्ग,

मंडला।

दिनांक 28 जून, 2022

प्रिय सुलक्षणा,

शुभाशीष!

हम आज ही 'कान्हा अभयारण्य' देखकर लौटे हैं। वहाँ के मनोरम दृश्य अभी तक मेरी आँखों के सामने घूम रहे हैं।

प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के आश्रमों में वन्यजीव निर्भीक होकर विचरण करते थे। उन्हें न कोई सताता था और न कोई मारता था। कान्हा में भी कुछ-कुछ ऐसा ही दृश्य दिखाई देता है। यहाँ विभिन्न वन्य पशु-पक्षी निडर होकर अपना जीवन सहज रूप में बिताते हैं।

अब तुम जानना चाहोगी कि यह कान्हा आखिर है कहाँ? जबलपुर तक तो तुम आ ही चुकी हो। वहाँ से कान्हा केवल 160 किलोमीटर ही दूर है। जबलपुर से मंडला होती हुई चिरई डोंगरी तक बढ़िया पक्की सड़क है। वहाँ से लगभग एक घंटे में कान्हा पहुँचा जा सकता है।

कान्हा की वनस्थली रंग-बिरंगे फूलों से सजी तथा घने वृक्षों से भरी हुई है। इसने मेरा मन मोह लिया है। यहाँ सागवान, साल, तेंदू, कैर, पलाश आदि के अनगिनत पेड़ हैं। यहाँ पूरा साल हरियाली बनी रहती है।

यह पूरी वनस्थली 950 वर्ग किलोमीटर में फैली हुई है। इसे काँटेदार तारों से घेरा गया है।

यहाँ ठहरने का बहुत अच्छा प्रबंध है। प्रवेश-द्वार ही एक डाक-बंगला है। कान्हा में प्रवेश के लिए हमने मंडला के वन-विभाग से पास बनवा लिए थे।

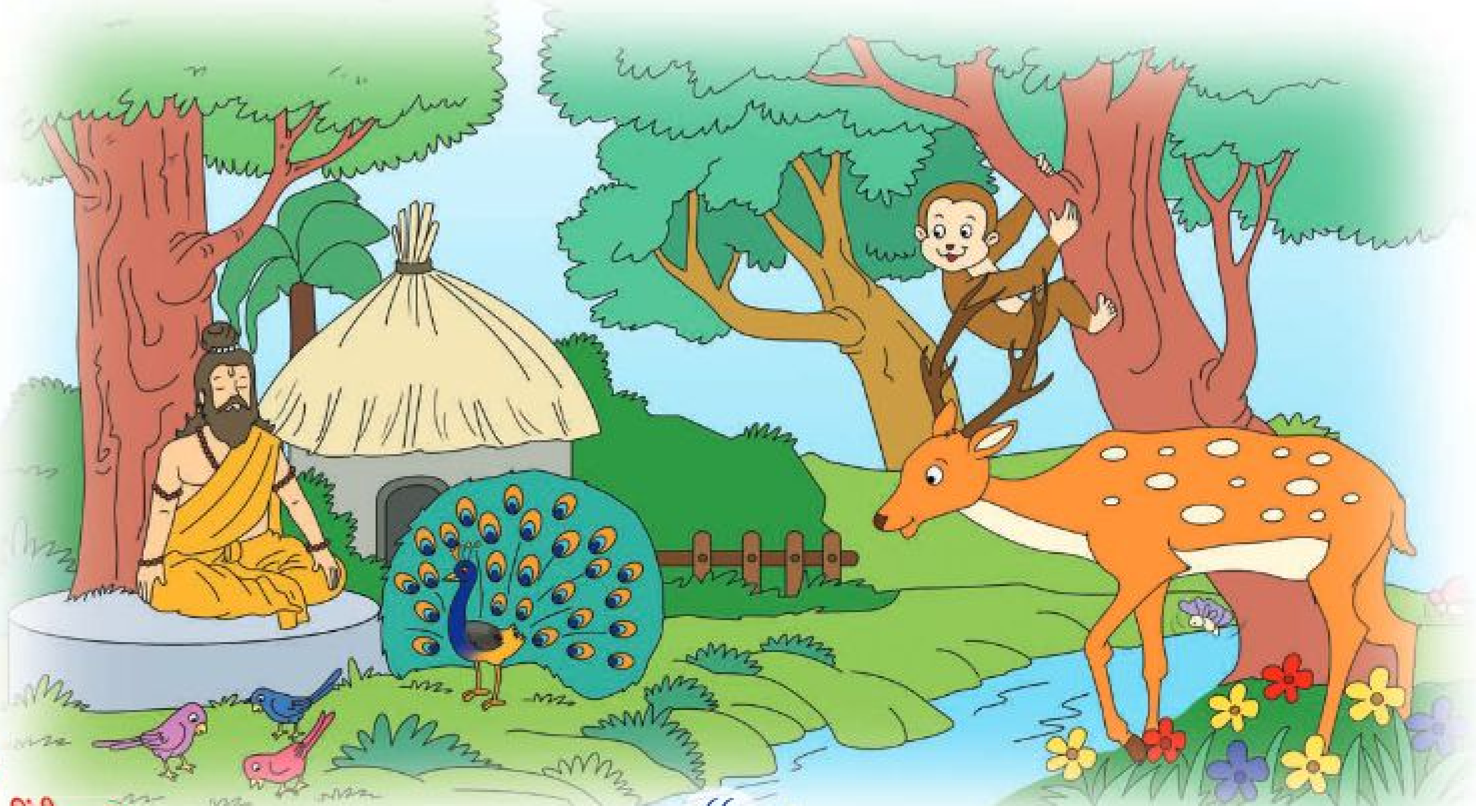

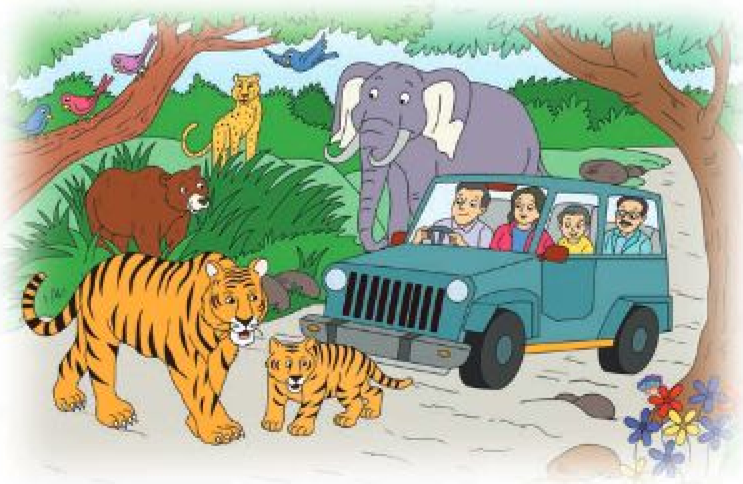

यहाँ वन्यजीवों की शोभा देखते बनती है। कहीं हवा की गति से भागने वाले चंचल हिरणों का झुंड दिखाई दे जाता है, तो कहीं-कहीं बारहसिंगा दिखाई देते हैं। छोटे-छोटे सींगोंवाली नीलगाय देखकर मन प्रसन्न हो गया। तालाब की ओर रीछ भी दिखाई दिए।

पहाड़ी इलाके की ओर बढ़ने पर साँभर मिल गए। विशाल शरीर वाले मोटे-तगड़े भैंसे भी यहाँ देखे। बगीचे में चीतल भी देखने को मिले। झुंडों में ये वृक्षों के नीचे आराम करते मिल जाते हैं।

और फिर देखा— वनराज सिंह। इसे यहाँ खुले रूप में रखा जाता है। हम लोगों ने उसे एक जीप में बैठकर देखा। उसने एक दहाड़ मारी तो सारा जंगल काँप उठा।

यहाँ हमने हाथी की सवारी का आनंद भी लिया। जब हम हाथी पर थे तब एक बाघ सामने से तेज़ी से निकल गया। उसमें गज़ब की फुर्ती थी ।

यहाँ के पक्षियों की गिनती करना असंभव है। अपने पंख फैलाकर नाचता मोर देखकर मेरा मन भी नाच उठा। हमें बताया गया कि शीतकाल में इन पक्षियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। उन दिनों दूर-दूर से पक्षी यहाँ आते हैं।

यहाँ का मौसम बहुत सुहावना रहता है। यहाँ की व्यवस्था भी बहुत अच्छी है।
अगले वर्ष तुम भी कान्हा देखने ज़रूर जाना।

तुम्हारा बड़ा भैया
अमृतांशु।

शब्दार्थ

मनोरम	= मन को रमने वाला, अति सुंदर	निर्भिक	= बिना डरे, निडर
विचरण	= घूमना-फिरना	दृश्य	= देखने योग्य, नज़ारा
सहज	= सामान्य, प्राकृतिक, आसान	वनस्थली	= वन-क्षेत्र

उच्चारण करें

चिरई डोंगरी   सींगोंवाली   बारहसिंगा   अभ्यारण्य

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को अभ्यारण्य से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों को बताएँ साथ ही वन्यजीव सुरक्षा से संबंधित प्रमुख प्रावधानों पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कान्हा अभ्यारण्य कहाँ स्थित है?

(ख) यह पत्र किसने, किसको लिखा?

(ग) अभ्यारण्य में कौन अपना जीवन सहज रूप में बिताते है?

(घ) लेखक ने समूचे वनस्थली को कितने क्षेत्र में फैला बताया है?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कान्हा अभ्यारण्य की अवस्थिति को विस्तारपूर्वक लिखिए।

....

(ख) लेखक ने अभ्यारण्य में ठहरने हेतु किस प्रकार का प्रबंध किया था?

....

(ग) कान्हा अभ्यारण्य में कौन-कौन से जानवर देखने को मिले?

....

(घ) कान्हा वनस्थली में सजे पेड़-पौधों के नाम लिखिए।

....

3. सही कथन पर (✓) का और गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के आश्रम में वन्यजीव निर्भीक होकर विचरण करते थे। ☐

(ख) जबलपुर से कान्हा 260 किलोमीटर दूर है। ☐

(ग) कान्हा अभ्यारण्य को काँटेदार तारों से घेरा गया है। ☐

(घ) अगले वर्ष तुम जबलपुर ज़रूर आना। ☐

(ङ) यहाँ वन्यजीवों की शोभा देखते ही बनती है। ☐

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

4. वन्यजीव अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान में क्या अंतर है? सोच समझकर अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

5. नीचे दिए शब्दों से वाक्य निर्माण कीजिए।

(क) अभ्यारण्य – ....

(ख) जबलपुर – ....

(ग) वनस्थली – ....

(घ) मनोरम – ....

(ङ) चीतल – ....

6. नीचे दिए गए वाक्यों में विराम चिह्नों का प्रयोग कर पुनः लिखिए।

(क) रोको मत जाने दो – ....

(ख) विज्ञान वरदान या अभिशाप – ....

(ग) वाह कितना सुंदर वृक्ष है – ....

(घ) राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न भाई थे – ....

7. नीचे दिए गए वाक्यों में से अशुद्ध शब्दो पर ○ लगाइए।

(क) दिपोत्सव का आयोजना एक सुखद बात है। (ख) पिताजी भ्रमर पर हरिद्वार गए है।

(ग) यदि परिश्रम करोगे, तो उत्तीर्ण हो जाओगे। (घ) यदि परिश्रम करोगे, तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

8. **नीचे दिए गए शब्दों में छिपे उपसर्ग को अलग कर लिखिए।**

(क) आक्रमण - .... (ख) अभिलाप - ....

(ग) उत्कर्ष - .... (घ) व्याकरण - ....

(ङ) अधमरा - .... (च) लापरवाह - ....

9. **नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त समुच्चयबोधक शब्दों पर ○ लगाइए**

(क) लक्ष्य और अमन गहरे मित्र है।

(ख) तुम उत्तर दोगे या मैं दूँ।

(ग) समर मूर्ख है, परंतु उसका भाई बुद्धिमान है।

(घ) सभी जानते हैं कि हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।

(ङ) मेहनत करो अन्यथा पछताओगे।

10. **नीचे दिए मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(क) आँखें बिछाना - ....
....
....

(ख) आँच न आने देना - ....
....
....

(ग) हवाई किले बनाना - ....
....
....

(घ) हाथ-पाँव फूलना - ....
....
....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. प्रस्तुत पत्र में आए महत्वपूर्ण तथ्यों को पढ़कर आप किस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं? अपने मित्रों के साथ विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

12. आपने जिस ज़गह की यात्रा की है उस स्थान के बारे में अपने अनुभवों को साझा करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

21. भारत सरकार समय-समय पर वन्यजीवों की सुरक्षा हेतु कुछ नियम कानून बनाती रही है। आप सरकार द्वारा लाई गई नीतियों में किस प्रकार अपनी भूमिका का निर्वाहन करते हैं? बताइए।

अध्याय 9

बहुरूपिया
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

बच्चों को उनके कर्तव्यों का बोध करवाना।

एक बार एक बहुरूपिये ने साधु का रूप बनाया। सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भभूत, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी। उसके रूप में कहीं कोई कसर नहीं थी और वह एकदम संसार-त्यागी साधु ही लगता था। उसने नगर के बाहर बड़े से पेड़ के नीचे अपनी कुटी तैयार की, बगीचा लगाया और बैठकर तपस्या करने लगा। धीरे-धीरे सारे नगर में समाचार फैलने लगा कि एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा ने नगर में आकर डेरा लगाया है। लोग उनके दर्शनों को आने लगे और धीरे-धीरे चारों तरफ साधु का यश फैल गया। सारे दिन उसके यहाँ भीड़ लगी रहती। लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है। अपनी इस कीर्ति से साधु को कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता और मन-ही-मन वह अपनी सफलता पर मुस्कराता।

नगर के सबसे बड़े सेठ से जब किसी ने साधु का ज़िक्र किया तो वह अविश्वास से हँस पड़ा। बोला, "ऐसे ढोंगी जाने यहाँ कितने आते रहते हैं।" और वह अपने कारोबार में लग गया, लेकिन साधु भी कभी-कभी सोचता कि अब इस बहुरूपिया जीवन में लौटने में क्या रखा है, क्यों न इसी रूप में अपनी बाकी ज़िंदगी काटी जाए, लेकिन कभी-कभी उसका मन धिक्कारने लगता कि वह ज़िंदगी भर साधु बना रहा तो अपने असली पेशे के साथ बेईमानी करेगा। इसी सोच-विचार में उसके दिन निकलने लगे।

एक बार सेठ की पत्नी बहुत बीमार हो गई। दुनिया भर के इलाज़ कराए, अच्छे-से-अच्छे वैद्य डॉक्टर बुलाए गए, लेकिन सेठानी की तबीयत ठीक नहीं हुई। उसे लगता था कि वह अब नहीं बचेगी। मित्रों और शुभचिंतकों ने सलाह दी कि एक बार उस साधु को दिखा देने में क्या हानि है। हारकर सेठ तैयार हो गया। साधु ने जब दूर से सेठ को आते देखा तो बहुत ही प्रसन्न हुआ। नगर का सबसे बड़ा करोड़पति उसके यहाँ आ रहा था। आगे-आगे सेठ और उसके पीछे डोली में बीमार सेठानी थी। उसने जाकर साधु के चरण पकड़ लिए, "महाराज, जैसे भी हो सेठानी को जीवन-दान दीजिए। यह मेरे घर की लक्ष्मी है। इसी के कारण यह करोड़ों की संपत्ति आई है। जिस दिन से इसने मेरे यहाँ पाँव रखा है, मैंने जिस काम में हाथ लगाया, उसमें लाभ ही हुआ है। अगर इसे कुछ हो गया तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा।"

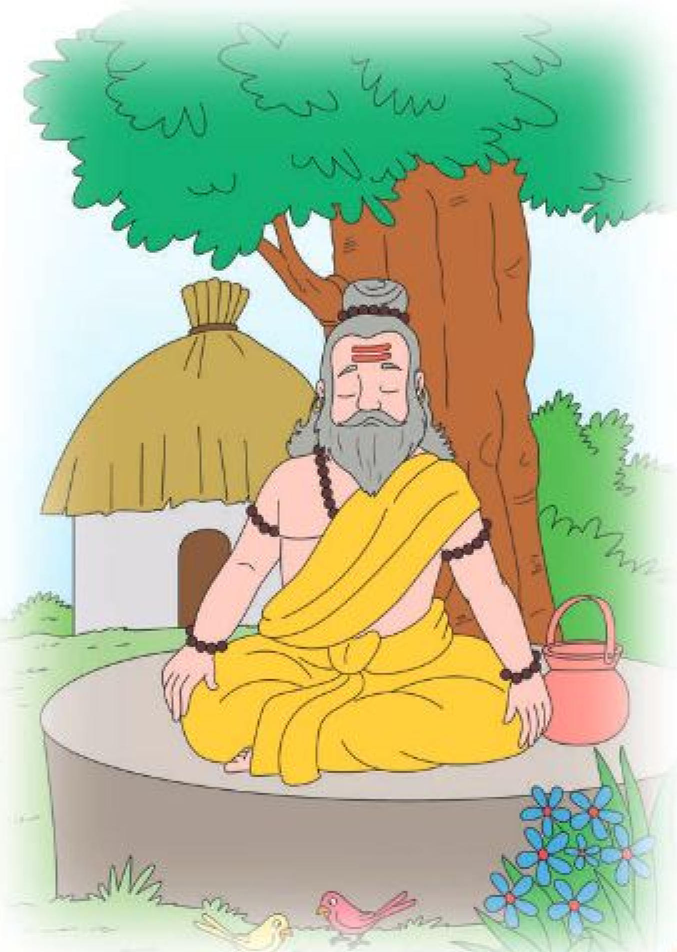

साधु ने गंभीर चेहरा बनाकर डोली का परदा उठाया। सेठानी बेहोश पड़ी थी। "भगवान ने चाहा तो सेठानी सात दिन में ठीक हो जाएँगी।" उसने कहा और धूनी की चुटकी-भर राख उसके ऊपर डाल दी। फिर रोज़ आने को कहकर अपनी आँखें मूँदकर समाधि में लग गया।

सेठानी रोज़ आने लगी और संयोग से धीरे-धीरे उसकी तबियत सुधरने लगी। सात-आठ दिनों में लगने लगा कि उसकी बीमारी अब समाप्त होने लगी है। सेठ को साधु पर अटूट विश्वास हो गया और वह रोज़ उसके पास आने

लगा। सेठानी ठीक हो गई, लेकिन सेठ रोज़ आता रहा।

साधु उसे रोज़ यह उपदेश दिया करता कि यह संसार माया है। धन का लोभ आदमी को आदमी नहीं रहने देता, जितना धन बढ़ता है लोभ भी उतना ही बढ़ता जाता है। सच्चा सुख धन का त्याग करने में है, इस माया-मोह से उठकर भगवान के चरणों में ध्यान लगाने में है। सोना तो मिट्टी है और मिट्टी का मोह पालकर आज तक किसी ने शांति नहीं पाई। धीरे-धीरे साधु के उपदेशों का प्रभाव सेठ पर पड़ने लगा।

एक दिन साधु ने देखा कि घोड़ों और ऊँटों, बैलगाड़ियों का झुंड उसकी कुटी की तरफ चला आ रहा है। मन में संदेह हुआ कि कहीं लोगों को उसकी असलियत का पता तो नही चल गया वो वही सेठ था, जिसकी पत्नी को उसने ठीक किया था। सेठ पास आया। उसने साधु को प्रणाम किया-गाड़ियों, घोड़ों, ऊँटों से सोने-चाँदी के गहनों, मुहरों और हीरे-जवाहरात से भरे कलसे उतारे गए। देखते-देखते कुटी के सामने मुहरों और बहुमूल्य रत्नों का ढेर लग गया। सेठ ने साधु के चरण पकड़कर कहा, "महाराज, आपके उपदेशों से मुझे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया है और इस संसार से मेरा मन फिर गया है। झूठ-कपट से मैंने जो धन कमाया है, वह सब मैं आपके चरणों में रख रहा हूँ। आप इसका जो भी चाहें करें–गरीबों में बाँट दें या मंदिर बनवा दें। मुझे अपना शिष्य बना लें।"

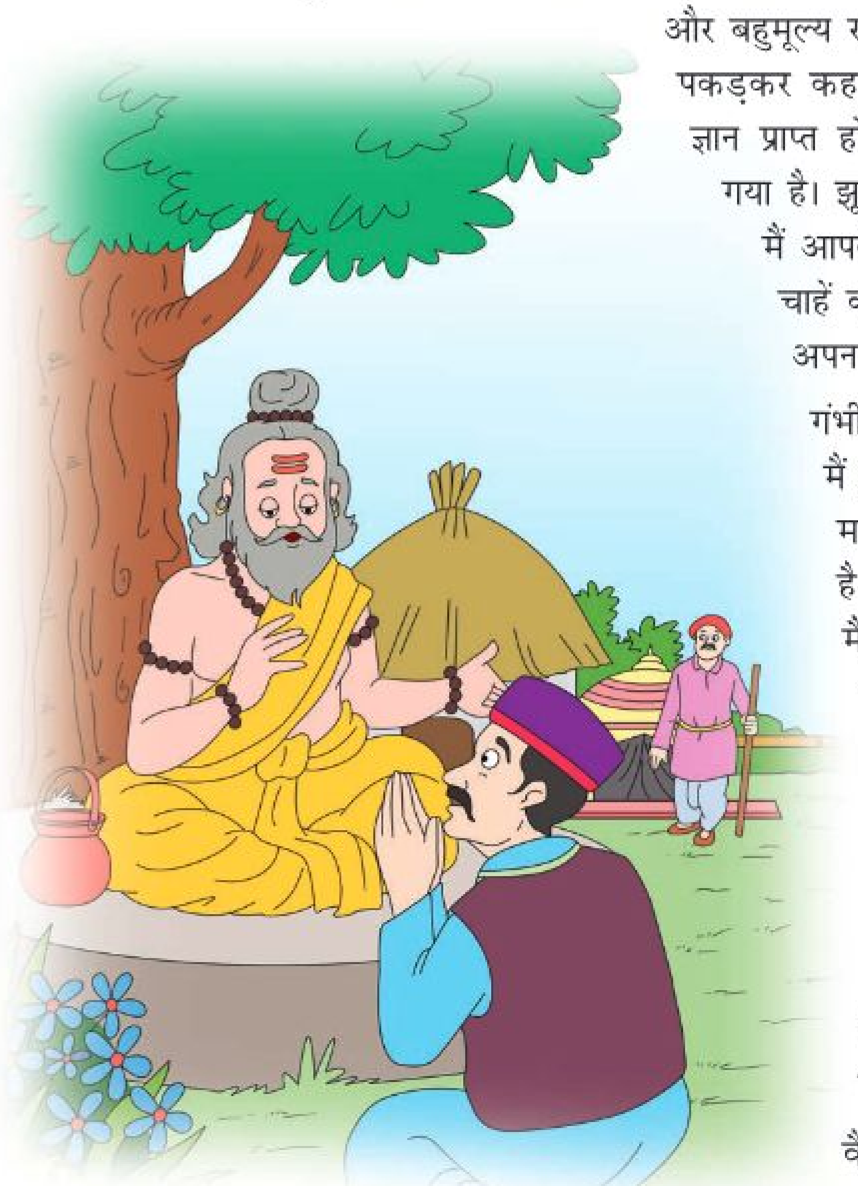

गंभीर होकर साधु ने उत्तर दिया, "जिस धन को मैं तुझे त्यागने का उपदेश देता रहा हूँ, तू उसकी माया में मुझे क्यों फँसाता है? जो तेरे लिए मिट्टी है, वह मेरे लिए तो और भी पहले मिट्टी है। मैं इसे हाथ नहीं लगा सकता।" और सचमुच उसने धन नहीं लिया। समझा-बुझाकर सेठ को लौटा दिया। महात्मा की इस महानता से सेठ की आँखों में आँसू आ गए।

अगले दिन जब सेठ आया तो उसने देखा कि साधु का कहीं पता नहीं है। इधर-उधर खोजा, कहीं भी कोई नहीं था। इतने में ही किसी ने आकर उसके चरण पकड़ लिए, "सेठ, मेरा इनाम दें।"

कैसा इनाम? तू कौन है? सेठ ने आश्चर्य से उस व्यक्ति को देखकर पूछा।

"कसूर माफ़ करना सेठ जी, मैं वही कल वाला महात्मा हूँ। मैं साधु नहीं हूँ, आपका सेवक बहुरूपिया हूँ। जब आप जैसे चतुर आदमी को मैंने धोखा दे दिया तो मुझे अपनी कला का बहुत बड़ा इनाम मिलना चाहिए।"

अपराधी के भाव से बहुरूपिया सिर झुकाए घुटनों के बल बैठा था।

सेठ आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। फिर सँभलकर बोला, "इनाम तो मैं तुझे दूँगा। सचमुच तूने अपने काम में कमाल कर दिया लेकिन यह बात बता। कल जब मैं अपनी सारी संपत्ति लेकर तेरे पास आया था, तो तूने उसे स्वीकार क्यों नहीं किया? अगर तू उसे ले लेता तो आज तू सेठ होता।"

बहुरूपिया नम्रता से बोला, "सेठ जी, यह बात मेरे मन में भी आई थी। फिर मैंने सोचा एक साधु ऐसा कार्य करेगा तो लोगों का साधुओं से विश्वास उठ जाएगा। इसलिए मैं अपने असली रूप में आकर आप से इनाम माँग रहा हूँ।"

"और मेरी सेठानी की बीमारी?" सेठ ने पूछा।

"उसमें भी मेरा कुछ चमत्कार नहीं है। वह तो आपका और सेठानी का विश्वास और संयोग था।"

सेठ की समझ नहीं आ रहा था कि कैसा यह बहुरूपिया है जो करोड़ों की संपत्ति को छोड़कर दो-चार अशर्फियों के इनाम पर इतना प्रसन्न और संतुष्ट है।

शब्दार्थ

ढोंगी	= पाखंडी	कुटी	= झोपड़ी
संपत्ति	= दौलत	कीर्ति	= यश
माया	= धन	जटिलता	= कठिनाई
आश्चर्य	= हैरानी		

उच्चारण करें

उपदेश   चमत्कार   बहुमूल्य   असलियत   संभलकर
नम्रता   अशर्फियों

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बहुरूपिया कला के विषय में विस्तार से जानकारी प्रदान करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए — Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) बहुरूपियए का क्या अर्थ है?

(ख) सेठ बहुरूपिए के पास किसको लेकर गया?

(ग) बहुरूपिए के वेश में कौन था?

(घ) सेठ ने बहुरूपिए को क्या देना चाहा?

ज़रा लिखिए — Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बहुरूकपए ने साधु का वेश किस उद्देश्य से धारण कर रखा था?

....

(ख) बहुरूपिए ने सेठ को क्या उपदेश दिया?

....

(ग) बहुरूपिए की सच्चाई कैसे सामने आई?

....

(घ) बहुरूपिए ने सेठ की दौलत क्यों ठुकरा दी?

....

3. सही शब्द भरकर रिक्त स्थान भरिए।

विश्वास	साधु	पत्नी	धन

(क) बहुरूपिए ने .... का वेश धारण किया।

(ख) सेठ ने साधु को .... देना चाहा।

(ग) लोगों का साधुओं से .... उठ जाएगा।

(घ) एक बार सेठ .... के साथ साधु के पास पहुँचा।

4. सही मिलान कीजिए।

(क) बहुरूपिया	पत्नी
(ख) बीमार	अशर्फियाँ
(ग) ईनाम	नौकर
(घ) विश्वास	साधु

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. हम सबके भीतर भी कहीं न कहीं कोई बहुरूपिया छुपा बैठा है। वह कौन हो सकता है? कक्षा में चर्चा करते हुए उसके विषय में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

6. बहुरूपिए कौन-कौन से वेश धारण कर सकते हैं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए।

(क) साधु - .... (ख) धोबी - ....

(ग) पुजारी - .... (घ) सेठ - ....

8. दिए गए शब्दों का वचन बदलिए।

(क) कुटी - .... (ख) नगर - ....

(ग) डोली - .... (घ) आँख - ....

9. दिए गए शब्दों विलोम लिखिए।

(क) अमीर - .... (ख) शिष्य - ....

(ग) कीर्ति - .... (घ) प्रसन्न - ....

10. दिए गए वाक्यों में कारक विभक्ति को चुनकर रेखांकित कीजिए।

(क) साधू ने सेठ को उपदेश दिया।

(ख) सेठ साधु के पास पत्नी को लेकर पहुँचा।

(ग) पत्नी की बीमारी ठीक होने लगी।

(घ) सेठ और साधु पर आधारित कहानी थी।

11. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) संपत्ति – ....

(ख) तपस्या – ....

(ग) महात्मा – ....

(घ) पुरस्कार – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

12. साधु और सेठ के मध्य हुए काल्पनिक संवाद को लिखिए।

साधु : ....

सेठ : ....

साधु : ....

सेठ : ....

साधु : ....

सेठ : ....

साधु : ....

13. 'कहानी का सार' अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

14. 'कर्तव्य परायणता' हमारे जीवन में पथ प्रदर्शक बनकर सदैव हमारे साथ रहती है। आपके किन कर्तव्यों ने आपको जीवन जीने की कला सिखाई है?

अध्याय 10

हिरोशिमा की पीड़ा
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

हिरोशिमा-नागासाकी पर हुए परमाणु हमले ने न सिर्फ़ जापान बल्कि पूरे विश्व को परमाणु शक्ति के दुष्परिणाम दिखाए।

किसी रात को
मेरी नींद चानक उचट जाती है
आँख खुल जाती है
मैं सोचने लगता हूँ कि
जिन वैज्ञानिकों ने अणु अस्त्रों का
आविष्कार किया था
वे हिरोशिमा-नागासाकी के भीषण
नरसंहार के समाचार सुनकर
रात को कैसे सो पाऐंगे?
क्या उन्हें एक क्षण के लिए सही
ये अनुभूति नहीं हुई कि
उनके हाथों जो कुछ हुआ
अच्छा नहीं हुआ!
यदि हुई, तो वक़्त उन्हें कटघरे में खड़ा
नहीं करेगा।
किन्तु यदि नहीं हुई तो इतिहास उन्हें, कभी
माफ़ नहीं करेगा।

—अटल बिहारी वाजपेयी

शब्दार्थ

उचट	= खुल जाना	अस्त्रों	= बाण, तीर
भीषण	= भयंकर	क्षण	= पल
अनुभूति	= जानने की इच्छा	इतिहास	= बीता हुआ काल

उच्चारण करें

कटघरे　　वैज्ञानिकों　　अणु　　अविष्कार　　हिरोशिमा　　नर-संहार

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका कविता के माध्यम से बच्चों को जापान के दोनों राज्य हिरोशिमा व नागासाकी से परिचित करवाएं।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) अचानक किसकी नींद उचट जाती है?

(ख) कौन नर-संहार का समाचार सुनकर नहीं सोए होंगे?

(ग) इतिहास किसको माफ नहीं करेगा?

(घ) प्रस्तुत घटना किस देश में हुई?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) परमाणु अस्त्रों का प्रयोग हमारे लिए कितना उचित है?

....

(ख) परमाणु बम बनाने के क्या दुष्परिणाम सामने आए?

....

(ग) प्रस्तुत कविता में किस दुखद घटना ने इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी?

....

(घ) कवि वैज्ञानिकों से क्या पूछना चाहता है और क्यों?

....

3. उचित उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) हिरोशिमा-नागासाकी पर किन अस्त्रों का प्रयोग हुआ?

☐ गोलेबाज़ी ☐ तोप ☐ तीर-कमान ☐ परमाणु

(ख) हिरोशिमा-नागासाकी की घटना का ज़िम्मेदार कवि ने किसको बताया है?

☐ समाचार को ☐ वैज्ञानिकों को ☐ लोगों को ☐ किसी को नहीं

(ग) परमाणु बम के कारण जापान में क्या हुआ?

☐ उत्सव ☐ विजयघोष ☐ नर-संहार ☐ उल्लास

(घ) वैज्ञानिकों ने हिरोशिमा-नागासाकी के लिए किसका अविष्कार किया?

☐ अनुभूति का ☐ परमाणु बम का ☐ नींद का ☐ सभी का

4. सही मिलान कीजिए।

(क) अस्त्र	मानवता
(ख) प्रलय	जापान
(ग) इतिहास	परमाणु
(घ) नर-संहार	अनुभूति

5. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) आविष्कार - ....

(ख) नींद - ....

(ग) भीषण - ....

(घ) समाचार - ....

6. 'यदि प्रलय हुई तो वक़्त उन्हें
कटघरे में खड़ा नहीं करेगा
किंतु यदि नहीं हुई तो इतिहास
उन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा।'

उपरोक्त 'पद्य' का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

7. युद्ध क्यों होते हैं? युद्ध करना कितना उचित है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? यदि हाँ, तो क्यों? सोचकर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

8. परमाणु बम का प्रयोग होने के बाद जापान में नर-संहार हुआ। आपको क्या लगता है कि उन वैज्ञानिकों को अपने अविष्कार पर गर्व हुआ होगा या अफसोस? आपस में चर्चा कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

9. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग व प्रत्यय अलग कीजिए।

शब्द		उपसर्ग	प्रत्यय
(क) अविष्कार	–	....	....
(ख) विदेशी	–	....	....
(ग) इकलौता	–	....	....
(घ) प्रायोगिक	–	....	....

10. दिए गए वाक्यों में काल का रूप बताइए।

(क) हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु हमला हुआ। ....

(ख) परमाणु हमले का प्रभाव आज भी दिखता है। ....

(ग) जापान के दो शहर पूरी तरह तहस-नहस हो चुके थे। ....

(घ) जापान आज भी उन्नति के शिखर पर अपना परचम लहरा रहा है। ....

11. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) दाँत खट्टे करना – ....

(ख) जले पर नमक छिड़कना – ....

(ग) गरदन पर सवार होना – ....

(घ) अपने पैरों पर खड़ा होना – ....

12. नीचे दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) ऊँट के मुँह में जीरा – ....

(ख) डूबते को तिनके का सहारा – ....

(ग) हीरे की कद्र जोहरी जाने – ....

(घ) एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है – ....

13. दिए गए शब्दों का समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

समास	समास-विग्रह	समास का नाम
(क) सर्वश्रेष्ठ	....	....
(ख) मानवता	....	....
(ग) यथासंभव	....	....
(घ) शोकमग्न	....	....

14. दिए गए वाक्यांश को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) तुमने शत्रु को लोहे के चने चबाए। – ....

(ख) देश में सर्वस्व शांति व्याप्त है। – ....

(ग) माफ़ कर देना ही बड़ाई है। – ....

(घ) देश पर प्राण कुर्बान करना सैनिक का कर्तव्य है। – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

15. परमाणु हमले से जापान का विकास पूरी तरह से ख़त्म हो चुका था। परंतु आज भी जापान विकास के शिखर पर है। इसके पीछे के क्या कारण हो सकते हैं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

16. कालांतर में हो रहे युद्धों ने मानवता को शर्मसार किया है। इन युद्धों के संबंध में जानकारी एकत्रित कर उनके कारणों को जानने का प्रयास कीजिए और अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

17. नीचे कुछ देशों के नाम दिए जा रहे हैं। बूझकर बताइए कि द्वितीय विश्व युद्ध में किन देशों ने अपनी भागीदारी की? सोचकर लिखिए।

(क) अमेरिका जापान भारत इंग्लैंड रूस फ्राँस जर्मनी

चीन यूकोस्लाविया इटली मिस्र पाकिस्तान श्रीलंका

....

(ख) हिरोशिमा-नागासाकी पर जिन दो परमाणु बमों को गिराया गया उनका नाम बताइए।

....

(ग) नीचे कुछ नाम दिए जा रहे हैं सोचकर बताइए परमाणु बम से ख़तरनाक कौन सा बम हो सकता है? नाम बताइए।

नाइट्रोजन बम हाइड्रोजन बम न्यूक्लियर बम

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

18. ''मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है।'' जापान पर हमला कर अमेरिका मानवता से हार गया। आप मानवता को विजयी बनाने के लिए क्या प्रयास करना चाहेंगे?

....

....

....

....

....

अध्याय 11

मुम्बई : मायानगरी की यात्रा

(यात्रा-वृतांत)

अध्ययन से पूर्व

यात्रा-वृतांत का मूल तत्व

मुबई के दर्शनीय स्थलों के साथ-साथ ऐतिहासिक परिदृश्य की झलक से बच्चों को अवगत कराना।

आज मैं और मेरा प्रिय मित्र मुंबई की भ्रमण यात्रा पर निकले हैं। आज सुबह से ही हम दोनों उत्साहित हैं, ये देखने के लिए कि मुंबई में फिल्म और फिल्मी कलाकारों के अलावा और क्या-क्या देखने योग्य है? इसलिए हम दोनो टेक्सी गाइड के माध्यम से मुंबई के दर्शनीय स्थल और इसका इतिहास जानेंगे। टेक्सी ड्राइवर ने हमें बताया कि भारत का प्रमुख शहर मुबंई का यह नाम इस नगर की अधिष्ठात्री देवी मुंबा देवी के नाम पर पड़ा। क्योंकि मुंबा देवी का मंदिर अति प्राचीन होने के साथ-साथ स्थापत्य भी है। मुंबा देवी के अतिरिक्त ठीक उन्हीं के सामने श्रीकृष्ण जी का, दूसरी तरफ गणेश और हनुमान जी का एक नया विशाल मंदिर निर्मित हुआ है, जहाँ दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ती है, पर प्रधानता अभी भी मुंबा देवी की ही है।

टैक्सी ड्राइवर ने हमें मुंबई के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि अंग्रेज़ों को शहरों-कस्बों के नाम बिगाड़ने का बहुत शौक था। वे अपने उच्चारण की सुविधा के लिए नाम बदल देते थे। जैसे दिल्ली को उन्होंने देल्ही, कालीकट को कलकत्ता इसी तरह मुबंई, बंबे या बंबई कहना शुरू कर दिया। यह बंबई नाम हाल तक रहा परंतु महाराष्ट्र सरकार ने अंततः इसे इसका प्राचीन नाम मुंबई दिलवाया जो केंद्र सरकार की सहमति से संभव हुआ।

मुंबई आज देश के सबसे बड़े महानगरों में से एक है। क्योंकि यह वाणिज्य का बहुत बड़ा केंद्र है। यहाँ देश का सबसे बड़ा बंदरगाह है, जहाँ से बाहरी देशों से आने वाले अधिकांश पानी के जहाज़ द्वारा आयात-निर्यात का व्यापार होता है। हवाई जहाज़ों के उतरने-चढ़ने का यही सर्वाधिक सुविधाजनक और प्रिय स्थान है। सबसे बड़ी बात है कि यह भारत की फ़िल्मी राजधानी है।

चर्चगेट-रेलवे स्टेशन

अमेरिका के हॉलीवुड की तर्ज पर इसे भारत का 'बॉलीवुड' कहा जाने लगा है। यहाँ जितनी फ़िल्में बनती हैं, उतनी देश के किसी नगर में नहीं। पहले चेन्नई से इसकी प्रतियोगिता थी, पर वह अब समाप्त हो गई। अब फ़िल्मी दुनिया का यह बेताज़ बादशाह है।

होटल ताज पैलेस

फ़िल्मी नगरी होने के कारण यह शहर बहुत ही 'फैशनेबल' बन गया है। यहाँ समाज के हर दर्ज़े की उन्मुक्तता देखने को मिलती है। यहाँ की पोशाक व वेशभूषा भड़कीली और आकर्षक है। मुबंई को उसकी तड़क-भड़क (ग्लैमर) के कारण मायानगरी कहते हैं। एक नौजवान या नवयुवती मुबंई जाए तो फिर उसके लिए वहाँ

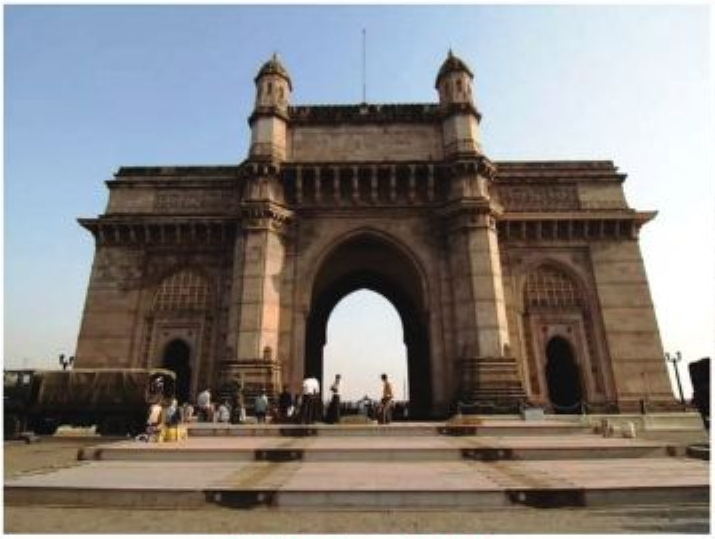

गेटवे ऑफ इंडिया

जुहू समुद्र तट(बीच)

की माया को काटकर बाहर आना कठिन हो जाता है। यहाँ न जाने कितने लोग फिल्मों में भाग्य आजमाने के लिए आते हैं। ये भूखे पेट, फुटपाथों पर सोकर भी संघर्ष करते हैं परंतु सफलता तो कम ही को मिलती है। अधिकांश वापस लौटने के बदले आधा पेट खाकर ही यहाँ जीवन काट देते हैं। कुछ बुद्धिमान लोग फिल्म के अन्य छोटे-मोटे कामों में आ जाते हैं। होटलों-रेस्तरां में वेटर और नौकर बन जाते हैं, पर होकर रहते हैं मुंबई के ही। यही है इस मायानगरी का मायावी आकर्षण।

व्यापार या व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो यह देश की धड़कन है। यहाँ का शेयर बाज़ार विश्वप्रसिद्ध है और दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा है। यहाँ शेयरों के चढ़ते-उतरते भाव देश की अर्थव्यवस्था को प्रमाणित करते रहते हैं। कितनों को अरबपति बना देते हैं तो कितनो को पाई-पाई का मोहताज़ कर दिवालिया बना देते हैं।

मुंबई भारतीय आयात-निर्यात का केंद्र है। यह भारत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह है। इसके पश्चात् ही चेन्नई या कोलकाता या विशाखापत्तनम आदि का स्थान आता है।

मुंबई शहर एक और चीज़ के लिए बहुत प्रसिद्ध है। ये है उसके कई-मंज़िलें आकाश छूते गगनाकार पपेंडेकुलर भवन, जिन्हें 'स्काई स्क्रैपर्स' कहते हैं। ऐसे भवन मुंबई में जितने हैं, उतने भारत के किसी और नगर में नहीं।

इसका एक प्रमुख कारण यह है कि मुंबई एक टापू पर बसा है। इसका क्षेत्रफल अधिक नहीं है। आबादी बढ़ती जा रही है, पर उस अनुपात में मकान नहीं बन सकते । इसी कारण मुंबई आकाश में धरती तलाशती है। जो हो, इन स्काई-स्क्रैपरों से मुबई के सौंदर्य में वृद्धि ही हुई है। उसके आसमान को आच्छादित करते ये गगनस्पर्शी महल हमारे मन को मोह लेते हैं।

मुबई आज एक शहर मात्र है, किंतु पहले यह एक विस्तृत राज्य था। अंग्रेज़ों के काल में 'बंबई प्रेसीडेंसी' के अंतर्गत भारत के पश्चिमी तट का सारा उत्तरी भाग-सिंध, मालवा और गुजरात सम्मिलित था। मुबई देश का मुख्य प्रवेश-द्वार है। प्रतीक के रूप में सागर-तीर पर एक महाद्वार भी निर्मित है, जिसे 'गेटवे ऑफ़ इंडिया' कहते हैं। मुंबई बंदरगाह 18.53 उत्तरी अक्षांश और 72.54 पूर्वी देशांतर रेखा पर अरब सागर में स्थित है। बंदरगाह की भव्यता और महत्ता अंग्रेज़ों की देन है। इसके पूर्व यह दलदलों, खाइयों और चट्टानों से पटा

था। नगर की वर्तमान भूमि, बंदरगाह तथा आस-पास के भू-भाग पर पुर्तगाली सेनापति अल्बुबर्क का अधिकार सन् 1510 से ही था। इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय का विवाह जब सन् 1661 में पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन से हुआ तो पुर्तगालियों ने दहेज के रूप में इस बंदरगाह को भी उन्हें दे दिया।

इसकी खस्ता हालत देखकर चार्ल्स द्वितीय ने इसे तत्कालीन ईस्ट इंडिया कंपनी को सन् 1668 में केवल 10 पौंड सालाना किराया पर दे दिया। इसके परिष्कृत रूप का श्रेय बंबई प्रेसीडेंसी के तत्कालीन गवर्नर जिराल्ड आंगियर को जाता है। 1669 से 1677 तक प्रायः नौ वर्षों तक उसने गवर्नर के पद को सँभाला और इसी दौरान बंदरगाह और नगर का विकास किया गया। अब यह एक अत्यंत समृद्ध नगर बन गया और सूरत, जो इससे पूर्व अंग्रेज़ों का मुख्य व्यवसाय नगर था, पीछे रह गया। अब बंबई नगर ही अंग्रेज़ व्यवसायियों का प्रमुख व्यवसाय-स्थल बन गया।

बंबई-बड़ौदा और सेंट्रल रेलवे की लाइनें सन् 1864 में बिछकर पूरी हुईं तथा उसके वर्षों बाद जब स्वेज नहर चालू हुई तो बंबई बंदरगाह का महत्व सहसा बहुत बढ़ गया। यूरोप से पूर्व की ओर जाने वाले छोटे-बड़े जलयानों के रुकने योग्य यह प्रथम बंदरगाह था। भारत से व्यापार तो पश्चिमी देशों ने इस बंदरगाह के द्वारा ही किया, सुदूर पूर्व के देशों में भी यहाँ पर रुककर कोयला-पानी लेकर यूरोपीय जलपोत जाने लगे।

मुंबई के वर्तमान रूप में आने की कहानी अभी शेष है। जैसा पहले कहा गया, बंबई प्रेसीडेंसी में महाराष्ट्र और गुजरात सम्मिलित थे और अंग्रेज़ इसे उसी रूप में छोड़कर गए। स्वतंत्रता के पश्चात् जब 1960-70 के दशक में भाषाई आधार पर राज्यों का विभाजन आरंभ हुआ तो बंबई प्रेसीडेंसी ने महाराष्ट्र और गुजरात-दो भागों में विभक्त कर दिया गया। बंबई अब केवल एक शहर रह गया। महाराष्ट्र की राजधानी के रूप में मुंबई केवल फिल्मी-नगरी ही नहीं, सूती वस्त्रों का निर्माता भी हैं। महाराष्ट्र में रुई पर्याप्त होती है, इसीलिए मुंबई की कपड़ा मिलों को फूलने-फलने का अवसर मिलता है। मुबंई को समृद्ध बनाने में पारसी व्यवसायियों का प्रमुख योगदान है। बंबई या मुंबई का स्वतंत्रता आंदोलन में भी पर्याप्त योगदान रहा है। यह कोई कम महत्त्वपूर्ण बात नहीं है कि कांग्रेस, जिसने अंततः महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश को स्वतंत्रता दिलाई, उसका प्रथम अधिवेशन सन् 1885 में बंबई में ही संपन्न हुआ। यह बात और है कि गांधी जी उस समय तक कांग्रेस से नहीं जुड़े थे।

मुंबई के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना का उल्लेख नहीं हो तो उसकी कहानी अधूरी ही रह जाएगी। सन् 1897 में यहाँ भीषण प्लेग फैला जिसकी चपेट में पूना तक आ गया। तत्कालीन अंग्रेज़ सरकार ने इससे निबटने के लिए सख्त कदम उठाए। रोगियों को तो उसने नगर से बाहर किया ही, पूर्ण स्वस्थ व्यक्तियों को भी साधारण संदेश के आधार पर ही बाहर कर दिया। स्पष्टतः अंग्रेज़ों को अपने प्राणों का भय था और छूत वाली इस बीमारी से भयभीत होकर वे ऐसे कड़े कदम उठा रहे थे। बाल गंगाधर तिलक उस समय एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और कांग्रेस नेता थे। अंग्रेज़ों की क्रूरता के विरुद्ध उन्होंने जोरदार आंदोलन चलाया, यहाँ तक कि अपनी लोकप्रिय पत्रिका केसरी में उन्होंने इसके विरुद्ध आग उगलती टिप्पणियाँ भी कीं।

अंग्रेज़ उनसे नाराज हो गए और राजद्रोह का मुकदमा चलाकर उन्हें जेल में बंद कर दिया। तिलक के इस कार्य ने राजनीतिक क्षेत्र में उनका रुतबा बहुत बढ़ा दिया।

शब्दार्थ

गगनस्पर्शी	= आकाश को छूने वाली	समृद्ध	= खुशहाल, धनवान
अधिष्ठात्री	= स्थापना करने वाली	सहमति	= मंजूरी
सर्वाधिक	= सबसे ज़्यादा	राजद्रोह	= राज्य से द्रोह करना
सम्मिलित	= मिले हुए		

उच्चारण करें

आच्छादित उन्मुक्तता परिष्कृत तत्कालीन ऐतिहासिक

अर्थव्यवस्था दिवालिया

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को मुंबई की अन्य विशेषताओं के बारे में भी बताएँ।

अभ्यास कार्य

जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मुंबई को बंबई नाम किसने दिया?

(ख) मुंबई शहर किस पर बसा हुआ है?

(ग) मुंबई को भारत का क्या कहा जाने लगा है?

(घ) मुंबई किस देवी के नाम पर बसा शहर है?

जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भारत का 'बॉलीबुड' किसे और क्यों कहा जाने लगा?

....

(ख) मुंबई का प्रवेश-द्वार किसे और क्यों कहते हैं?

....

(ग) 'स्काई स्क्रैपर्स' इमारतों का क्या अर्थ है?

....

(घ) मुंबई को 'माया नगरी' क्यों कहा जाता है?

....

3. सही शब्द भरकर रिक्त स्थान भरिए।

टापू	शेयर बाज़ार	फेशनेबल,	आयात-निर्यात

(क) मुंबई का .... विश्व प्रसिद्ध है।

(ख) फिल्मी नगरी होने के कारण यह बहुत ही .... बन गया है।

(ग) मुंबई भारतीय .... का केंद्र है।

(घ) मुंबई एक .... पर बसा है।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भारत की मायानगरी कहाँ है?

☐ चेन्नई ☐ गुजरात ☐ मुंबई ☐ दिल्ली

(ख) मुंबई देश का सबसे बड़ा .... है।

☐ बंदरगाह ☐ टापू ☐ सरकारी केंद्र ☐ भवन

(ग) मुंबई फिल्में ही नहीं बल्कि निर्माता है–

☐ कागज़ का ☐ सूती वस्त्रों का ☐ कोयले का ☐ साड़ियों का

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

5. मुंबई का स्वतंत्रता आंदोलन में किस प्रकार से योगदान रहा है? अपनी कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

6. मुंबई नगर की वह कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं, जिसके कारण वहाँ जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति वहीं का ही होकर रह जाता है। अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) महाराष्ट्र – .... (ख) सुविधाजनक – ....

(ग) राजकुमारी – .... (घ) मायानगरी – ....

(ङ) बंदरगाह – .... (घ) मायानगरी – ....

8. दिए गए शब्दों का मूल शब्द एवं प्रत्यय अलग कीजिए।

		(मूल शब्द)		(प्रत्यय)
(क) व्यापारी	–	....	+	....
(ख) सहमति	–	....	+	....
(ग) प्रमाणित	–	....	+	....
(घ) प्रधानता	–	....	+	....
(ङ) सफलता	–	....	+	....

9. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) गगनचुंबी – ....

(ख) आयात – ....

(ग) जीवन – ....

(घ) सफलता – ....

(ङ) आरंभ – ....

10. दिए गए पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तित कीजिए।

(क) देव – ....

(ख) युवक – ....

(ग) नौकर – ....

(घ) पुरूष – ....

(ङ) नेता – ....

11. दिए गए शब्दों के वचन बदल कर लिखिए

(क) देवी – ....

(ख) अंग्रेज – ....

(ग) दर्शकों – ....

(घ) पत्रिका – ....

(ङ) चट्टान – ....

12. दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) बंदरगाह – ....

(ख) नगरी – ....

(ग) मायाजाल – ....

(घ) आधुनिक – ....

(ङ) आयात-निर्यात – ....

13. दिए गए वाक्यों में से अकर्मक और सकर्मक क्रिया को पहचानकर लिखिए।

(क) माँ कुर्सी पर बैठी है। – ....

(ख) पेड़ लहलहा रहा है। – ....

(ग) बड़े भइया पढ़ते रहते थे। – ....

(घ) बच्चों को दूध पिलाओ। – ....

(ङ) बिजली चमकी – ....

14. दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त संबंधबोधक शब्द छाँटकर लिखिए।

(क) मेरे साथ मत चलो – ....

(ख) पापा के बगैर कैसे रहेंगे। – ....

(ग) मेरे घर के सामने होटल है। – ....

(घ) मुझे रितिक के बारे पता करना है। – ....

(ङ) मेरे साथ मायानगरी मत चलना। – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

15. मुंबई नगर की तरह ही दिल्ली शहर भी अपनी विशेषताओं के लिए विश्व-विख्यात है। अपने मित्र को डायरी लेखन के द्वारा दिल्ली की विशेषताओं के बारे में बताइए।

16. दिए गए चित्र का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

मरीनड्राइव का दृश्य

....

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

17. मुंबई से संबंधित चित्र पर गोला (◯) लगाते हुए उसका नाम भी लिखिए।

....

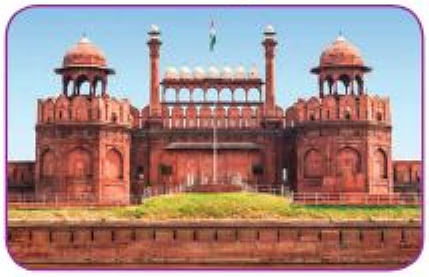

....

....

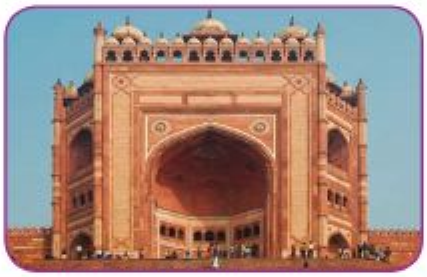

....

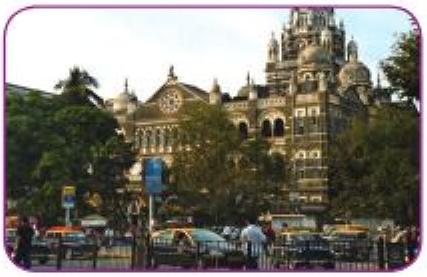

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

18. मानव का मूल्य हर प्रकार की माया से अधिक होता है। आपके लिए मनुष्यत्व जीवन कितना मूल्यवान है शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए।

अध्याय 12

संचार के साधन
(लेख)

अध्ययन से पूर्व

लेख का मूल तत्व

संचार माध्यम आधुनिक युग का चमत्कार है।

आजकल सभी जगह संचार माध्यमों की होड़ सी मची हुई है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक के आविष्कारों ने विश्व को अत्यंत गति से भ्रमण करने योग्य बनाया है। जिसके कारण आज का युग आविष्कारों के युग के नाम से भी जाना जाता है।

रेडियो

24 दिसंबर 1906 को सबसे पहले रेडियो का प्रसारण आरंभ हुआ। इसके अविष्कार से पहले जगदीशचंद्र बोस और इटली के मार्कोनी ने 1900 ई. में इंग्लैंड से अमरीका तक **बेतार**[1] यंत्र से अपने संदेशों को भेजा था।

'लीद फोरेस्ट' और 'चार्ल्स हेराल्ड' ने आगे चलकर इनपर काम किया।

1918 ई. में लीद फोरेस्ट ने न्यूयार्क के हाईब्रिज नामक जगह पर रेडियो स्टेशन की स्थापना की। देखते ही देखते कुछ सालों में रेडियो स्टेशन दुनिया भर में खुल गये। नवंबर 1941 को सुभाषचंद्र बोस ने पहली बार रेडियो से भारत को संबोधित किया 1936 ई. में भारत इंपीरियल रेडियो ऑफ इंडिया नामक स्टेशन आरम्भ हुआ जो आगे चलकर आल इंडिया रेडियो बन गया। जिसे आजकल हम आकाशवाणी, नभवाणी भी कहते हैं। दुनियाभर में अपनी जगह बनाने के लिए एफ.एम रेडियो मिर्ची जैसे कार्यक्रमों को चला रहा है।

मुद्रण

समाचार पत्र: समाचार पत्र पठन माध्यम हैं। दुनिया की खबरों को आपके दरवाजे तक पहुँचना इसी माध्यम द्वारा मुद्रित रूप में संभव हुआ। इसका इतना प्रभाव लोगो पर पड़ा कि उनका सवेरा समाचार पत्रों को पढ़े बिना होता ही नहीं। हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स आर्फ इंडिया, नव भारत टाइम्स, पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर आदि समाचार पत्र उत्तर भारत में प्रचलित है। भारत का पहला समाचार-पत्र बंगाल गज़ट 29 जनवरी 1780 को एक अंग्रेज जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने निकाला था। 30 मई 1826 में उदंत मार्तंड हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र था। आजकल साप्ताहिक, धार्मिक, राजनीतिक, सिनेमा से संबंधित अलग प्रकार के समाचार पत्र भी प्रकाशित किए जा रहे है।

टेलिविज़न

आजकल हर व्यक्ति टेलिविज़न से परिचित है। टेलिविज़न अत्यंत आर्कषक साधन हैं। यह दुनिया भर की किसी भी वस्तु, व्यक्ति या स्थान को हू-ब-हू दिखाता है। 'जॉन लोगी बेयर्ड' ने 1924 ई. में टेलिविज़न का आविष्कार किया। जो स्कॉटलाइंड देश के निवासी थे। जिसके तहत 1925 ई. में मनुष्य की मुखाकृतियों का प्रसारण हुआ।

यह चित्रों सहित ध्वनियों को भी प्रसारित करता है। आधुनिक जीवन शैली पर टीवी का भरपूर प्रभाव पड़ा है।

भारत में टेलिविजन का प्रसारण 15 सितंबर 1929 ई. को हुआ। उन दिनों से यह व्यापार का सशक्त साधन बन गया है। मनोरंजन टेलिविज़न का प्रधान कार्य है। जिसमें 'टेलि' का अर्थ है- 'दूर' 'विज़न' का अर्थ है 'दृष्टि'। इसके दृवारा हज़ारो मील दूरी पर स्थित दृश्यों को देखते-देखते विवरण को सुनना भी संभव हो पाया। आजकल हम दुनिया के किसी भी कोने का विषय क्षण मात्र में देख सकते है।

कंप्यूटर

कंप्यूटर एक इलैक्ट्रॉनिक मशीन है। इसमें हम न केवल शीघ्र गणितीय काम कर सकते हैं। अपितु विचारों को तर्क संगत आधार पर खोज भी लेते हैं। यह कंप्यूटर हज़ारों पेज़ों के विचारों को अपने समृति-भंडार (Memory) में रख लेता है। अतः हम अपनी आवश्यकता के अनुसार इसका उपयोग कर सकते हैं। कंप्यूटर को चलाने का मुख्य कार्य CPO द्वारा किया जाता है। इसे कट्रोल प्रोसेसिंग यूनिट भी कहते है। चार्लस बाबेज़ ने इसका निर्माण किया। कंप्यूटर के आने से जीवन शैली में बदलाव आ चुका है। लोगों की आपसी मुलाकात अब कंप्यूटरों से ही अधिक होती है। आजकल यह मोबाइल जैसे अत्यंत छोटे रूप में भी प्राप्त होता है।

इंटरनेट

इंटरनेट को जादुई दुनिया भी कहा जाता है। क्योकि W.W.W ने आज दुनिया को हथेली में रख दिया है। इंटरनेट के माध्यम से दुनिया में कहीं से भी कप्यूटर द्वारा संपर्क साध सकते हैं।

यू. एस. ए. 'एडवान्स रिसर्च प्रोजेक्ट एजेन्सी' है। इस संस्था ने 1969 ई. में इंटरनेट का आविष्कार किया। आजकल सौ करोड़ से अधिक लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। इससे किसी भी व्यक्ति, वस्तु, जगह नदी, पर्वत, समुंदर के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कंप्यूटर की जिस स्क्रीन पर जिस पर क्लिक करने से वह निश्चित पेज़ खुल जाता है। उसे 'वेबब्रौसिंग' कहते हैं। 'ब्रोस' का अर्थ है 'ढूँढना'। गुगल, लिकडेन, एच.टी.टी..पी (हाईपरटेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकोल) आदि सामाजिक जाल है। कंप्यूटर में 'ई-मेल' का अर्थ हैं। इलेक्ट्रानिक मेल एवं मेल का अर्थ है 'डाक'। अतः हम कहीं से भी इलेक्ट्रानिक डाक अर्थात् ई-मल का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

मोबाइल फ़ोन

मोबाइल फ़ोन ने आजकल की दुनिया को ज़ेब में लाकर रख दिया है। मोबाइल फ़ोन को सेलफोन, सेल्युलर फोन अथवा हैडफोन कहते हैं। इसे सेल्युलर नेटर्वक से चलाया जाता है। फोन का आविष्कार 'मार्टिन कूपर' ने किया। यदि हम कहें कि मोबाइल फ़ोन का उपयोग गागर में सागर भरने जैसा सिद्ध हुआ है तो यह गलत नही होगा क्योंकि इसके द्वारा फोटो खींचना, विडियो काल करना सीधे ई-मेल भेज और प्राप्त भी कर सकते है; रेडियो भी सुन सकते हैं। मोबाइल फ़ोन द्वारा दुनिया आविष्कार, प्रयोगों और उपयोगों में अग्रिणय स्थान पर पहुँच रही है।

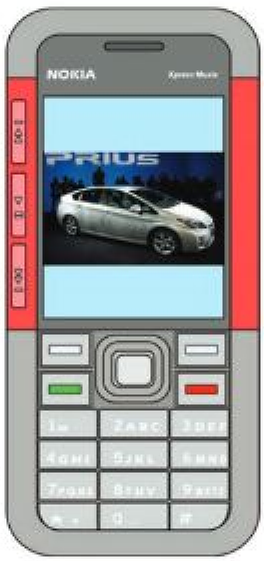

शब्दार्थ

भ्रमण	= घूमने	दृश्य	= चित्र
सशक्त	= मज़बूत	स्मृति	= स्मरण
प्रसारण	= विधुत तरंगों द्वारा प्रचार (फैलाना) करना।	भंडार	= कोष

उच्चारण करें

अत्यंत	कंप्यूटर	वैबब्रौसिंग
सेल्युलर	नेटवर्क	आधुनिक

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका लेख के माध्यम से बच्चों को संचार के माध्यम के कुछ नमूने दिखाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) रेडियों का पहला प्रसारण कब आंरभ हुआ?

(ख) संसार का मुद्रण माध्यम कौन सा है?

(ग) टेलिविज़न का प्रधान कार्य क्या हैं?

(घ) हिंदी के कौन-कौन से समाचार पत्र है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) इंग्लैंड से अमेरिका तक बेतार यंत्र के संदेशों को किसने और कब भेजा?

....

(ख) टेलिविज़न का आविष्कार कब हुआ? किस देश के निवासी ने इसका आविष्कार किया?

....

(ग) चार्लस बाबेज़ ने किस इलैक्ट्रॉनिक मशीन का आविष्कार किया और वह हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हुआ?

....

(घ) **W.W.W** का पूरा नाम क्या हैं? इंटरनेट में यह किस काम आता है?

....

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) इंटरनेट को .... दुनिया भी कहा जाता हैं।

☐ आधुनिक ☐ जादुई ☐ आविष्कारक ☐ संचारिक

(ख) रेडियों के माध्यम से भारत को संबोधित करने वाले व्यक्ति थे।

☐ चार्लस बाबेज़ ☐ मार्टिन कूपर
☐ जगदीशचन्द्र बसु ☐ जॉन लोगी बेयर्ड

(ग) मोबाइल फोन का आविष्कारण कौन है?

☐ मार्कोनी ☐ मार्टिन कूपर
☐ वेबब्रौसिंग ☐ जगदीश चन्द्र बसु

(घ) पहला रेडियो प्रसारण कब हुआ था?

☐ 24 दिसंबर 1906 ☐ 24 नंवबर 1906
☐ 26 जुलाई 1906 ☐ 26 अक्टूबर 1906

4. सही शब्द चुनकर वाक्यांश के रिक्त स्थान को भरिए।

ढूँढ़ना	पठन	इलैक्ट्रोनिक	टी.वी.

(क) समाच पत्र .... माध्यम है।

(ख) आधुनिक जीवन शैली पर .... का भरपूर प्रभाव पड़ा।

(ग) वेबब्रौसिंग का अर्थ है .... ।

(घ) ई-मेल का अर्थ है .... मेल।

5. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।

(क) सी.पी.यू. एक समृति भंडारक यूनिट है। ( )

(ख) ई-मेल इंटरनेट का वह भाग है जिसके द्वारा कही से भी विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। ( )

(ग) आकाशवाणी, नभवाणी ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन को ही कहते है। ( )

(घ) समाचर पत्र इलैक्ट्रोनिक संचार का माध्यम है। ( )

6. मिलान कीजिए।

(क) रेडियो प्रसारण	(i) हाईपरटेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकोल
(ख) टेलीविज़न अविष्कार	(ii) वर्ल्ड वाइड वैब
(ग) **W.W.W**	(iii) 1924
(घ) एच.टी.टी.पी.	(iv) 26 दिसंबर 1906

7. **सही शब्द पर गोला लगाइए।**

(क) संचार के माध्यम- समाचार पत्र, रेडियो, बातचीत, इंटरनेट, कैरमबोर्ड खेलना।

(ख) जादुई दुनिया - टैलीविज़िन, कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन।

(ग) समाचार पत्र - पठन माध्यम, संवाद माध्यम, ब्रॉडसिंग माध्यम, सभी।

(घ) जादुई डिबिया - फोन, टी.वी., रेडियो, कंप्यूटर।

ज़रा सोचिए — Critical Thinking

8. **इंटरनेट का हमारे जीवन में क्या महत्व है? सोचकर बताइए।**

9. **प्राचीन काल में संचार के कौन-कौन से साधन हुआ करते थे? क्या उस समय भी विचारों का आदान-प्रदान इतना ही सहज और सुगम था जितना आज के युग में है? अपने अनुभव के आधार पर सोचिए।**

10. **कंप्यूटर और मोबाइल के बीच क्या संवाद हो सकता है? सोचकर बताइए।**

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए — Language Skills

11. **दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।**

(क) मशीन - ....   (घ) ध्वनि - ....

(ख) आविष्कार - ....   (ङ) कार्यक्रम - ....

(ग) सटेशन - ....   (च) दुनिया - ....

12. **दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

(क) पत्र - ....

(ख) जीवन - ....

(ग) भारत - ....

(घ) व्यक्ति - ....

13. **नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।**

(क) रेडियो - ....

(ख) इंटरनेट - ....

(ग) दुनिया - ....

(घ) विचार - ....

14. **दिए गए वाक्यों में से उपसर्गयुक्त शब्द को छाँटकर अलग कीजिए।**

(क) सत्य का स्वरूप प्रगातिशील व सुखदायक होता है। ....

(ख) निस्संदेह, आविष्कार हमारे लिए एक वरदान है। ....

(ग) दृढ़ प्रयत्न, परिश्रम एवं अदम्य साहस से सफलता मिलती है। ....

(घ) संदीप खुशमिजाज़ है जबकि सुदीप बदमिजाज़ है। ....

15. **मूल शब्द और प्रत्यय को अलग-अलग कीजिए।**

(क) मानवता – .... + ...

(ख) दैनिक – .... + ...

(ग) सामाजिक – .... + ...

(घ) भारतीय – .... + ...

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

16. **पत्र का इलेक्ट्रोनिक लेखन रूप ई-मेल कहलाता है। दिए गए औपचारिक पत्र को इलेक्ट्रोनिक पत्र (ई-मेल) में बदलिए।**

....	प्रेषक का पता
सेवा में या प्रतिष्ठार्थ	
....	प्राप्तकर्ता का पता
....	दिनांक विषय आदरार्थ संबोधन
विषय वस्तुः	

⇒

To

....

From

....

Subject: ....

....

....

....

....

....

17. दिए गए विषय पर अख़बार हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

'इलेक्ट्रोनिक मेला'

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

18. दिए गए सूचना-लेखन में कुछ त्रुटियाँ हैं, उन्हें छाँटकर लिखिए

शोभित	आवश्यक सूचना	कक्षा - VIII C

कृपया ध्यान दें-

एक वॉक्सवैगन ब्रैंड का क्रिकेट बैट छूट गया हैं। यदि किसी को पता चलें तो संपर्क करें।

दिनांक:-

ए.सी. के विद्यालय कर्नाटक

सूचना-लेखन संबंधी त्रुटियाँ लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

19. मृदु भाषा व्यक्ति के जीवन की वह तार है जो बेतार होते हुए भी हर एक के संपर्क से जोड़े रखती हैं। आप इस माध्यम से किसे और क्यों जोड़ें रखना चाहेंगे?

अध्याय 13

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में पंछियों के माध्यम से दर्शाया गया हैं, कि स्वतंत्रता सभी को प्रिय होती है।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के,
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर,
पुलकित पंख टूट जाएँगे।
हम बहता जल पीने वाले,
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी,
कनक-कटोरी की मैदा से।
स्वर्ण -श्रृंखला के बंधन में,
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं,
तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते,
नील गगन की सीमा पाने,

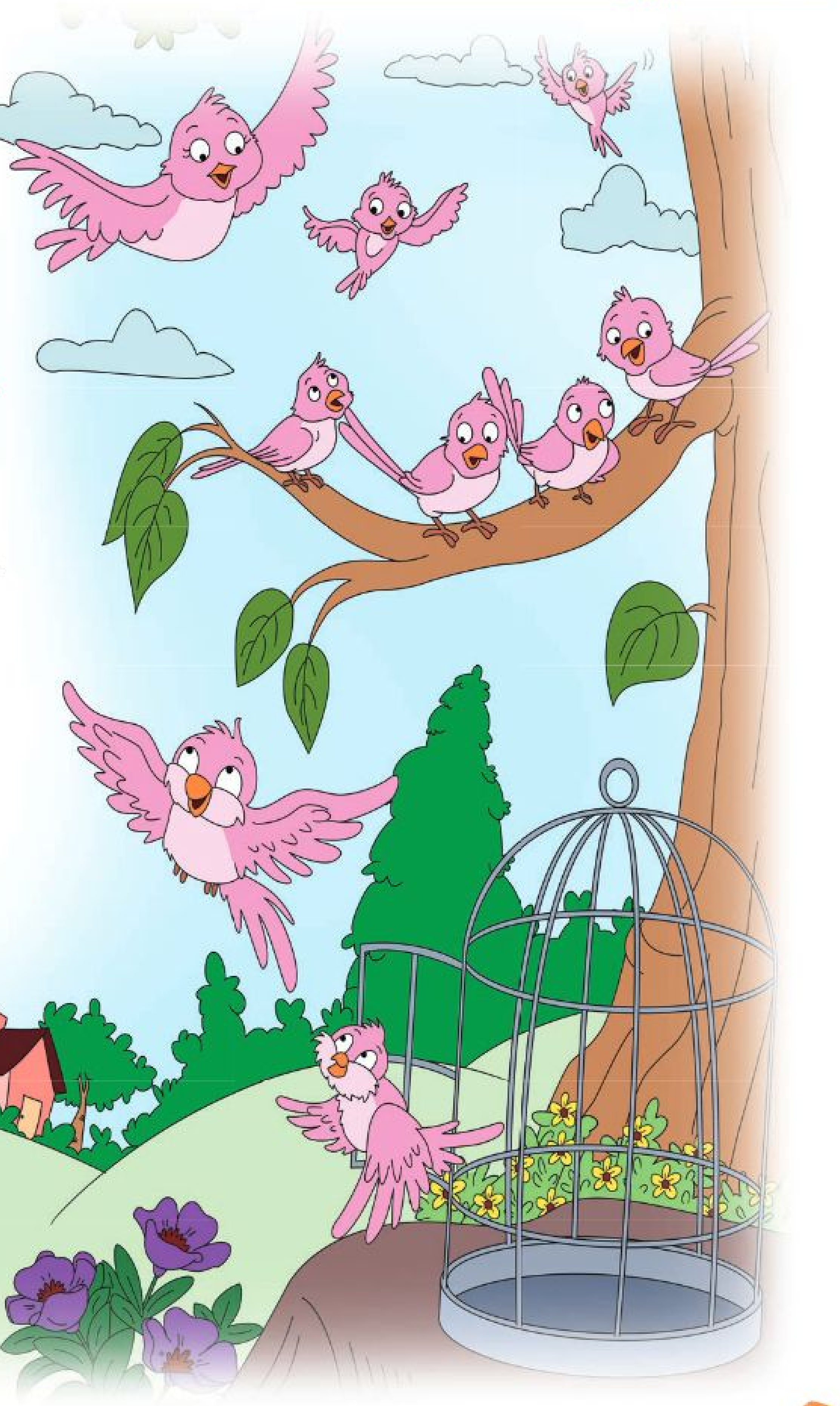

लाल किरण-सी चोंच खोल,
चुगते तारक-अनार के दाने।
होती सीमाहीन क्षितिज से,
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता,
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का,
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

–शिवमंगल सिंह सुमन

शब्दार्थ

पंछी	= पक्षी	कटुक	= कड़वी
फुनगी	= पतली टहनीं	उन्मुक्त	= खुला, स्वतंत्र
निबौरी	= नीम का बीज़	कनक-तीलियाँ	= सोने की डंडियाँ
श्रृंखला	= जंजीर, कड़ी	स्वर्ण	= सोना (धातु)

क्षितीज = धरातल का वह भाग जहाँ धरती-आसमान परस्पर मिलने हुए दिखाई पड़ते हैं।

उच्चारण करें

पिंजरबद्ध   स्वर्ण-श्रृंखला   आश्रम   विहन   उड़ान

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को प्रस्तुत कविता का भावार्थ समझाएँ तथा उन्हें स्वतंत्रता का महत्व बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पंछी कहाँ उड़ना चाहते हैं?

(ख) आसमान में कौन नहीं गा पाएगा?

(ग) पंछी किस प्रकार रहना चाहते है?

(घ) किस चीज़ को पंछी खाना पसंद करते है?

(ङ) यदि पंछियों के पंख टूट जाएँ तो वह क्या नही कर पाएँगे?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पिंजरे में बंद होकर पंछी क्यों नहीं रहना चाहते?

....

(ख) पंछी हमसे क्या निवेदन करते हैं?

....

(ग) पिंजरबद्ध पंछी किन स्वप्नों में खोया रहता है?

....

(घ) कौन- से अरमानों को लेकर पंछी जीता है?

....

(ङ) प्रस्तुत कविता में पंछी की तुलना किससे की है?

....

3. कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए।

(क) हम पंछी - .... पाएँगे,

कनक .... जाएँगे।,

(ख) स्वर्ण - .... भूले,

बस.. झूले।

(ग) नीड न दो - .... डालो,

लेकिन .... नडलो।

4. दिए गए शब्दों को उचित रूप से मिलान कीजिए।-

नीड़	ब्याध
आश्रय	घौंसला
सीमाहीन	बसेरा
क्षितिज	बंधन से मुक्त
चिहन	धरती

ज़रा सोचिए Critical Thinking

5. आज़ादी सभी को प्रिय होती है। आपके लिए आज़ादी का क्या महत्व है? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

....

....

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए Language Skills

6. दिए गए वाक्यों में संबंधबोधक शब्दों की पहचान कीजिए।

संबंध बोधक:- जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ते हैं, वे संबंध बोधक शब्द कहलाते हैं। जैसे- के सहारे, के पहले आदि।

(क) दिल्ली शहर बिल्कुल मुंबई के विपरीत है।

(ख) सिमली ने चाकू के द्वारा सेब काटा।

(ग) तेज आँधी के साथ बारिश होने लगी।

(घ) राहुल छत के नीचे खड़ा।

7. दिए गए वाक्यों में प्रविशेषण शब्दों को रेखांकित करके लिखिए।

(क) नेहा के बाल बहुत घने और काले हें।

(ख) राहुल की कुर्सी इतनी हल्की हैं, कि उसे कोई भी उठा ले।

(ग) आसमान में गहरे नीले बादल छा गए।

(घ) रामकुमार सबसे ताकतवर पहलवान है।

8. दिए गए शब्दों का संधि विच्छेदन कीजिए तथा संधि का नाम लिखिए।

भावुक = ... + ... = ...

सारांश = ... + ... = ...

संकल्प = ... + ... = ...

अभ्यागत = ... + ... = ...

अत्याचार = ... + ... = ...

उल्लास = ... + ... = ...

9. दिए गए शब्दों का समास विग्रह कीजिए।

पूजाघर = ...

घुड़सवार = ...

गोमुख = ...

राजकुमार = ...

बेख़बर = ...

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई उपर्युक्त पंक्ति से आप क्या समझते हैं? कक्षा में बैठकर मित्रों के साथ चर्चा करें।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. प्रस्तुत कविता में कवि ने पक्षियों पर अधिक ज़ोर दिया है। पक्षियों की दी गई विभिन्न प्रजातियों को देखकर पहचानिए कि कौन-सी प्रजाति विलुपृप्राय है उनके नाम भी लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

12. शिक्षा एक ऐसा पहलू है, जो इंसान के जीवन को पंख देती हैं। आप शिक्षा रूपी पंखों का उपयोग किन उददेश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहेंगे?

अध्याय 14

'सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र
(संवाद)

अध्ययन से पूर्व

संवाद का मूल तत्व

प्रस्तुत संवाद में यह बताया गया हैं कि विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य और धर्म का साथ न छोड़ने वाले आदर्शवादी राजा हरिश्चंद्र के पदचिह्नों का हमें अनुसरण करना चाहिए।

(परदे के पीछे से) सत्युग की बात है। हरिश्चंद्र नाम के एक राजा थे। वे क्षत्रिय कुल में पैदा हुए थे। वे बड़े सत्यवादी तथा दानी थे। एक दिन उन्होंने अपना राज्य मुनि विश्वामित्र को दान में दे दिया। कुछ दिन बात मुनि विश्वामित्र पधारते हैं।

हरिश्चंद्र : प्रणाम मुनिवर! आसन ग्रहण कीजिए।

विश्वामित्र : (बैठे-बैठे) राजन्! आपने मुझे पहचाना कि नहीं।

हरिश्चंद्र : हे मुनिश्रेष्ठ! आप तो सर्वज्ञ हो। त्रिलोक में ऐसा कौन है जो भला आपको न जानेगा?

विश्वामित्र : मैं आपसे आज कुछ माँगने आया हूँ।

हरिश्चंद्र : अहो भाग्य मेरे! बताइए आपको क्या चाहिए?

विश्वामित्र : मुझे आपका समस्त राज्य चाहिए।

विश्वामित्र : राजन् कहीं आप अपना दान दिया राज्य वापस तो न माँग लेंगे?

हरिश्चंद्र : महाराज! सारी पृथ्वी आपकी, मैं आपका। दान दी हुई वस्तु को मैं कभी पुनः प्राप्ति की इच्छा में नहीं लाऊँगा। सुनिए, यह मेरी प्रतिज्ञा है-

चंद्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यौहार। पै दृढ़ श्री हरिश्चंद्र को, टरै न सत्य विचार।।

विश्वामित्र : अब महादान की दक्षिणा कहाँ है?

हरिश्चंद्र : वह भी दूँगा, मुनिवर! क्या हुआ यदि ख़ज़ाना अब मेरा नहीं है, परंतु मेरा शरीर तो है।

विश्वामित्र : एक महीने उपरान्त यदि मुझे शरीर रूपी दक्षिणा न मिलेगी, तो मैं तुम्हें कठिन ब्रह्मदंड दूँगा।

हरिश्चंद्र : मुनिवर! मैं ब्रह्मदंड से उतना नहीं डरता जितना सत्यदंड से।

नेपथ्य से : (राजा हरिश्चंद्र अपनी पत्नी शैव्या और पुत्र रोहिताश्व के साथ अयोध्या को छोड़कर काशी (वाराणसी) आ गए; क्योंकि अयोध्या नगरी वह विश्वामित्र को दान कर चुके थे, परंतु अपनी प्रतिज्ञानुसार अभी उनका महादान की दक्षिणा देना बाकी था।)

हरिश्चंद्र : अहा! धन्य है यह काशी! तुम्हें अनेक प्रणाम हैं। काशी की शोभा कैसी निराली है। इसे देख मन-चित्त अति प्रसन्न हुआ चला जा रहा है किंतु विश्वामित्र जी को राज्य दान करके जितना चित्त प्रसन्न नहीं हुआ, उतना अब बिना दक्षिणा दिए दु:खी होता है।

हाय! कितने कष्ट की बात है। राज-पाट, धन-धान्य सब छूटा! अब दक्षिणा कहाँ से देंगे? क्या करूँ? कुछ समझ में नहीं आता। (कुछ सोचकर) मैं उस बाज़ार में खड़े सेठ को स्वयं को बेच दूँगा ताकि मेरे द्वारा प्राप्त मुद्राओं से मुनिवर का ऋण उतार सकूँ। यदि सेठ तुम्हें और पुत्र रोहिताश्व को भी खरीद लेगा तो अच्छी बात होगी।

अच्छा तो चलें। हाय! ऋण भी कैसी बुरी वस्तु है।

इस लोक में वही मनुष्य कृतार्थ है, जिसने ऋण चुका देने को कभी क्रोधी और क्रूर लेनदार की लाल-लाल आँखें नहीं देखी हैं।

शैव्या : आर्यपुत्र! ऐसे समय में हमको छोड़ जाते हो! स्त्री को अर्धांगिनी कहते हैं। इसलिए पहले बायाँ अंग बेच लो, तब दायाँ अंग बेचो।

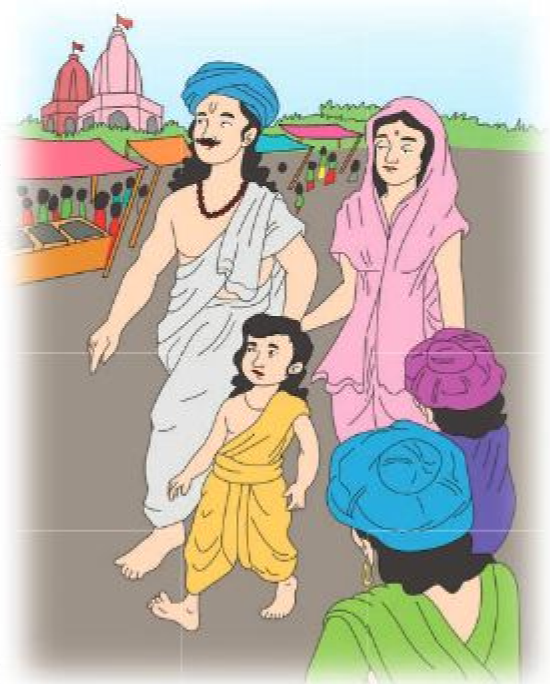

बालक : अमको बी कोई मोल ले लो तो बला उपकाल ओ।

नेपथ्य से (शैव्या को घर का काम-काज़ करने के लिए एक व्यक्ति ने खरीद लिया। पुत्र भी साथ में था। हरिश्चंद्र को एक श्मशान मालिक ने खरीद लिया। इस प्रकार प्राप्त धन से हरिश्चंद्र ने दक्षिणा चुकाई।)

श्मशान मालिक : (हरिश्चंद्र से)

जाओ अभी दक्खिनी मसान। लेव वहाँ कफ़्फन को दान।।
जो कर तुमको नहीं चुकावे। सो किरिया करने नहि पावे।।
चलो घास पर करो निवास। भए आज से हमरे दास।।

हरिश्चंद्र : जो आज्ञा।

(शैव्या और बालक अन्य स्थान पर)

शैव्या : बेटा, गुरु जी पुकार रहे हैं। उनको जल्दी दूध और बेलपत्र दो। हाय! क्या हुआ तुम्हें, तुम कुछ बोलते क्यों नहीं?

बालक : माँ, मैं गुरु जी को फूल देने गया था, वहाँ काले साँप ने काट मुझे लिया।

(इतना कहते ही बालक ने अपने प्राण त्याग दिए।)

शैव्या : (रोती हुई) हाय बेटा! बाप ने छोड़ दिया और अब तुम भी छोड़कर चल दिए। अब बुढ़ापे में मेरी क्या गति होगी?

(रोती हुई शैव्या रोहिताश्व का शव लिए श्मशान आती हैं।)

(स्थान: श्मशान में)

(कंबल ओढ़े और एक मोटा लट्ठ लिए हुए हरिश्चंद्र दिखाई पड़ते हैं। सामने चुनरी की ओढ़ लिए शैव्या के रोने की आवाज़ सुनाई देती है।)

हरिश्चंद्र : श्मशानपति की आज्ञा है कि आधा कफ़न दिए बिना कोई मुरदा न फूँकने पाए। इसलिए तुम भी पहले हमें कपड़ा दो, तब किरिया कराओ।

शैव्या : (अपने पति को पहचानकर रोती हुई) नाथ! मेरे पास तो एक भी कपड़ा नहीं था। अपना आँचल फाड़कर इसे लपेट लाई हूँ। उसमें से भी जो आधा दे दूँ, तो यह खुला रह जाएगा। हाय! चक्रवर्ती के पुत्र को कफ़न भी नहीं मिला।

हरिश्चंद्र : प्यारी! रो मत। धीरज धर। स्वामी की आज्ञा है। यदि तुमसे आधा कफन न लूँ, तो बड़ा अधर्म होगा। जिस हरिश्चंद्र ने अभी तक धर्म न छोड़ा, उसका धर्म आधा गज कपड़े के वास्ते मत छुड़ाओ। कफ़न से जल्दी आधा फाड़कर कर के रूप में मुझे दे दो।

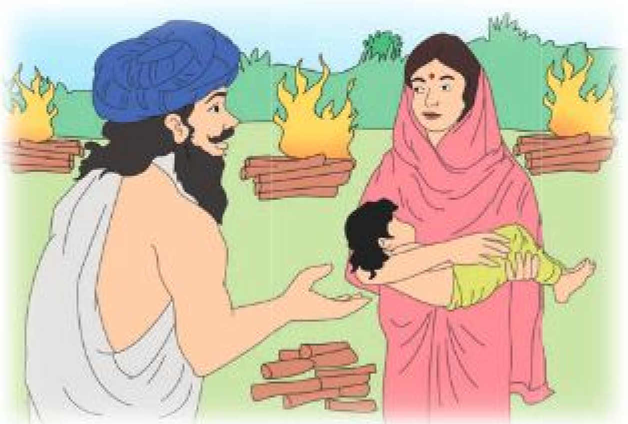

शैव्या : नाथ! जो आज्ञा (शैव्या कपड़ा फाड़ने लगती है।)

(उसी क्षण मुनि विश्वामित्र एवं देवगण प्रकट होते हैं।)

विश्वामित्र : पुत्री! अब शोक मत कर! धन्य तेरा सौभाग्य कि तुझे राजर्षि हरिश्चंद्र जैसा पति मिला है। वत्स रोहिताश्व! उठो! देखो, तुम्हारे माता-पिता कितनी देर से तुमसे मिलने को व्याकुल हो रहे हैं।

(रोहिताश्व उठ जाता है। आकाश से पुष्पवृष्टि होती है। श्री महादेव, पार्वती, भैरव, धर्म, सत्य और इंद्र सभी आ जाते हैं।)

विश्वामित्र : हे राजन्! मैं तुम्हारी सत्यता, निष्ठा से अति प्रसन्न हूँ अतः मैं तुम्हें तुम्हारा राज्य ईनाम स्वरूप भेंट करता हूँ।

सब : धन्य! महाराज, हरिश्चंद्र, धन्य! जो आपने किया, सो किसी ने न किया। (सब आशीर्वाद देते हैं।)

हरिश्चंद्र : प्रभु! आपके दर्शन से सब इच्छा पूर्ण हो गई। अब मेरी इच्छा है कि सत्य सदा पृथ्वी पर स्थिर रहे।

भगवान : एवमस्तु। ऐसा ही होगा। (पुष्पवृष्टि)

नेपथ्य से : (राजा हरिश्चंद्र को अपना राज्य वापस मिल गया।)

(भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'सत्य हरिश्चंद्र नाटक' के आधार पर)

शब्दार्थ

कुल	= वंश, खानदान, परिवार	मुरदा	= शव
सत्यवादी	= सत्य बोलने वाला	त्रिलोक	= तीन लोक
अहंकारी	= घमंडी	दक्षिणा	= दान पश्चात् दी गई राशि
सहस्त्र	= हज़ार	मूर्छा	= बेहोशी की अवस्था
किरिया	= मृतक का संस्कार	पुष्पवृष्टि	= फूलों की वर्षा
सौभाग्य	= भाग्यवान		

उच्चारण करें

बृहमदंड	सहस्त्र	कृतार्थ	अर्धांगिनी	वीभत्स
रोहिताश्व	चक्रवर्ती	पुष्प वृष्टि		

शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को सदाचार के पथ पर चलने की प्रेरणा दें। साथ ही बच्चों को सत्य और कर्तव्यनिष्ठ बनने हेतु प्रोत्साहित करें, इसके लिए शिक्षक/शिक्षिका अन्य प्रकार के उदाहरणों का भी सहारा ले सकते हैं जिसे बच्चे आसानी से ग्रहण कर सकें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) हरिश्चंद्र ने विश्वामित्र को क्या दान में दे दिया था?

(ख) हरिश्चंद्र ने विश्वामित्र जी को क्या ग्रहण करने का आग्रह किया?

(ग) विश्वामित्र जी ने दान लेने के बाद राजा से किस वस्तु की माँग की?

(घ) अयोध्या नगरी छोड़ राजा हरिश्चंद्र किस नगरी आ गए थे?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विश्वामित्र को वचन देते हुए राजा ने क्या प्रतिज्ञा की?

....

(ख) हरिश्चंद्र ने पत्नी एवं पुत्र को किसे बेचा और क्यों?

....

(ग) राजा हरिश्चंद्र को अपना राज्य किस प्रकार पुनः प्राप्त हो सका?

....

(घ) हरिश्चंद्र के किन गुणों की ख़्याति संसार में प्रसिद्ध हुई?

....

3. दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) मुनिवर! .... ग्रहण कीजिए।

(ख) महादान की .... कहाँ है?

(ग) काशी की शोभा कैसी .... है।

(घ) .... की आज्ञा है कि आधा कफ़न दिए बिना कोई मुरदा न फूँकने पाए।

(ङ) .... उठो! देखो तुम्हारे माता-पिता कितनी देर से तुमसे मिलने को व्याकुल हो रहे हैं।

ज़रा सोचिए
Critical Thinking

4. 'सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं, इस कथन से आप क्या समझते हैं? सोच-विचारकर अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

....

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए
Language Skills

5. नीचे दिए गए वाक्यों के लिए एक शब्द का प्रयोग कीजिए।

(क) ऐसा स्थान जहाँ मुरदों को जलाया जाता हैं। ....

(ख) जिसका कोई शत्रु नहीं हो ....

(ग) उच्च कुल से संबंध रखने वाला ....

(घ) रात में धूमने वाला ....

(ङ) जो जीने की प्रबल इच्छा रखता हो ....

6. नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य का निर्माण कीजिए।

(क) धार्मिक – ....

(ख) सत्यवादी – ....

(ग) सौभाग्य – ....

(घ) दारूण – ....

(ङ) गति – ....

7. नीचे दिए गए उपसर्गों के माध्यम से दो-दो शब्दों का निर्माण कीजिए।

(क) गैर – ....

(ख) बु – ....

(ग) स्वः – ....

(घ) सत् – ....

(ङ) निर् – ....

8. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग परिवर्तित कीजिए।

(क) सेठ – .... (ख) विद्वान – ....

(ग) कवि – .... (घ) देव – ....

9. दिए गए वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित करके लिखिए।

(क) प्रार्थना सभा में सौ लोग उपस्थित थे।

(ख) श्याम बहुत अच्छा तैराक है।

(ग) एक कौआ अपने काले पँखों को फैलाकर खिड़की पर बैठ गया।

(घ) सुलक्षणा ने रंजना के लिए अधिक भोजन रखा।

(ङ) पृथ्वी को नीले ग्रह के नाम से जाना जाता है।

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए — Creative Skills

10. प्रस्तुत पाठ में विश्वामित्र नामक पात्र को एक कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। क्या सचमुच में सन्यासी का स्वभाव इतना कठोर होता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

11. प्रस्तुत संवाद को आधार बनाकर 'सत्य' को केंद्र बिंदु में रखते हुए एक अनुच्छेद की रचना कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए — Brain Storming Activity

12. राजा हरिश्चंद्र की यह पौराणिक कथा अपनी मूल कहानी का अंश मात्र है। प्रस्तुत पाठ को आधार बनाकर संपूर्ण कहानी को कक्षा में सुनाइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न — Life Skills & Value Based Question

13. 'सत्य' का आचरण हमारे जीवन में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देता है। इस आचरण को समाज निर्माण में किस प्रकार उपयोगी सिद्ध करेंगे?

अभ्यास प्रश्न पत्र-1

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पंछी किस प्रकार की उड़ान चाहते हैं?

(ख) सुख की इच्छा रखने के लिए किसे बचाना आवश्यक है?

(ग) व्यापारी की उत्तराधिकारी की परीक्षा में कौन व किस प्रकार से सफल हो पाया?

(घ) आमंत्रण पत्र देने के लिए तान्या के घर कौन और क्यों आया?

(ङ) संतोष रूपी धन के आगे किस प्रकार के धन को धूल के समान समझा गया है?

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) तान्या मन ही मन सोचती थी क्या गरीब होना सचमुच .... है।

(ख) कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता, जब तक कि उसके .... अच्छे न हों।

(ग) समय नष्ट कर नहीं कोई भी .... धन सुख पाता है।

(घ) स्वर्ण .... के बंधन में, अपनी गति, उड़ान सब भूले।

(ङ) साहस, सुकृत, ..., राम भरोसे एक।

3. दिए गए वाक्यों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(क) कबीर दास जी ने तीनों लोकों से बढ़कर किसे बताया है?

☐ दादाजी को ☐ माताजी को ☐ गुरु को ☐ पिताजी को

(ख) कविता 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' के रचयिता कौन हैं?

☐ हरिवंश राय बच्चन ☐ शिवमंगल सिंह 'सुमन'

☐ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ☐ गजानन माधन 'मुक्तिबोध'

(ग) इंसान का पागल बनकर झूमने से क्या आ जाता है?

☐ जवानी ☐ बचपन ☐ बुढ़ापा ☐ इनमें से कोई नहीं

(घ) धनवान व्यापारी किस किस्म का व्यक्ति था?

☐ अदूरदर्शी ☐ मूर्ख ☐ अनुभवी ☐ अनभिज्ञ

(ङ) किस प्रकार के स्वभाव से तान्या आत्मार्पित थी?

☐ नकारात्मक ☐ चिड़चिड़ा ☐ साधारण ☐ चंचलपन

4. **किसने कहा, किससे कहा?**

(क) जब तुम अच्छा खाना नहीं खा सकती, तो तुम अच्छी छात्रा कैसे बन सकती हो?

....

(ख) मेरे बेटे, तुमने वास्तव में बुद्धिमत्ता दिखाई है।

....

(ग) मुझे गर्व है कि हमारे देश में तान्या जैसी होनहार छात्राएँ हैं।

....

5. **दिए गए दोहों का भावार्थ लिखिए।**

(क) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

....

....

....

(ख) गोधन-गधजन बाजि धन और रतन धन खान।
जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

....

....

....

6. **नीचे दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए।**

(क) कंगाली में आटा गीला – ....

(ख) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद – ....

(ग) मान न मान मैं तेरा मेहमान – ....

7. **नीचे दिए गए वाक्यों में संबंध बोधक शब्दों को चिह्नित करके लिखिए।**

(क) तान्या ने समारोह में चलने के लिए अपनी माँ को भी तैयार कर लिया। – ....

(ख) धनवान व्यापारी के सामने उत्तराधिकारी चुनने की नौबत आ गई। – ....

(ग) मैं अपना सारा धन तुम्हें सौंपने के लिए तैयार हूँ। – ....

अभ्यास प्रश्न पत्र-2

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक ....

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) यदि वृक्ष नहीं होंगे तो क्या होगा?

(ख) नर संहार करने वाले अन्य कौन से तत्व हैं?

(ग) 'आधुनिक युग' को 'विज्ञान का युग' क्यों कहा जाता है?

(घ) भारत के महानगरों के नाम बताइए।

2. रिक्त स्थान में उचित कारक भरिए।

व्यक्ति और समाज देखने .... ही अलग होते हैं, परंतु हैं एक सिक्के .... दो पहलू। मनुष्य .... सामाजिक प्राणी कहा जाता है। इस बात .... यह साफ़ हो जाता है कि मनुष्य .... सभी व्यवहारों .... केन्द्र .... समाज .... भूमिका मुख्य है। मनुष्य .... व्यवहार व .... समाज भी प्रभावित होता है। यदि हरेक मनुष्य .... व्यवहार व स्वभाव सुधारता है तो समाज एक आदर्श बन जाएगा।

3. दिए गए गद्यांश में गलत जगह विराम चिह्न लगने के कारण अर्थ का अनर्थ हो गया है। सही जगह पर विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पुनः लिखिए।

प्रणाम? आपके चरणों में क्या बात है! आपका कोई पत्र नहीं मिला मेरी सहेली को। नौकरी से निकाल दिया गया है, हमारी भैंस को। बीमारी लग गई है। मैंने। तुम्हें बहुत से पत्र लिखे, खरगोश के बच्चे। बिल्ली खा गई गाय। बेच दी गई है, तुम्हारी सास। बहुत याद करती है। गेहूँ उग आए हैं चाची के सिर पर। चोट लगी है। जल्दी आओ? पप्पू के स्कूल खुलने वाले हैं।

....

....

....

....

4. दिए गए शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

(क) भर्मनशिल	–	(ख) भंडरान	– ....
(ग) कर्याकृम	–	(घ) दिधार्यु	– ....

5. **दिए गए संयुक्त वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए।**

संयुक्त वाक्य	मिश्र वाक्य
(क) मैंने टी.वी. पर मनपसंद कार्यक्रम देखा- और नाचने लगा।	....
(ख) गाँधी जी सत्य और अहिंसा में विश्वास रखते थे, इसलिए वह महात्मा कहलाए।	....
(ग) कार ट्रक से टकराई और चकनाचूर हो गई।	....
(घ) परमाणु हमला हुआ तभी नर-संहार हुआ।	....

6. **दिए गए सामासिक शब्द में कौन-सा समास है, लिखिए।**

(क) संकटापन्न – ....

(ख) आनंदमय – ....

(ग) दिलफेंक – ....

(घ) गगनचुंबी – ....

7. **'वृक्षारोपण' का सूचना-लेखन तैयार कीजिए।**

8. **दिए गए वाक्यांश के लिए एक-एक शब्द लिखिए।**

(क) जो पहले हो चुका हो – ....

(ख) अच्छे आचरण वाला – ....

(ग) सबको समान देखने वाला – ....

(घ) जो दूसरों पर दया न करे – ....

9. **'छात्र जीवन में सत्संगति का महत्व' पर एक अनुच्छेद लिखिए।**

10. **किसी पशु, पक्षी, वृक्ष एवं व्यक्ति के मध्य काल्पनिक संवाद को लिखिए।**